केनरा बैंक की
द्विमासिक गृह पत्रिका
दिसंबर 2024 – जनवरी 2025 । 298

श्रेयस
Shreyas

Canara Bank's
Bimonthly House Magazine
December 2024 - January 2025 I 298

विपणन व जनसंपर्क – सफलता की एक रणनीति
Marketing & Public Relations – A Strategy to Success

State in focus
Punjab
The Land of Joy & Hospitality

और जानने के लिए स्कैन करें
Scan to know more

दिनांक 07.12.2024 को बेंगलूरु अंचल कार्यालय में आयोजित एमएसएमई क्लस्टर मीट के दौरान प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के सत्यनारायण राजु और बेंगलूरु अंचल कार्यालय के अंचल प्रमुख महाप्रबंधक श्री महेश एम पै मंजूरी सौंपते हुए। तस्वीर में बेंगलूरु सेंट्रल क्षेत्रीय कार्यालय के उप महाप्रबंधक श्री अनंत जलोन्हा और अन्य कार्यपालकगण भी दिख रहे हैं।

MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju, and GM & Bengaluru CO Head Sri Mahesh M Pai handing over sanction letters during MSME Cluster meet held at Bengaluru CO on 07.12.2024. Sri. Anant Jalonha, DGM, Bengaluru Central RO, other executives also seen in the picture.

कार्यपालक निदेशक श्री देबाशीष मुखर्जी और डीआईएफसी के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी श्री विनय कृष्ण प्रसाद तथा भारतीय वाणिज्य दूतावास, दुबई में भारत के महावाणिज्यदूत श्री सतीश सिवन।

ED Sri. Debashish Mukherjee and Senior Executive Officer, DIFC, Sri. Vinay Krishna Prasad along with Sri. Satish Sivan, Consul General of India, Dubai, at Indian Consulate.

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुश्यमेत स्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीर://
(कठोपनिषद् II - 2)
Both good and pleasant approach us:
The wise on examining choose the good. (Kathopanishad II - 2)

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
सिंडिकेट Syndicate

श्रेयस – SHREYAS

SINCE 1974

केनरा बैंक की द्विमासिक गृह-पत्रिका
Bimonthly House Magazine of Canara Bank
दिसंबर 2024 – जनवरी 2025 I 298 / December 2024 - January 2025 I 298

ADVISORY COMMITTEE

K Satyanarayana Raju
Hardeep Singh Ahluwalia
S K Majumdar
D Surendran
T K Venugopal
E Ramesh
Someshwara Rao Yamajala
Priyadarshini R
Manish Abhimaniyu Chaurasia

EDITOR
Priyadarshini R

ASST. EDITORS
Winnie Panicker

सह संपादक (हिंदी)
मनीष अभिमन्यू चौरसिया

Edited & Published by
Priyadarshini R
Senior Manager
House Magazine & Library Section
HR Wing, HO, Bengaluru - 560 002.
Ph : 080-2223 3480
E-mail : hohml@canarabank.com
for and on behalf of Canara Bank

Design & Print by
Blustream Printing India (P). Ltd.
#1, 2nd Cross, CKC Gardens,
Lalbagh Road Cross, Bangalore - 560 008.
Ph : 080-2223 0070 / 2223 0006.

The views and opinions expressed herein are not necessarily those of the Bank. Reproduction of the matter in any manner with the permission of the editor only. For private circulation only. Not for Sale.

ABCI Member

CONTENTS

2 प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश / MD & CEO's Message
4 संपादकीय / Editorial
5 New CGMs and New GMs Messages
8 Farewell Messages of Gms
10 Each One Source 10
11 Banking on Bancassurance - P Srinivasa Murthy
14 केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र बागलुरू – प्रशिक्षण का एक नया अध्याय – राजीव कुमार सिन्हा
16 Celebrating Punjab: A Kaleidoscope of Festivals and Traditions - Nishbat Mansoori
19 A Journey to Bhutan - R. V. Rekha
23 यादों की गुल्लक से – बी.के. उप्रेती
26 A Journey Within - Prithiviraj M
29 पंजाब यात्रा: गुरु के द्वार में प्रवेश – लीना ज्ञानवानी
33 Legal Column - Dr. Manish Kumar
38 Selling Dreams: Insights from a Life in Advertising and Media - Atul Bhushan
41 Lohri: A Night of Joy and Togetherness - Rohit Kumar
42 Circle News / अंचल समाचार
48 76th Republic day Celebration at Head Office, Bengaluru
50 श्री हरमंदिर साहिब – अल्पना शर्मा
51 Baby's Corner
52 Phulkari - Crafted with Emotions - Mousumi Mohanty
54 The Power of Cultural Branding: Punjab as a Case Study - Abrar Ul Mustafa
56 पंजाब के त्योहार: खुशी के रंग – प्रिया पँवार
57 Unethical Practices – A Menace - Neeti Goel
62 Real life incidents on ethical dilemma involving unfair practices - Sushant Parashar
64 Fun corner
65 बैसाखी – प्रशान्त कसौंधन
68 Time Risk - Birendra Kumar
69 Cartoon
70 Marketing and Public Relations: A Strategy to Success - Deepti Kishore
72 Family Folio
73 "मन की खिड़की" – रीमा बैनर्जी
74 Banking Terminology
75 Goodbye Isn't Love Lost - Pradeep Tandon
78 सिख शासको का हिंदी प्रेम: एक विवेचना – शशि कांत पाण्डेय
80 छोटा कार्य, बड़ा प्रभाव – सीमा
81 पंजाब – अनुशंसित पर्यटन स्थल – श्वेता श्रीवास्तवा
87 Wisdom Capsule - Add strength to your strengths - D Bharathi
88 Plight of a Caged Bird - Gournika Kapoor
89 Health Corner
90 पंजाब – पांच नदियों की भूमि – आशीष रंजन
94 Recipe Corner - Dal Makhani - HML Team
95 Book Review - Winnie J Panicker
96 Homage

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

MD & CEO's Message

प्रिय केनराइट्स,

सर्वप्रथम, मैं आपको और आपके परिवार को सुख व समृद्ध नववर्ष 2025 की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

हमारे बैंक की विकास यात्रा को देखता हूँ तो आत्मविश्वास और आशावाद से भर जाता हूं। हमने वर्ष 2024 में केनरा एंजेल, केनरा एस्पायर, केनरा हील, केनरा क्रेस्ट, केनरा एसएचजी, जीवन धारा, केनरा माई मनी और केनरा यूपीआई जैसे कई नए और अभूतपूर्व उत्पाद लॉन्च किए हैं। डेटा और एनालिटिक्स नवाचार और डेटा संचालित रणनीति के लिए निर्णायक कदम है जो विश्लेषिकी (एनालिटिक्स) के एकीकरण के साथ परिवर्तनकारी विकास को गति प्रदान करता है। डीएनए के माध्यम से सबसे चर्चित विषय मनी म्यूल आइडेंटिफिकेशन इंटेलिजेंस को भारी सफलता मिली है। इसमें स्वचालन के माध्यम से 92% तक लागत को कम करते हुए 95.6% की कमी आई है। इसने एआई संचालित अवतारों के प्रयोग से वास्तविक जीवन बैंकिंग परिदृश्यों को संवर्धित वास्तविकता और आभासी वास्तविकता के माध्यम से जीवंत बैंकिंग परिदृश्य को सृजित करते हुए कर्मचारियों के कौशल विकास में प्रभावशाली परिवर्तन लाया गया है। अभी तक हमने 25 बैंकिंग परिदृश्यों को लागू किया है तथा 650 से अधिक परिवीक्षाधीन अधिकारियों को इस पर प्रशिक्षित कर चुके हैं। डेटा लेकहाउस अपने तरह का एक ऐसा एकीकृत प्लेटफॉर्म है जिसे वास्तविक समय पर डेटा प्रसंस्करण के लिए क्रियान्वित किया गया है। शाखा परिसर के 3 किमी के दायरे में संभावित ग्राहकों की पहचान कर व्यवसाय संवर्धन हेतु हमने डेटा इन द बॉक्स का प्रयोग किया है जो भू–स्थानिक समाधान प्रदान करता है। स्मार्ट सीएक्स360 एक ऐसा उपकरण है जो ग्राहक सहभागिता और संतुष्टि को बढ़ाने के लिए ग्राहक संवाद का 360–डिग्री परिदृश्य प्रदान करता है।

पुरस्कार व प्रशंसा नैतिक प्रोत्साहन प्रदान करती है, जो हमें अपने मानकों के उन्नयन के लिए तथा अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं और मुझे गर्व है कि हमें मनी म्यूल डिटेक्शन मॉडल के लिए 6वें वैश्विक फिनटेक अवार्ड समारोह में "एआई/एमएल नवाचार के लिए सर्वश्रेष्ठ बैंक" के सम्मान से सम्मानित किया गया है। ईज 7.0 के तहत नए युग की तकनीक को अपनाने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हम प्रथम हैं और डीएनए को वित्तीय सेवाएँ विभाग द्वारा सर्वश्रेष्ठ कारोबार परियोजना–डिजिटल रणनीति उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मानव संसाधन के मोर्चे पर, 2024 एचआरएमएस के माध्यम से कर्मचारी कल्याण के स्वचालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय रहा है। त्योहार अग्रिम, स्टाफ डीपीएन और अन्य भत्तों का ऑटो क्रेडिट वर्ष 2025 में कई और सुविधाओं को शामिल करने और नवाचार करने का मार्ग प्रशस्त करेगा, जो कर्मचारी उत्पादकता को बढ़ा सकता है।

Dear Canarites,

At the outset, I would like to extend my sincere wishes to each one of you and your families for a happy and prosperous New Year 2025.

On reflecting into the journey of our bank I am filled with confidence and optimism. The year 2024 was showcased with numerous novel and ground-breaking product launches like Canara Angel, Canara Aspire,Canara Heal, Canara Crest, Canara SHG, Jeevan Dhara, Canara My Money, and Canara UPI. Data and Analytics is the turning point for innovation and data driven strategies, driving transformative growth with the integration of analytics. Through DNA the most discussed topic of Money Mule identification intelligence has been given a breakthrough. The detection accuracy rate is 95.6% and has lowered the cost by 92% through automation. It has also been influential in employee upskilling using Augmented Reality and Virtual Reality, by stimulating real life banking scenarios with AI driven avatars. As on date we have 25 banking scenarios that have been rolled out and 650 plus probationary officers have been trained on it. Data Lakehouse is another such unified platform implemented for real time data processing. We have explored the Data in the Box, which is a geo-spatial solution to identify potential customers within 3 km of branches to create business opportunities. Smart CX360 is a tool that provides 360-degree view of customer interactions to enhance engagement and satisfaction.

Awards and recognitions provide a moral incentive, encouraging us to elevate our standards and achieve greater success and I am proud that we have been awarded "Best Bank for AI/ ML innovation" at the 6th global Fintech awards for Money Mule Detection Model. Amongst PSBs we are in the first position for adoption of new age technology under Ease 7.0 and DNA has been awarded for the Best Business project –Digital strategy excellence award by the DFS.

On the Human Resources front, 2024 also has been a part of automations of staff welfare through HRMS. The auto

मुझे 2024 की तीसरी तिमाही के परिणामों की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। हमारे बैंक का वैश्विक कारोबार दिसंबर 2024 तक 9.30% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 24,19,171 करोड़ रुपये हो गया, जिसमें वैश्विक जमा राशि 13,69,465 करोड़ 8.44% (वर्षानुवर्ष) और वैश्विक अग्रिम (सकल) 10,49,706 करोड़ 10.45% (वर्षानुवर्ष) रहा। बैंक की घरेलू जमा राशि दिसंबर 2024 तक 7.76% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 12,57,426 करोड़ रुपये रही। बैंक का घरेलू अग्रिम (सकल) दिसंबर 2024 तक 9.55% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 9,87,591 करोड़ रुपये रहा। आरएएम क्रेडिट 12.32% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 5,95,789 करोड़ रुपये रहा। खुदरा ऋण पोर्टफोलियो 35.46% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 2,08,116 करोड़ रुपये रहा। आवास ऋण पोर्टफोलियो 12.26% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 1,03,053 करोड़ रुपये रहा। आस्ति गुणवत्ता के संबंध में सकल गैर–निष्पादित आस्तियां (जीएनपीए) अनुपात दिसंबर 2024 तक 3.34% का सुधार हुआ, जो सितंबर 2024 तक 3.73% और दिसंबर 2023 तक 4.39% था। निवल गैर–निष्पादित आस्तियां (एनएनपीए) अनुपात दिसंबर 2024 तक सुधरकर 0.89% हो गया, जो सितंबर 2024 में 0.99% था, दिसंबर 2023 तक 1.32% था। प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) दिसंबर 2024 तक 91.26% हो गया, जबकि सितंबर 2024 तक यह 90.89% तथा दिसंबर 2023 तक 89.01% था। पूंजी पर्याप्तता के अंतर्गत हमारा सीआरएआर दिसंबर 2024 तक 16.44% रहा, जिसमें से सीईटी 11.97%, टियर–I 14.55% और टियर–II 1.89% है। प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र एवं वित्तीय समावेशन के अंतर्गत हमारे बैंक ने प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र और कृषि ऋण में एएनबीसी के क्रमशः 40% और 18% के मानदंड की तुलना में बैंक ने दिसंबर 2024 तक प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में 44.33% और कृषि ऋण में एएनबीसी का 21.04% लक्ष्य हासिल किया। लघु और सीमांत किसानों को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 10% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 14.35% का लक्ष्य हासिल किया। कमजोर वर्गों को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 12% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 20.43% का लक्ष्य हासिल किया। सूक्ष्म उद्यम को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 7.50% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 10.23% का लक्ष्य हासिल किया। गैर कॉर्पोरेट किसानों को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 13.78% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 17.12% का लक्ष्य हासिल किया।

मुझे पूरा विश्वास है कि वर्ष 2025 आशाजनक नवाचारों के लिए एक और वर्ष होगा, जो बैंक के ऊंचे मानकों को स्थापित कर हमारे बैंक को समाज के सभी वर्गों द्वारा सबसे पसंदीदा बैंक बनाने में सहायक सिद्ध होगा। याद रखें, आपमें से प्रत्येक कर्मचारी ''केनरा बैंक'' ब्रांड के ब्रांड एंबेसडर हैं। आइए, हम सभी केनराइट्स अपने सामूहिक प्रयास से आगामी वर्ष में भी अपने बैंक को एक नई ऊंचाई की ओर ले जाएं तथा दुनिया को हमारे बैंक के मूल मंत्र ''रहें संग, बढ़े संग'' को चरितार्थ कर दिखाएं।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !!

मंगल कामनाओं सहित,

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

credit of Festival advance, Staff DPN and other allowances only pave way for innovating and including many more features in the year 2025 which can boost employee productiveness.

I am very happy to announce the Q3 results. Our Global Business increased by 9.30% (y.o.y) to ₹24,19,171 Cr as at December 2024, Global Deposits increased by 8.44% (y.o.y) to ₹13,69,465 Cr and Global Advance (gross) increased by 10.45% (y.o.y) to ₹10,49,706 Cr. Domestic Deposit of the Bank stood at ₹12,57,426 Cr as at December 2024 with growth of 7.76% (y.o.y). Domestic Advances(gross) of the Bank stood at ₹9,87,591 Cr, grew by 9.55% (y.o.y). RAM credit increased by 12.32% (y.o.y) to ₹5,95,789 Cr. Retail lending Portfolio increased to ₹2,08,116 Cr i.e., grew by 35.46% (y.o.y). Housing Loan Portfolio increased by 12.26% (y.o.y) to ₹1,03,053 Cr. With respect to Asset Quality, the Gross Non-Performing Assets (GNPA) ratio improved at 3.34% as at December 2024 reduced from 3.73% as at September 2024, 4.39% as at December 2023. Net Non-Performing Assets (NNPA) ratio improved to 0.89% as at December 2024, reduced from 0.99% as at September 2024. Provision Coverage Ratio (PCR) stood to 91.26% as at December 2024 against 90.89% as at September 2024, 89.01% as at December 2023. Under Capital Adequacy our CRAR stood at 16.44% as at December 2024, out of which CET1 is 11.97%, Tier-I is 14.55% and Tier-II is 1.89%. Under Priority Sector & Financial Inclusion, Our Bank has achieved Targets in Priority Sector at 44.33% and Agricultural Credit at 21.04% of ANBC as at December 2024, as against the norm of 40% and 18% respectively. Credit to Small and Marginal Farmers stood at 14.35% of ANBC, against the norm of 10.00%. Credit to Weaker Sections stood at 20.43% of ANBC, against the norm of 12.00%. Credit to Micro Enterprises stood at 10.23% of ANBC, against the norm of 7.50%. Credit to Non-Corporate Farmers stood at 17.12% of ANBC, against the norm of 13.78%.

I am confident that the year 2025 will be yet another year of promising innovations which will elevate the bank to higher standards and be among the most preferred bank by all strata of the society. Remember, each one you, is an ambassador to the Brand "Canara Bank". Let this year shine through with the sincere and fruitful efforts of all our Canarites to elevate our Bank to new heights. Let us continue to prove to the world that "Together we can"!

Wish you all the very best

With warm regards,

K. Satyanarayana Raju
Managing Director & CEO

संपादकीय

Editorial

प्रिय साथियों,

''अच्छी मार्केटिंग से कंपनी स्मार्ट दिखती है। बेहतरीन मार्केटिंग से ग्राहक स्मार्ट दिखते हैं''। – जो चेर्नोव

पारंपरिक मार्केटिंग अक्सर प्रायोजित विज्ञापन, जन मीडिया अभियानों और एकतरफा संचार मॉडल पर निर्भर करता था। दूसरी ओर, जनसंपर्क का उद्देश्य मीडिया, प्रभावशाली व्यक्तियों और आम जनता सहित प्रमुख हितधारकों के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखने पर केंद्रित है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में मार्केटिंग और जनसंपर्क (पीआर) के बीच की रेखाएं धुंधली होती जा रही हैं, जिससे व्यवसायों के लिए एक गतिशील और परस्पर संबद्ध पृष्ठभूमि का निर्माण हो रहा है। हालाँकि दोनों विषयों का लक्ष्य ब्रांड छवि को बढ़ाना और संबंध बनाना है, लेकिन उनके दृष्टिकोण और फोकस (एकाग्रता) में उल्लेखनीय रूप से विकास हुआ है। जो व्यवसाय इन विषयों को प्रभावी ढंग से जोड़ कर रख सकते हैं, डेटा का लाभ उठा सकते हैं, तथा बदलते मीडिया परिदृश्य के अनुरूप ढल सकते हैं वही डिजिटल युग में सफलता के लिए सर्वोत्तम स्थिति होगी। हमारे बैंक का मार्केटिंग और जनसंपर्क समय के साथ तेजी से विकसित हुआ है और हमारे बैंक की दृश्यता हमारी समर्पित टीम के पेशेवरों द्वारा अपनाई गई नवीनतम मार्केटिंग रणनीतियों के कारण कई गुना बढ़ गई है, हमारी टीम ने प्रिंट, प्रसारण, आउटडोर और डिजिटल मीडिया के माध्यम से बैंक तथा अपने उत्पादों के व्यापक प्रचार तैयार किया है।

मैं बेंगलूरु में पदस्थ हूं और मेरा एक भी दिन ऐसा नहीं जाता जब मैं शहर के प्रमुख स्थानों पर आम जनता तक बैंक की पहुंच बढ़ाने वाले केनरा बैंक के बैनर न देखा हों। विभिन्न शहरों की मेरी यात्रा के दौरान, चाहे वह हवाई अड्डे हों, रेलवे स्टेशन हों या बस स्टैंड हों, हमारे बैंक के विज्ञापन यात्रियों का स्वागत करते हुए नज़र आ जाते हैं। विज्ञापनों के अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार से जनता के बीच बैंक की ब्रांड छवि में वृद्धि होगी, जिससे बेहतर रूपांतरण दर, जनता के बीच बैंक की विश्वसनीयता में वृद्धि और अधिक से अधिक जनमानस को प्रभावित करेगा और यही वास्तव में मार्केटिंग की शक्ति है और सरल शब्दों में कहें तो हमारी बैंक की विज्ञापन रणनीति वास्तव में अनुकरणीय है। श्रेयस पत्रिका का यह अंक मार्केटिंग और जनसंपर्क पर आधारित है, इस अंक में मार्केटिंग विभाग ने हमारे जीवन में बीमा की आवश्यकता पर जोर देने वाले विशेष लेख को भी शामिल किया है।

इस अंक में विशेष राज्य के रूप में पंजाब को शामिल किया गया है, जिसे "पांच नदियों की भूमि" भी कहा जाता है, जो अपने समृद्ध इतिहास और जीवंत संस्कृति से परिपूर्ण है। देश का भरण पोषण करने वाली उपजाऊ भूमि से लेकर भांगड़ा की मनमोहक धुनों तक, पंजाब भारत की विविधता और गतिशीलता का सूक्ष्म रूप है। राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेने के लिए तैयार हो जाइए। ये लेख आपमे पंजाब का भ्रमण करने और स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेने की इच्छा आपके अंदर जागृत कर सकते हैं।

नया वर्ष नई उम्मीद, नई शुरुआत लेकर आता है और एक नई पहल के रूप में हमने कुछ नए कॉलम शुरू किए हैं, जैसे ''जेन ज़ी साहित्य'', ''सरलीकृत बैंकिंग शब्दावली'' और ''कार्यपालकों के विदाई संदेश'' आदि को शामिल किया है।

आशा है कि आप इस विशेषांक को पढ़कर प्रसन्नचित्त होंगे। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा। कृपया केननेट पर हमारे गृह पत्रिका व पुस्तकालय के वेबपेज पर/या hohml@canarabank.com पर मेल के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया / टिप्पणी दें अथवा 080 – 22233480 पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

अगाध प्रशंसा और कृतज्ञता के साथ

प्रियदर्शिनि आर
संपादक

Dear Colleagues,

"Good Marketing makes the company look smart. Great marketing makes the customer look smart" – Joe Chernov

Traditional marketing often relied on paid advertising, mass media campaigns, and a one-way communication model. PR, on the other hand, focused on building and maintaining positive relationships with key stakeholders, including media, influencers, and the general public. But in the present day scenario the lines between Marketing and Public Relations (PR) are increasingly blurred, creating a dynamic and interconnected backdrop for businesses. While both disciplines aim to enhance brand image and build relationships, their approaches and focus have evolved significantly. Businesses that can effectively integrate these disciplines, leverage data, and adapt to the changing media landscape will be best positioned for success in the digital age. Our Banks Marketing and Public Relations has increasingly evolved over time and the visibility of our Bank has increased multi fold by the latest marketing strategies adopted by our dedicated team professionals who have formulated wide publicity through Print, Broadcast, Outdoor and Digital media.

Being posted in Bangalore & not a single day passes without the sight of Canara Banks Hoardings, Banners, Posters and advertisements, at prominent places enhancing the reach of the bank to the general public. During my travel to various cities whether its Airports, Railway Stations or Bus Stands you can see the presence of our Bank welcoming the travellers marking its presence. The reiteration of the ads will create an impact of increased brand recall leading to better conversion rates, enhanced credibility and impacting greater audience engagement and that is exactly the power of marketing and clearly our Banks advertising strategy has been truly exemplary. This issue carries articles on Marketing and Public Relations and we have an exclusive article from the Wing in an interesting format thrusting the need of insurance in our lives.

The state covered in this edition Punjab, the "Land of Five Rivers," is a state steeped in rich history and vibrant culture. From the fertile fields that feed the nation to the stirring beats of Bhangra, Punjab is a microcosm of India's diversity and dynamism. Get ready to immerse yourself into the rich cultural heritage and the gastronomical delights the state has to offer. The articles can kindle the travel bug in you to visit Punjab and savour the flavours of the state.

The new year brings new beginnings and as a novel initiative we have rolled out few new columns like "Gen Z literature", "Banking terminologies made easy" and "Parting messages from executives".

Hope you enjoy reading this special edition. As we love to hear from you, please drop in your feedback/ comments by visiting our HM&L Webpage in Cannet / or as mail to hohml@canarabank.com / or you can always call us at 080 – 22233480.

With profound admiration and gratitude

Priyadarshini R
Editor

I am deeply humbled and honoured to assume the charge of Chief General Manager of our mother bank. I take this opportunity to express my sincere and heartfelt gratitude to our Top Management, my seniors who have mentored me and my colleagues for extending their unwavering support and guidance in my career path, for the last 35 years. Our bank has a rich legacy of trust, integrity and service. I am committed to building on this very foundation, driving growth and fostering a culture of leadership. I am thrilled to lead this vibrant team and contribute to the bank's continued growth and success. I see my journey in our bank as a learning curve and I look forward to work closely with all the staff members, executives, region heads and the customers to achieve new milestones. I solicit the support of all, in crossing all the milestones. Thank you once again for this opportunity. Together we can and together let's soar to greater heights!

K A Sindhu
Chief General Manager

I would like to express my heartfelt gratitude and thanks to the Top Management of the Bank for this significant opportunity to take higher responsibilities in the bank. I am honored and humbled to step in to the new role as CGM. This achievement is not just mine but a reflection of the incredible support, team work and mentorship I received along the way. I am thankful to all the Mentors, Seniors, Peers, Juniors and my family members for their guidance and support throughout the journey. I joined Syndicate Bank (Erstwhile) in the year 1990. The Bank gave me the opportunity to work in different places in different positions.

My strength is team building and taking them towards the achievement of corporate objectives. Top Management has given me an opportunity to prove myself in the present assignment. I am very much grateful to our Top Management for reposing confidence and faith in me. This financial year is very challenging wherein we all have to work for low cost deposits in Q 4. For that we have to connect with our customers and need to reach their expectations. We have all the potential with huge customer base and Pan India presence with young and talented work force. We all have to work for the common corporate goal and strive hard to reach all the targets. Let us emphasize upon the thrust areas of CASA, Retail Term Deposits, High Yielding Advances including RAM and Recovery. Through our continuous efforts definitely our esteemed bank will reach greater heights. I will do my best to excel in my position to ensure development and betterment of our Bank and continue to serve our Bank with same spirit.

Together We Can Together we will

Best Wishes

R Anuradha
Chief General Manager

I am honored and grateful for the elevation to the coveted position of General Manager in our esteemed organization. The journey to General Manager has been filled with learning, growth and invaluable experiences. I extend my deepest gratitude to my seniors, mentors and the entire Canara Bank family for their unwavering support and encouragement throughout.

This elevation wouldn't have been possible without the guidance and mentorship of the Top Management. The Top Management's vision and leadership have been instrumental in shaping not just my career but the success of Canara Bank as a whole.

Since new responsibilities have come with this position, I will ensure that my actions contribute to reinforce the bank's core values. It is vital that we adapt effectively to the evolving banking landscape while fostering the trust of our customers and stakeholders.

In the pursuit of our banks vision to gain competitive advantageous position, I encourage each Canarite to actively contribute for the growth of our mother bank with passion and commitment. I'm sure that, with the untiring efforts of our committed workforce, our bank will definitely keep its flag flying high in the days to come.

With Best Wishes and Warm Regards

Rajni Kant
General Manager

"The future depends upon what you do today..."

I am humbled and honored on my elevation as General Manager of our great organization. I would like to express my sincere gratitude to the Top Management for reposing their trust and confidence in me. As I take up the higher job position it's my responsibility to contribute towards our Banks continued business growth, service excellence , customer satisfaction, stakeholders value and overall success.

I take this opportunity to thank the almighty God for his benevolence in all my endeavors, my wife and family for their continuous support and being my soul strength in all times. Further I would like to recollect the support and guidance given to me by my Seniors, colleagues and customers which had played a great role in moulding me and making me what I am today.

One thing I have learned and would like everybody to inculcate is that, be passionate in whatever we do as it would bring happiness and meaning to our life as well as make life's balance sheet profitable. Let us work with commitment and involvement and not wait for others to act. We should dedicate ourselves for the organization so that we can strive for continuous improvement and reach out for excellence. By coming together and working together we can achieve greater heights and can make our Canara Bank the most preferred bank for all.

With warm regards,

V S Santosh
General Manager & Board Secretary

It is indeed a great honour and privilege to become General Manager in our esteemed Institution. I am deeply grateful to the Top Management for their unwavering faith and confidence in my capabilities. With deep sense of gratitude, I remember all Seniors who motivated, guided and encouraged me throughout my career. I also thank all my colleagues and subordinates for their support and cooperation.

Among the various assignments entrusted to me, I had the privilege of working in some of the prestigious projects of our Bank, each one unique and demanding. These assignments have been instrumental in continuously refining my skills and knowledge.

I understand that the elevation comes with greater responsibilities and I am committed to work with more passion and enthusiasm. I am dedicated to deliver exceptional results and continued success of our Bank.

With warm regards,

T P Jyothilekshmi
General Manager

It is with immense gratitude and humility I take on the role of General Manager. This promotion represents not just a professional milestone, but a profound personal moment, and I want to take this opportunity to express my thanks to many individuals who have supported me along this remarkable journey.

I joined Canara Bank as a young professional eager to contribute to the public sector banking landscape. Over the years, I've had the privilege to work alongside a team of dedicated colleagues which has taught me the true meaning of resilience, teamwork, and leadership. From the early days, when I navigated through the intricacies of banking operations, to the more recent challenges in strategic management, each experience has been invaluable. The foundational values instilled by our bank has strongly influenced my approach to leadership and have always been encouraged to push the boundaries of excellence and think beyond traditional banking approach to serve our customers and communities in a better way.

At this juncture in my career, I thank my peers and subordinates, whose unwavering dedication and collaboration has made the success of our team possible. The culture of mutual respect and commitment has always been the foundation for all that we have accomplished together. I am thankful to the Top Management for their trust & mentorship, last but not least my family for their continued support.

As I step into this new role, I am filled with both optimism and a deep sense of responsibility. As the road ahead will present new challenges and with our remarkably talented Canarites, I firmly believe that together we can embrace the challenges, seize new opportunities, we shall continue to elevate the bank to new heights, build deeper connections with our customers, and ensure that our services remain aligned with the evolving needs of the present customers whom we serve.

In conclusion, I look forward to work together, as we continue to build a brighter future for our Bank.

Dhananjay Singh
General Manager

As I embark on a new chapter in my life, I wish to express my profound gratitude for the incredible journey we have shared at Canara Bank. It has been an honour to serve alongside such a dedicated and talented team. Over the years, I have witnessed the remarkable growth and transformation of our bank, driven by the unwavering commitment and hard work by each and every one. The dedication of Canarities in serving our customers and upholding the values of our institution has always been inspiring. I am confident that the future of Canara Bank is bright. With your continued efforts and innovative spirit, I am certain that we will continue to thrive and achieve even greater heights. I cherish the memories and friendships forged during my tenure. I will deeply miss the camaraderie and the opportunity to contribute to the success of our bank. I wish you all the very best in your future and may success and happiness accompany you always.

Pranay Ranjan Deo
Ex General Manager

As I step into this new chapter of my life on the occasion of my superannuation, I take this opportunity to express my deepest gratitude to my Seniors, Colleagues, Family, Friends, Associates & Mentors who have been instrumental in shaping my professional journey.

Their guidance, wisdom, and encouragement have not only enriched my career but also inspired me to strive for excellence every step of the way.

The values and lessons I have imbibed under the mentorship of all have been invaluable, serving as a compass in navigating challenges and achieving milestones. Their unwavering belief in my potential has always motivated me to give my best and contribute meaningfully to our shared goals.

I carry with me immense respect and gratitude for the role each of you have played in my journey. Thank you for your support, your trust, and the enduring legacy of leadership that you have imparted. I look forward to cherishing the relationships we have built and hope to stay connected in the years ahead.

Wishing you all the very best in life.

With heartfelt thanks and warm regards,

Ravikrishnan M K
Ex General Manager

On my retirement, I would like to express my deepest gratitude and best wishes to each one of you. I express my sincere thanks to all the Canarites for the love and affection showered on me over the years.

After a remarkable 28 years of service, it is time for me to bid farewell to Canara Bank, an institution that has been my second home. I am proud to have been a part of an organization that values integrity, innovation and customer-service. I thank the Top Management and Leadership of Canara Bank for believing in me and giving me the opportunity to serve in various capacities. Their guidance and encouragement has been instrumental in discharging my duties.

I am deeply indebted to my mentors who have guided and shaped me throughout my career. I extend my heartfelt thanks to all my colleagues and friends who have shown trust and confidence in me over the years. The mutual trust, friendship, collaboration we have built will always hold a special place in my heart.

I would like to leave a small piece of advice for the younger generation stepping into this ever evolving industry:

- **Embrace Change :** The banking landscape is dynamic, and those who adapt and innovate will thrive.
- **Stay Customer-Centric :** Always remember, trust is the cornerstone of our profession. Build it, nurture it and it will serve you well.
- **Learn Continuously :** Keep upgrading your skills and knowledge. The journey of learning never ends.

Thank you once again for being a part of my journey. I am carrying cherished memories and immense pride of having been associated with this wonderful institution.

Wishing you all success, happiness, and fulfillment in your careers and personal lives.

Warm regards,

Maj Joginder Singh Ghangas
Ex General Manager

श्रेयस की टीम आपके सुखद सेवानिवृत्त जीवन की कामना करती है।

Shreyas team wishes them a happy retirement,
"Let the Golden years be bright, happy and fulfilling".

"EACH ONE SOURCE TEN"

On the occasion of Republic Day celebration, our MD and CEO made a fervent appeal to all the staff to contribute by sourcing a fresh deposit of minimum of ₹10 Lac as CASA or RTD from our family, relatives, friends and known sources outside the bank to increase the CASA Ratio.

In Response to the clarion call, already thousands of Canarites have enthusiastically risen to the challenge of sourcing CASA and aggressively driving results that consistently surpasses daily business.

In the current day scenario, where competition is increasing and interest rates are fluctuating, maintaining a high CASA ratio is even more critical to ensure profitability, stability, and competitiveness. The growth in CASA Ratio of our Bank is pegged at a modest figure, which is significantly lower than our peer PSBs. It is a serious cause of concern leaving us with room for improvement and progress.

Let us understand the need and implications of having a good CASA Ratio

- CASA, the Bank's low cost funds, typically come at a low cost or as no cost, as we either pay no interest or very minimal interest on these accounts. This helps us to reduce their overall cost of funds i.e., interest payment on the liabilities.
- It provides a source of funds for lending and managing liquidity and gives us more scope to offer loans at competitive interest rates and maintain healthy profit margins.
- With a low CASA ratio, we face increased dependence on higher funding cost, such as term deposits and borrowings. Consequently, the higher cost of funds elevates the banks overall expense burden, potentially compressing its Net Interest Margin(NIM) and undermining profitability. (The difference between the interest a bank earns on loans and the interest it pays on deposits is called Net Interest Margin.)
- Overall, a high CASA ratio is a sign of a bank's operational efficiency and financial health, contributing to its competitiveness in the banking sector

"In Response to my Republic Day call "Each One Source Ten" the results are very encouraging. I am sure with active involvement from each one of you, we are going to create history. Let us march on till we achieve our goal. I am personally going through all success stories posted. My appeal to all of you is that this drive is for bringing more deposits from outside the Bank and not to shift from one account to another within the Bank."

-MD & CEO

Banking on Bancassurance

P Srinivasa Murthy
Senior Manager
Third Party Products Section
Marketing, PR and TPP Wing, HO

On a beautiful typical Bengaluru morning, Venky, Joshi and I were sipping our piping hot strong authentic south Indian filter coffee (Iska Mazza hi alag hai!). The hot topic of the morning was the untimely and sudden retirement of R Ashwin from International Cricket.

Venky – Do you think this is all too sudden or a well thought out decision?

Joshi – This tour in particular has not gone as per the expectations of Ashwin, I suppose. Washi was picked ahead of him for Perth Test and then despite doing decently in the Pink ball test at Adelaide, he didn't find a place in XI in the Gabba Test. With Jaddu coming good with the bat, Ashwin realized that his chances of finding a place in XI in Melbourne and Sydney is very slim and the next home series is in Oct 2025(10 months away), he decided to say bye, I reckon.

Venky – In Cricket, nothing can be taken for granted and we don't know what is waiting for us around the corner, one day you are the 2nd highest wicket taker for India in Tests – 537 wickets and still, you are not certain of a place in XI, even though you are certain of finding a placing in India's Hall of Fame!

Me – Just like Cricket, Life is also very uncertain, today you are hale and healthy and at the top of your career, like Ashwin and next day, without a clue you may have to bid adieu. Ashwin leaves a Legacy through his achievements, but what about common man like me, how can I leave a legacy for my family's future needs in my absence?

Venky – That is where Bancassurance comes into picture my dear! You should have sufficient Life Cover equal to at least 10 times of your annual Salary + amount equal to your Housing, Vehicle, DPN etc. That way, your family will be able to maintain their day to day needs, just by investing this Insurance amount in Fixed Deposit. Term Insurance Plans are specifically meant for this purpose only. Just like Gaadi Insurance, this is body Insurance – Akin to Vehicle Insurance, there are no maturity benefits in Term plans, the Sum Assured is paid only as Death Benefit. But, you get high cover at low premium. Since you have a very good life style in terms of fitness, you can also opt for Term Insurance with Return of Premium option, the premiums paid by you will be paid back as Maturity benefits, if you survive the Policy term.

Joshi – Since you also have a Housing loan running into lacs, you should look at loan protection plan. Our Bank is offering the Group Secure product for this purpose and the premium for buying this product is also being funded by the Bank(If needed). This will ensure that your family inherits the property and not the loan liability.

Me – Term Insurance takes care of Day-to-Day needs, how do I plan for my two daughters?

Venky – Child Insurance Plans are ideally suited for this. You calculate how much you need for each of your daughters and in which year. The Child plans have the flexibility to meet everyone's requirements. The beauty of Child Plan is, if the premium paying parent is no more, the future premiums are paid by the Insurance company and the Child gets the promised/planned maturity benefits also. Every

parent with a young kid, should buy an appropriate Child plan to ensure proper education. Further, Income for Life Insurance is tax free as per 10(10D) of IT Act. Premium paid is exempted from tax as per 80C of IT Act. Our Bank has tie-ups with Canara HSBC Life & LIC for Life Insurance and you can choose the product best suited for your needs. Canara HSBC Life offers rebate on 1st year premium for employees.

Further, while selling any Life Insurance product, our Bank does a "Financial Need Assessment" to understand the financial position and family profile and needs of every buyer in a very scientific way. I advise you to contact our Specified Person / IRDAI Licensed Bank staff to get your Financial Need Assessment done.

Joshi – Along with this, you should also look at investing in Mutual Funds, through SIP mode to achieve life goals like Child Education, Marriage, Dream Holiday, retirement etc. In-fact, now-a-days, mutual fund companies are providing Mutual fund transaction/investment statements by capturing the Specified Goals, to remind the investor of the purpose for which this investment is being done. Our Bank is distributing Mutual Fund products of Canara Robeco and you can opt for any of their funds be it Large Cap, Mid-Cap, Small Cap or Multi Cap etc., depending on your risk appetite. Investment in ELSS Scheme is also eligible for tax exemption as per IT Act.

Me – Super guru! I will put your suggestions into action, without any delay.

Venky – Last but not least, you should be having a proper Health Insurance to take care of yourself and your family health. Health Insurance ensures that your hard earned Savings is not lost due to any Medical emergencies.

Me – Should I buy Health Insurance, as Bank is taking care of our medical needs?

Joshi – Bank will take care as long as you are in service or alive, What will happen after that? Agreed you can buy Insurance meant for Ex-employees, but understand that comes at a very high cost and limited cover, as 60 & above age is considered as vulnerable group from Insurance perspective.

Venky – Insurance is something you need to buy when you don't need it, because you won't get it when you need it!

Joshi – Best and most economical way to buy high cover at low premium is to have a basic Insurance Plan for at least 10 Lacs and opt for a top-up plan for 20 to 30 lacs, considering the cost of medical treatment. Our Bank has tie ups with Bajaj Allianz, TATA AIG and New India Assurance for health and General Insurance and you can compare the benefits / rates and choose best plan that suits your needs. Your Outpatient treatment expenses will also be covered if your opt for "Health Prime Rider" of Bajaj Allianz along with their basic Health or Top-up plan. Global Health Plan with high Sum Insured with built in feature permitting treatment abroad is also available in the Bank catering to the needs of Ultra HNIs.

Venky – I further advise you to buy all your Insurance and Mutual Funds from the Bank, so that all your payments are done timely and through one a/c. The Main objective of the Bank to offer Bancassurance products is to make Bank a "One stop Financial Stop" for our esteemed customers. Furthermore, Bank has put in place a robust system to provide after sales service and assist the policy holders during any claim settlement.

Joshi – Many in the Bank think that by doing Insurance & Mutual Fund business, Bank is losing its CASA deposits. As at 30.09.2024, the CASA deposits of the Bank had stood at 3.87 Lac Crore and the Life Insurance premium mobilized by the Bank was around 700 Cr which tantamount to a negligible 0.18% of Total CASA Deposits. Further, it is also observed that every month 100s of Crores are going out of our CASA a/cs to other Life Insurance Cos.,

which means that our customers need Insurance but are buying from other Insurers. During 2023-24, Bank earned 310 Cr risk free income from Bancassurance business augmenting our Bank's profit. If we educate our customers about availability of competitive Insurance products in the Bank, it would be a Win-Win proposition for the Customer and the Bank.

Venky – A Cricket helmet and other protective gear helps batsmen to face the bouncers & googlies from bowlers, similarly Insurance helps us to face the uncertainties thrown by Life. To inculcate the habit of Thrift & Savings, is one of our Bank's founding Principles and Insurance / Mutual Funds are instruments of Savings. By offering these services, we are increasing customer stickness, considering the various product payments going out of their a/cs. This will also result in substantial increase in Products Per Customer and Profit per Customer. "Bank on us, for all your Bancassurance needs" message should be well spread amongst all our customers.

Me – A friend in Need is a friend Indeed is a very old saying. You both have almost put in place a tailor –made "Financial Plan" for me. Just like Ravichandran Ashwin, I can also now leave a legacy for my Children / family, thanks to you both. You have also enlightened me the importance of Insurance and also the main purpose of Bancassurance business in the Bank. I hope that many like me would get more clarity on Bank's Bancassurance business. Thanks!

*****

Gen Z Literature

Gen Z-iology

Roughly speaking Generation Z encompasses anyone born in the late nineties. And like all generations Gen Z-ers have their own slang, lingo and terms than can sometimes sound like a totally different language. If you aren't quick enough to catch on you might find yourself with FOMO (Fear of Missing Out). Fear not. There is still time to keep from becoming old and uncool!!!

Here are a few Gen Z words with their meanings and examples:

Low-key : Meaning : Subtle, understated, or not obvious.
Example : "I'm low-key obsessed with this new song."

Slay : Meaning : To do something exceptionally well; to succeed brilliantly.
Example : "She absolutely slayed that presentation!"

Spill the tea : Meaning : To share gossip or juicy details about something or someone.
Example : "Spill the tea! What happened at the party last night?"

Shook : Meaning : Extremely surprised or shocked.
Example : "I was shook when I saw her new hair color."

Extra : Meaning : Over-the-top, dramatic, or excessive.
Example : "She was being extra at the concert, screaming and jumping around."

Note : Slang evolves quickly, so the meanings of these words might change over time.

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र बागलुरू – प्रशिक्षण का एक नया अध्याय

राजीव कुमार सिन्हा
सहायक महाप्रबंधक
केंद्र प्रभारी, सी.सी.ओ.ई, बागलुरु

केनरा बैंक में प्रशिक्षण प्रणाली को औपचारिक रूप देने का श्रेय **श्री डी. फ्रीमैन** को जाता है – जो लॉयड्स बैंक, लंदन के एक सेवानिवृत्त अधिकारी थे, जिनकी सेवाओं को बैंक ने विदेशी मुद्रा व्यापार शुरू करने और 1953 में केनरा बैंक में विदेशी मुद्रा विभाग स्थापित करने के लिए अनुबंधित किया था। उन्होंने औपचारिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे तब बेंगलूरु स्कूल ऑफ ट्रेनिंग कहा जाता था। बेंगलूरु स्कूल ऑफ ट्रेनिंग के पहले कार्यक्रम के साथ, 12 अप्रैल, 1954 को केनरा बैंक में एक प्रणाली के रूप में औपचारिक प्रशिक्षण की शुरुआत हुई, जो बेंगलूरु में केनरा बैंक की एवेन्यू रोड शाखा में स्थित था। 1965 में स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज का संचालन एक वर्ष की अवधि के लिए केनरा बैंक जुबली एजुकेशन फंड को सौंपा गया था। वर्ष 2020 में बैंकों के विलय के बाद, प्रशिक्षण एवं विकास वर्टिकल के एपेक्स सेंटर को केनरा इंस्टीट्यूट ऑफ बैंक मैनेजमेंट, मणिपाल के वर्तमान परिसर में स्थानांतरित कर दिया गया था। वर्तमान में हमारे बैंक में कुल 29 प्रशिक्षण व विकास केंद्र प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं।

बेंगलूरु केंद्र, जो कि 29 प्रशिक्षण व विकास केंद्र में एक था, को दिनांक 9 नवंबर 2024 को एक नए परिसर मे स्थानांतरित किया गया है, एवं इसका नया नाम अब **"केनरा उत्कृष्टता केंद्र"** रखा गया है। वर्ष 2018 में केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र के निर्माण के लिए, बेंगलूरु शहर के पास बागलुरू मे एक बहुआयामी आवासीय प्रशिक्षण केंद्र के निर्माण के लिए नींव रखी गयी थी। यह केंद्र बेंगलूरु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से महज 12 किलोमीटर, बेंगलूरु रेलवे स्टेशन तथा मेजेस्टिक बस अड्डे से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। वर्ष 2020 मे सिंडिकेट बैंक के विलय के पश्चात इस केंद्र के डिजाइन में, भविष्य की प्रशिक्षण के जरूरतों के हिसाब से काफी बदलाव किए गए तथा इस केंद्र को समयसामयिक बैंकिंग जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है। इस केंद्र का उदघाटन, दिनांक 09 नवम्बर 2024 को, श्रीमती निर्मला सीतारमण, वित्त एवं कार्पोरेट मामलों के मंत्री (भारत सरकार), एवं श्री के सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, केनरा बैंक के कर कमलों से हुआ है।

केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र बागलुरू में बेहतरीन प्रशिक्षण सुविधाएँ हैं, जिनमें शामिल हैं

- 6 एकड़ में फैले परिसर का शांत और शांतिपूर्ण वातावरण
- 1.33 लाख वर्ग फुट का निर्मित क्षेत्र,
- समृद्ध शिक्षण अनुभव के लिए अनुकूल वातावरण
- हरे–भरे आवासीय परिसर
- 61 कमरे वाले ट्विन शेयरिंग हॉस्टल
- वॉकिंग ट्रैक
- सुंदर भूनिर्माण
- अत्याधुनिक फिटनेस उपकरणों से सुसज्जित व्यायामशाला।

❖ कैरम, स्नूकर, शतरंज, टेबल टेनिस जैसी इंडोर खेलों की सुविधा

केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र बागलुरू की झलकियाँ

- 56 लोगों की बैठने की क्षमता वाली 6 कक्षाएँ, जिनमें से 3 भविष्य के स्मार्ट लर्निंग रूम
- इंटरैक्टिव बोर्ड से सुसज्जित कक्षाएँ
- अत्याधुनिक ऑडियो विज़ुअल उपकरण, वेब कैम
- दुनिया भर के सत्रों की वर्चुअल लाइव स्ट्रीमिंग करने में सक्षम।

इन सभी सुविधाओं से केंद्र पर एक साथ छह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

➢ अत्याधुनिक ऑडिटोरियम

- 180 लोगों के बैठने की क्षमता,
- अत्याधुनिक ऑडियो विजुअल उपकरणों से सुसज्जित,
- बड़ी एलईडी स्क्रीन,
- दर्शकों के लिए नया अनुभव।

ईएसजी समाधान –

- 50 केवीए की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता
- वर्षा जल संचयन सुविधा एवं इसके रीसाईक्लिंग की व्यवस्था
- 50 केएलडी की क्षमता वाला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट
- भूनिर्माण, 3 एकड़ में फैला हरित उद्यान, लॉन की उपलब्धता

❖ 150 कंप्यूटरों के साथ पूरी तरह सुसज्जित तीन कंप्यूटर लैब

❖ पुस्तकों, पत्रिकाओं, ई–बुक्स और ई–मैगजीन प्रदान करने वाले प्लेटफॉर्म के साथ अत्याधुनिक डिजिटल लाइब्रेरी।

❖ विभिन्न प्रकार के उत्तर दक्षिण भारतीय व्यंजनों के साथ कैंटीन, जिसमें एक बार में 250 लोगों के बैठने की व्यवस्था है।

सूचना प्रौद्योगिकी और नेतृत्व विकास में विशेषज्ञता – केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र के प्राचार्य श्री राजीव कुमार सिन्हा, सहायक महाप्रबंधक, के नेतृत्व में विभिन्न संकायों की पूरी टीम, प्रधान कार्यालय, अंचल कार्यालय बेंगलूरू के साथ सम्पूर्ण केनरा बैंक के विभिन्न जरूरतों के हिसाब से प्रशिक्षण देने के लिए पूरी तरह से तैयार है। इस केंद्र को सूचना प्रौद्योगिकी एवं नेतृत्व विकास में विशेषज्ञता तथा दक्षता हासिल कराने के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया है। अपने शुरुआत के एक महीने के अंदर ही इस केंद्र के द्वारा लगभग 1000 से अधिक स्टाफ को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। यह केंद्र न केवल प्रशिक्षण बल्कि विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन परीक्षा कराने के लिए भी सक्षम है। इस केंद्र में आंतरिक एवं बाहय प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करना भविष्य में प्रस्तावित है। बैंकिंग व वित्त के प्रशिक्षण क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं के साथ साझेदारी में प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने के लिए भी यह केंद्र प्रयासरत है।

अत्याधुनिक रिकार्डिंग स्टूडियो कक्ष, जिसमें नवीनतम सुविधाओं सहित प्रशिक्षण टूल्स की सुविधा होगी, जैसे पोड्कास्ट, विडियो, प्रशैक्षणिक रील्स, अन्य ऑडियो व विडिओ जानकारियाँ होंगी, भी प्रस्तावित है ।

Celebrating Punjab: A Kaleidoscope of Festivals and Traditions

Nishbat Mansoori
Manager
Regional Office, Vadodara

Punjab - a land where the calendar brims with joy, and every season brings a reason to celebrate. Known as the 'Land of Five Rivers', Punjab is famed not only for its fertile lands and hearty cuisine but also for its exuberant festivals that embody its rich cultural heritage. From the vibrant harvest festival of Baisakhi to the heartwarming winter bonfires of Lohri, Punjab's celebrations showcase a harmonious blend of joy, devotion, and unity.

Let's take a journey through Punjab's most cherished festivals, delving into their history, traditions, and modern-day significance. Whether you wish to witness the ethereal glow of the Golden Temple during Diwali or join the lively beats of Giddha during Teeyan, this guide promises an unforgettable exploration of Punjab's festive spirit.

Baisakhi: A Harvest Festival of Jubilation

Baisakhi is far more than just a date on the calendar; it's the heartbeat of Punjab's agrarian culture. Celebrated in mid-April, this festival marks the joyous harvest of Rabi crops. Dressed in vibrant attire, farmers and villagers gather in fields and fairs to rejoice, expressing gratitude for their hard work and the promise of prosperity.

The celebrations reach their zenith in Amritsar, where the Golden Temple shines under the warm April sun. Devotees flock to the temple to offer prayers, partake in Seva (selfless service), and enjoy Langar - a communal meal that exemplifies Sikhism's core principles of equality and community welfare.

Baisakhi is also a showcase of Punjab's dynamic folk traditions. Villages echo with the beats of dhol as men and women perform spirited Bhangra and Giddha dances. Rustic sports like kabaddi, wrestling, and tug of war add to the festive fervor. Visitors can indulge in traditional Punjabi delicacies like Makki di Roti and Sarson da Saag, while evenings are marked by bonfires, storytelling, and fireworks lighting up the skies.

Lohri: The Festival of Warmth and Abundance

As winter reaches its peak in January, Punjab comes alive with Lohri, a festival that celebrates the end of the winter solstice. Lohri is synonymous with bonfires, where families and communities gather to offer puffed rice, popcorn, and sesame seeds to the fire, seeking blessings for a bountiful harvest.

The festival's charm lies in its simplicity and warmth. Folk songs dedicated to Dulha Bhatti, a legendary Punjabi hero, fill the air as people dance around the bonfires to the rhythms of dhol. Traditional sweets like gajak, rewari, and til laddoos add a sweet touch to the celebrations, while the feast includes quintessential Punjabi dishes such as Sarson da Saag and Makki di Roti.

Lohri is especially significant for new couples and families with newborns, symbolizing new beginnings and hope. Travellers can immerse themselves in the festive spirit by joining the vibrant

dance circles, savoring authentic Punjabi cuisine, and witnessing the community's joyous unity.

Hola Mohalla: A Celebration of Valor and Spirituality coinciding with Holi, Hola Mohalla is a unique festival celebrated with martial fervor and spiritual zeal in Punjab. Originating from the town of Anandpur Sahib, this three-day event showcases the valor of Sikh warriors through mock battles, Gatka (a traditional martial art), and horseback stunts.

While Hola Mohalla emphasizes martial traditions, it also embraces the playful spirit of Holi. Colors fill the air as people smear each other with gulal, dissolving differences and fostering unity. The festival is a feast for the senses, with stalls offering mouth-watering delicacies like gujiya and thandai.

Evenings are marked by soulful kirtans (devotional songs) and community bonfires, symbolizing the victory of good over evil. Visitors to Anandpur Sahib during Hola Mohalla are treated to a grand spectacle of Sikh heritage, combining spirituality, history, and unbridled joy.

Diwali: Punjab's Festival of Lights

Diwali, the festival of lights, holds a special place in Punjab's cultural calendar. Known for its spiritual significance and visual splendor, Diwali in Punjab is particularly enchanting in Amritsar. The Golden Temple, adorned with thousands of diyas (oil lamps), becomes a beacon of light and divinity, drawing devotees and tourists alike.

The festivities extend beyond the temple, with marketplaces buzzing with activity, homes decorated with rangoli and fairy lights, and the night sky illuminated by vibrant fireworks. Families come together to exchange gifts, enjoy lavish feasts, and indulge in sweets like jalebis and barfis. For visitors, Diwali in Punjab offers an unforgettable experience of unity, prosperity, and devotion.

Maghi: Honoring Valor and Welcoming Spring

Maghi, celebrated in January, marks the beginning of the month of Magh and the onset of warmer days. This festival is deeply rooted in Sikh history, commemorating the sacrifice of the Forty Immortals who fought bravely at the Battle of Muktsar.

The town of Muktsar becomes the epicenter of Maghi celebrations, where devotees take a holy dip in the sacred waters of Muktsar Sahib. Fairs and cultural events add to the festive atmosphere, with traditional dishes like kheer and khichdi symbolizing community and abundance.

Maghi is a time for reflection and renewal, blending solemn remembrance with joyful anticipation of the upcoming harvest. It's an invitation to experience Punjab's resilience and rich heritage firsthand.

Travel Tips for Experiencing Punjab's Festivals

If you are planning to explore Punjab during its festive seasons, Here are some tips to ensure a seamless and enriching experience:

- **Book in Advance:** Popular festivals like Diwali and Baisakhi draw large crowds, so secure your accommodations and travel arrangements early.
- **Weather-Appropriate Clothing:** Punjab's weather can be extreme. Pack light cotton clothing for summer festivals and warm layers for winter celebrations.
- **Embrace Local Culture:** Learn a few Punjabi phrases and participate in local customs. Punjabis are known for their hospitality and warmth, making every visitor feel at home.
- **Gastronomic Delights:** Don't miss the opportunity to savour Punjab's traditional cuisine, from spicy curries to delectable sweets.
- **Capture Memories:** Bring a good camera to document the colourful and lively festivities. Respect local traditions while taking photographs, especially in sacred places.
- **Transport:** Public transport is available, but hiring a private vehicle can provide greater flexibility during festival times.

A Tapestry of Joy and Tradition

Punjab's festivals are a testament to its vibrant culture, deep-rooted traditions, and unbreakable community spirit. Whether you're drawn to the spiritual aura of Diwali, the agrarian joy of Baisakhi, or the martial grandeur of Hola Mohalla, each festival offers a unique glimpse into the soul of Punjab. By participating in these celebrations, you'll not only witness the state's cultural richness but also carry home memories of unity, warmth, and boundless joy.

*****

Amazing Fun Facts About Punjab

1. The word Punjab comes from the Persian word panj (five) and aab (water).
2. According to the World Book of Records, the Golden Temple in Amritsar is the most visited tourist place in the world. The Golden Temple runs a free and massive community kitchen, known as langar, every day to feed thousands of people.
3. Punjabi is the official language of the state and the 10th most commonly spoken language in the world.
4. The High Court of Punjab and Haryana is common for Punjab, Haryana, and Chandigarh.
5. Chandigarh, a union territory of India, serves as the capital of Punjab and Haryana.
6. Gatka is a Sikh Martial Art which originated in Punjab. It is often performed during Sikh festivals and events.

A Journey to Bhutan

R. V. REKHA
CSA
OL Section, HO, Bengaluru

Our family of 3 planned a trip to Bhutan. We decided to do a group tour organised by Nirmala Travels for a duration 8 days and 7 nights from Bengaluru. Undeterred by the heavy rains of Bengaluru, we started our journey as planned on the 20th of October early morning to catch our flight to Bagdora at 6.00 am. Our tour guide Mr. Hari reached early and was waiting to receive us and the rest of the team. We were a group of 23 members. Except for a handful of young people, most of us were aged between 55 to 65 and were no less energetic and enthusiastic than our counterparts. We bid aideu to Bengaluru and set on our journey.

We reached Bagdogra around 11.00 am, and were received by Mr. Karma, our local guide for Bhutan who would accompany us throughout the tour. A tourist vehicle was ready at the airport to take us to Phuentsholing which is a four-hour long drive from Bagdogra. Phuentsholing is at an altitude of 300 metres and is the border point for any goods and services entry / exit into Bhutan. It lies opposite the Indian town of Jaigaon and cross-border trade has resulted in a thriving local economy. After arriving at Phuentsholing, we completed the permit formalities and checked into the hotel for dinner and an overnight stay.

Day 2: Phuentsholing to Thimphu : After a quick breakfast we left to our first destination of the day - Thimphu which is at an altitude of 2400 mts. The breath-taking scenic journey to Thimphu was a 5 hrs drive from Phuentsholing. The journey was in a stark contrast to the congested and crowded streets of Phuentsholing with beautiful and peaceful roads amidst nature. The Hustle and Bustle of the city transformed into a beautiful journey with the countryside and we started feeling fresh and enjoyed Gods creation. The journey passed through beautiful forests, temperate alpine zones, villages, towns, water falls, hills and mountains. We halted in places of scenic beauty to take photographs of the scenic places to seal it in our memories. We reached Chuzom, a meeting point of two rivers (Thimphu & Paro). This is also the Tri junction of highway leading to Thimphu, Paro and Phuentsholing into 3 directions. We were welcomed by the lovely and beautiful portraits of the King & Queen placed at the entrance Chuzom. We felt that the King and Queen were there to receive the people who visit Bhutan. After reaching Thimphu, we checked into the hotel and in the evening we had a long walk to the shopping centre. We ate, shopped souvenirs, and handicrafts to take them as a memoir and share some with our near and dear ones. We had an overnight stay at Thimphu.

Day 3: Thimphu Sightseeing: This bustling little city is the main centre of Commerce, Religion & the capital of Bhutan. This city retains its cultural identity and values amidst the signs of modernization, often referred as worlds only city without traffic lights. Our first destination of the day was Buddha view point. The Buddha Dordenma is located on top of the hill in Kuensel Phodrang Nature Park and it overlooks the southern entrance to Thimphu valley.

Next we visited "Simply Bhutan" an interactive "living" museum which gives a good guided introduction to various aspects of Bhutanese traditional life. Visitors are greeted with a shot of local Ara (rice spirit), The National drink of Bhutan before being guided through the replicas of villages. Along the way, we can also dress up in traditional Bhutanese clothes, try out archery and listen to songs sung by Bhutanese women as they build houses out of rammed earth.

We next visited Zilukha Nunnery which is also known as Druthob Goemba, housing around 60 nuns in its premises. A visit to the nunnery energises the soul because of its peaceful and serene surroundings. From the nunnery , the spectacular view of Tashichho Dzang, a Buddhist monastery and fortress can be viewed.

Our next visit was to Kaja Throm – A vibrant hub of Bhutanese agriculture in Thimpu. It is a riverside farmer's market and a popular spot where, one can get fresh farm produce, food and snack stalls, fun art installed by Voluntary Artists Studio (VAS) Bhutan. After our fruitful day we stayed overnight in Thimphu.

Day 4: Thimphu to Punakha : The day started with another scenic drive to Punakha from Thimphu over Dochula pass which roughly takes about two hours. Punakha is one of the warmest places of Bhutan. Dochula pass is at a popular location as it offers a stunning 180-degree panoramic view of the Great Himalayan mountain ranges. The view is especially scenic with snow-capped mountains forming a majestic backdrop to the tranquillity of the 108 chortens or stupas known as "Druk Wangyal Chortens" gracing the mountain pass.

Punakha Dzong built in 1637 is one of the finest and must see Dzongs of Bhutan. The Dzong stands in between meeting point of two rivers. Phochu and Mochu making the most photogenic Dzongs of Bhutan. Our next visit was to the Punakha Suspension Bridge which is the longest of its kind in Bhutan. The bridge connects the Dzong with the villages Shengana, Samdingkha and Wangkho. One must walk past the King's place and the cremation ground to access this suspension bridge. We halted fthat night at Punakha.

Day 5: Punakha to Paro : Early morning we travelled from Punakha to Paro which took around 3 hours of journey. The entire stretch of drive will refresh your mind and give you a second chance to enjoy the great snowcapped mountain views of the Himalayan Dachula. Enroute we went to Lamperl Botonical Park. It is a paradise for nature lovers which hosts 21 animal species like deer, tiger, leopard, red panda. etc .

Paro Airport View Point was another breathtaking location situated on the Hills overlooking the airport. It offers the best view of the whole airport.

Rest of the day we explored the Tiny Paro Town which offers lot more scope for shopping. The streets are filled with numerous authentic handicraft shops and we shopped to our hearts content. We halted overnight at Paro.

Day 6: Paro Sightseeing : This picturesque region in the kingdom is covered in fertile rice fields and has a beautiful crystalline river meandering down the valley. Paro has more of historical sites, high-end tourist resorts and many souvenir shops for shopping including world famous Taktsang.

Taktsang Monastery, famously known as Tiger's Nest in Bhutan or Paro Taktsang, is located in Paro district. The monastery is one of the most venerated places of pilgrimage in the Himalayas. Taktsang clings to the rock towering 900m (2,600feet) above the valley and is located 2,950m (9,678 feet) above the sea level. It is believed to be one of the 13 small monasteries where Guru Padmasambhava, also known as the 'Second Buddha" practiced and taught Vajrayana. A popular festival known as Tscehu held in honor of Guru Padmasambhava is celebrated in the Paro valley sometime during March / April.

We started at 8.00 a.m. for the Tiger's Nest. At the entrance, a small collection of stalls was set up for purchasing souvenirs and crafts. There were also carved wooden walking / hiking sticks for sale which aids in climbing the mountains. Out of sheer curiosity I purchased one and never regretted. Through the gate, we crossed a couple of fields to the base of the cliff. Here the locals were standing with mules and horses which can be hired to hike through the mountain. But we wanted to feel the satisfaction of the hike to the Tiger's Nest on our own!

As we started walking we caught the first glimpse of the Tiger's Nest Monastery - a tiny speck high above on a cliff face nestled between a stream and a waterfall. We walked through the wide dirt trail which narrowed down in some places. It's

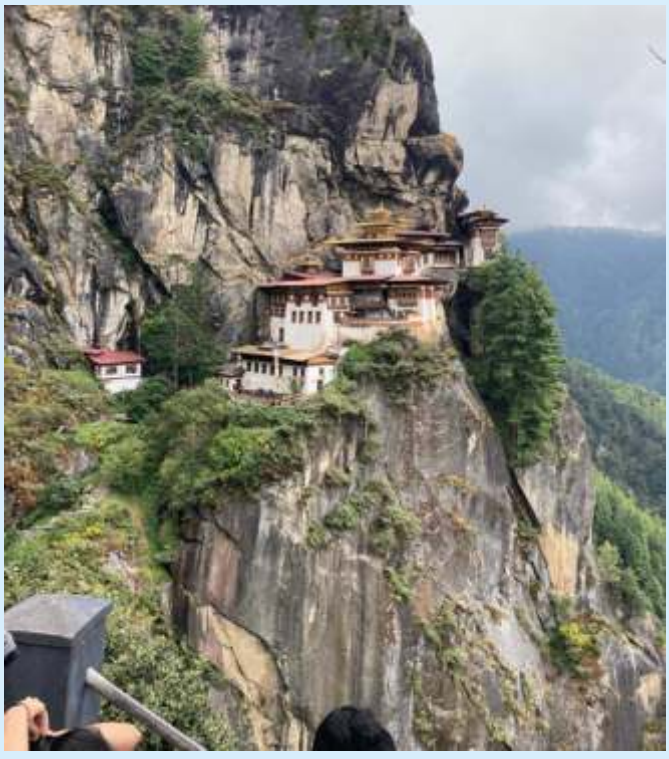

completely uphill but very doable and the stick which I purchased out of curiosity came in handy. Halfway through, a small cafeteria is there for breakfast and relaxation. Not wanting to stop for too long as the day was getting hotter, we were soon on our hike again. There were still a few hundred meters to go before we reached the Tiger's Nest, both up and down (and then up again, as we found out later).

Having gone down the steps to the bottom of the path by the waterfall, we were feeling the burn and I needed to catch my breath. Fortunately, the area around the bridge is particularly peaceful and refreshing, specially the spray from the waterfall in the air. It was a fantastic recharge and made us ready for the final part of our journey.

The Final push: Even with that second wind, the stairway to the Tiger's Nest felt like one of the longest, I'd ever encountered. The steps seemed to get steeper as they went. However, once we'd reached the top it was all worth it. Once inside the Tiger's Nest, we handed over our mobiles, baggage's, etc. at the entrance. We took a final glance across the valley and stepped into the Tiger's Nest Monastery, instantly feeling relieved to be there. The Bhutanese believe that just stepping over the threshold of the monastery will bring you blessings, so many enter with their folded hands in prayer.

Oh !!! Breathtaking !!!!!!!!

After having the Darshan of Guru Padmasambhava, we started our return journey immediately as nature was not supportive due to cloudy weather and slight drizzling. By 4.00 p.m. we reached back and it was truly an achievement and an unique and wonderful experience manoeuvring through the hills.

We spent the whole day to complete the hike but ended up with full satisfaction. We then reached the hotel had dinner and stayed overnight at Paro.

Day 7: Paro to Phuentsholing : This was the last but one day of the trip, We had a quick breakfast, and started our journey to Phuentsholing, the place from which we had started. It was a long drive and we stopped in between for tea and took photographs at scenic places like waterfalls, landscapes and a little shopping. We reached the hotel and stayed overnight at Phuentsholing

Day 8 : End of Tour : Early morning we packed our bags with a heavy heart. Every trip ends with wanting for more, and Bhutan was no less mesmerising. We departed from Phuentsholing to Bagdogra Airport and reached Bangalore by 6.00 p.m.

As our journey in Bhutan comes to a full circle, I am filled with a deep sense of appreciation and wonder. The country's unique blend of tradition, nature and spiritually left an indelible mark on my soul.

*****

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

यादों की गुल्लक से

बी.के. उप्रेती
वरिष्ठ प्रबंधक (सेवानिवृत्त)
केनरा बैंक

तीन वर्ष ग्रामीण शाखा में सेवाएँ देने के बाद मेरा स्थानांतरण दिल्ली की एक शाखा में हो गया जो पहले एक्सटेंशन काउंटर हुआ करती थी और अब वह पूर्ण शाखा में परिवर्तित हो गई थी। मैंने स्टाफ मीटिंग बुलाई और सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वह मुझे शाखा के अति विशिष्ट (VIP) ग्राहकों से परिचय कराएं ताकि हम शाखा का बिजनेस बढ़ा सकें और ग्राहक सेवा को भी बेहतर कर सकें। अभी मुझे दो ही दिन हुए थे कि एक ग्राहक शाखा खुलते ही 10:00 बजे आए और बड़ी ऊंची आवाज में प्रवेश करते ही बोले, ''शर्मा जी कैसे हो आप सब?'' मैंने देखा कि वह हमारे कर्मचारी शर्मा जी से मिले और मेरी तरफ देखकर शर्मा जी से मेरे बारे में पूछने लगे।

शर्मा जी ने बताया कि यह शाखा के नए मैनेजर हैं। तभी शर्मा जी अपनी सीट से उठे और उनको मेरे पास ले आए और परिचय कराया और बताया कि सर यह शंकर नारायण जी हैं, शाखा के बहुत ही हंसमुख, वरिष्ठ नागरिक और पेंशनर। कहने लगे कि यह हमारी शाखा के केवल ग्राहक ही नहीं अपितु शाखा के ब्रांड एंबेसडर भी हैं। उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा कि 6 साल पहले वह स्वास्थ्य मंत्रालय से एडिशनल डायरेक्टर के पद से रिटायर हुए हैं। शर्मा जी से बात करते हुए मैंने अनुभव किया कि वह बहुत ही हंसमुख प्रवृत्ति के इंसान हैं। उन्होंने बैंक के सभी कर्मचारियों की तारीफ की और कहा कि जब भी समय मिलता है मैं जरूर सभी से गुफ्तगू करने चला आता हूं। शंकर जी को भी मैंने अनुरोध किया कि जब भी उनको वक्त मिले वह जरूर बैंक आएं और अपनी जिंदगी के खट्टे–मीठे अनुभव हमसे शेयर करें और शाखा की ग्राहक सेवा में सुधार के लिए अपने सुझाव भी दें।

मैंने उनके परिवार के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि उनका एक ही बेटा है वह इंजीनियर है और उसकी बहू भी इंजीनियर है। दोनों बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत हैं, एक पोता है जिसमें मैं अपना बचपन खोजता हूं। पत्नी का 10 साल पहले निधन हो गया था, मैं रिटायर्ड हूं और नारद मुनि की तरह डोलता रहता हूँ, कभी बैंक में, तो कभी हाऊसिंग सोसाइटी के ऑफिस में, सुबह–शाम लोगों के साथ पार्क में घूमना और कुछ वक्त मार्केट में विन्डोज शॉपिंग करता। घर के दैनिक जरूरतों के सामान का परचेज मैनेजर हूँ और इस तरह से अपना समय गुजार रहा हूँ। हमारे कर्मचारी शर्मा जी ने बताया कि शंकर नारायण जी ने बहुत से लोगों के खाते हमारे बैंक में खुलवाए हैं और जो भी नए किराएदार या मकान मालिक सोसाइटी में आते हैं उनको हमारे बैंक में ले आते हैं। शंकर जी ने बताया कि उनका हमारे बैंक से संबंध लगभग 50 साल पुराना है। जब वह 10 वर्ष के थे और बेंगलूरु में पढ़ रहे थे तभी उनके पिता जी ने उनका बचत खाता हमारे बैंक में खुलवा दिया था। मुझे उनसे बात करके हैरानी हुई कि वह हमारे बैंक के संस्थापक श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै जी के बारे में भी जानते थे। मुझे शंकर जी से मिलकर बहुत खुशी हुई और उनसे कहा कि आप 50 साल से हमारे बैंक से जुड़े हैं, तो **आप रिश्तों की गोल्डन जुबली वाले ग्राहक हैं।**

मैंने उनसे कहा, ''आप तो हमारे अति विशिष्ट ग्राहकों में से एक हैं।'' मैंने उनसे चाय पीने के लिए अनुरोध किया तो कहने लगे, ''अभी पान खा रहा हूं फिर कभी चाय जरूर पियूंगा, अभी चलता हूं क्योंकि पोते का स्कूल जाने का समय हो गया है।''

शंकर नारायण जी से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। एक ऐसा ग्राहक जो 50 वर्षों से हमारे बैंक से जुड़ा है। शंकर नारायण जी अक्सर हफ्ते में दो–तीन बार बैंक में जरूर आ जाया करते थे या तो वह अपने खाते की जानकारी लेने आते थे या किसी नए ग्राहक को लेकर आ जाते थे। वह अपने कई ऐसे मित्रों को ले आते थे जिनके खाते दूसरे बैंक में थे और वह किसी बैंक की समस्या से जूझ रहे थे। मैं उनको बैंकिंग समस्याओं का हल दे देता था और वह चले जाते थे।

शंकर नारायण जी कहते थे यदि वह बैंक वालों से हफ्ते में एक बार नहीं मिलते हैं तो उनको बेचैनी हो जाती है। तभी मैंने तपाक से कहा, ''सर यदि आप नहीं आते हैं तो हमको भी बेचैनी होती है।''

लेकिन कुछ दिनों से शंकर नारायण जी बैंक नहीं आ रहे थे। यह बात जब मैंने अपने सहकर्मी शर्मा जी से कही तो उन्होंने कहा शायद वह अपने गांव चले गए हो। लेकिन शर्मा जी ने कहा, ''सर वह जब भी कहीं बाहर जाते हैं तो हम लोगों को सूचित करके जाते हैं। शायद कोई इमरजेंसी आ गई हो इसलिए बिना बताए चले गए हों।''

अभी हम शंकर नारायण जी का जिक्र कर ही रहे थे कि तभी उन्होंने बैंक में प्रवेश किया। शंकर जी को देखकर सभी ने जोर से कहा, ''सर आप 100 साल तक जीएंगे। अभी हम सब आपके बारे में ही चर्चा कर रहे थे।'' शंकर जी कहने लगे, ''थिंक आफ डेविल एंड ही इज प्रेजेंट।'' हमने कहा, ''हम आप से सहमत नहीं है, सर आप तो हमारे देवता हैं।''

सभी ने शंकर जी का जोरदार स्वागत किया और उनको गले लगाया। लेकिन शंकर नारायण जी आज कुछ मुरझाए हुए से उदास लग रहे थे। उन्होंने भी सभी का अभिवादन किया लेकिन उनके व्यवहार में और दिनों के मुकाबले गर्म जोशी में कमी थी। मैंने उनको अपने केबिन में बुलाया और चाय पीने का आग्रह किया तो कहने लगे, ''मंगा लो चाय।''

चाय पीते पीते मैंने पूछा, ''शंकर जी आपकी तबीयत तो ठीक है?'' कहने लगे, ''सब ठीक है लेकिन मैंने दिल्ली छोड़कर अपने गांव जाने का फैसला कर लिया है।'' मैंने पूछा, ''ऐसा अचानक क्या हुआ?'' कहने लगे, ''अब यहां रहने का मन नहीं करता। अब मैं अपने गांव में ही रहूंगा।'' मैंने उनसे कहा, ''इस उम्र में अकेले रहना ठीक नहीं है। क्या कोई आपके गांव में है?'' कहने लगे, ''कोई नहीं है।'' मैंने पूछा, ''फिर कैसे आप अपना समय बिताएंगे?'' और पूछा, ''आपने अचानक ऐसा निर्णय क्यों लिया?'' कहने लगे, ''अब मैं अपने बेटे के साथ इस घर में नहीं रह सकता।'' मैंने पूछा, ''क्या बात हुई?'' तो कहने लगे, ''दो हफ्ते पहले मेरे बेटे की कंपनी का एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर घर पर आया था। रविवार का दिन था और मैं धोती पहनकर पूजा घर में पूजा कर रहा था। पूजा समापन के बाद मैं प्रसाद देने ड्राइंग रूम में आया और यह मेरा हर रोज का नियम है। तब उसने अपने एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर से मेरा परिचय कराया। मैंने भी उसको पूजा का प्रसाद दिया। उसके और मेरे बीच में अच्छी गुफ्तगू हुई और उसके बाद मैं अपने कमरे में चला गया। थोड़ी देर बाद रात्रि भोज का समय हुआ तो मेरे पुत्र की बीवी ने भोजन की थाली मेरे कमरे में भिजवा दी और वह सब लोग डाइनिंग टेबल पर खाने लगे। तभी उनके एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर ने कहा कि पिताजी को भी बुलाओ हम सब डाइनिंग टेबल पर खाएंगे। तो मेरे बेटे ने कहा उनको उनके रूम में खाना दे दिया है। लेकिन उसने कहा कि नहीं हम सब एक साथ बैठकर भोजन करेंगे। उनके आग्रह पर मैं भी सब के साथ अपनी थाली लेकर आ गया और डाइनिंग टेबल पर खाने लगा।''

''जब सब खाना डाइनिंग टेबल पर कांटे के चम्मच से खा रहे थे तो मैं अपने हाथों से खाना खा रहा था क्योंकि बचपन से हमको कांटे के चम्मच वाला सिस्टम पसंद नहीं है और वैसे भी खाने का असली मजा तो हाथों से खाने में ही आता है। मैं ऐसे खाना तब से खा रहा हूं जब से मैंने होश संभाला है और मैं कैसे अपनी परंपरा को बुढ़ापा में

दूसरों को सभ्य दिखाने के लिए बदल दूं।''

''जब वह चला गया तो मेरा बेटा मुझसे बहुत नाराज हुआ, झगड़ा करने लगा, कहने लगा कि आपको सभ्य समाज में उठने बैठने की तमीज़ नहीं है। आप मेरे एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर से मिलने लूंगी बनियान में आ गए, तनिक यह भी नहीं सोचा कि कोई बड़ा आदमी घर पर आया है। आप नंगे– पुंगे सामने खड़े हो गए, आपको टेबल मैनर्स नहीं है। हाथ से सपड–सपड कर चावल दाल खा रहे थे। इतने साल दिल्ली में रहते हुए हो गए तब भी आपको कांटा छूरी और चम्मच का उपयोग करना नहीं आया। उसने यह सब मुझे अपनी बीवी के सामने कहा। उस दिन से मैं बहुत दुखी हूँ और सोचता हूँ कि अब मैं इस घर के लिए अनफिट हूँ। मेरा बेटा, जिसके लिए मैंने अपना सर्वस्व त्याग दिया, जिसको मैंने नाजों से पाला, अच्छी शिक्षा देकर इंजीनियर बनाया, वह बुढ़ापे में इस तरह से व्यवहार कर रहा है।'' आज से पहले शंकर नारायण जी को मैंने इस कदर दुखी नहीं देखा था। मैंने शंकर जी को कहा कि आपके पुत्र का उस दिन का व्यवहार आपके प्रति अशोभनीय है। लेकिन आपको इस तरह से इस उम्र में दिल्ली छोड़कर गांव में अकेले रहने का निर्णय ठीक नहीं है।

मैंने कहा, ''आप यह क्यों सोच रहे हैं कि आपका संबंध केवल आपके पुत्र से ही है। हम सब आपके पुत्र समान ही हैं?'' तभी मैंने अपने सभी कर्मचारियों को बुलाया और बताया कि वह दिल्ली छोड़कर अपने गांव लौटना चाहते हैं। सभी कर्मचारी नारायण जी से लिपट गए, कहने लगे कि हम सब आपको जाने नहीं देंगे। मैंने कहा, ''शंकर जी आपकी फैमिली केवल आपका परिवार ही नहीं है, आपकी सोसाइटी के पड़ोसी, बाजार के लोग, आपके सुबह–शाम पार्क में सैर करने वाले मित्र और आपका पोता जो दिन–रात आपके साथ रहता है, जिसमें आप अपना बचपन पाते हैं, इन सब को छोड़कर आप अकेले गांव में रहना चाहते हैं। लेकिन हम आपको कहीं जाने नहीं देंगे।'' मैंने उनको कहा, ''अपने बेटे को थोड़ा वक्त दो उसको जरूर अपनी गलती का एहसास होगा।'' हमारी बातें सुनकर एक खुशी की लहर शंकर जी के चेहरे पर देखी। यह देखते ही हमारे कर्मचारी शर्मा जी कहने लगे, ''शंकर जी अभी जाना मत आपके लिए मैं पान की गिलौरी लेकर आता हूं।'' तभी शंकर जी मीठें पान की गिलौरी लेकर आए पान खाते–खाते शंकर जी से अनुरोध किया कि अब आप उसी हंसमुख अंदाज से हम सब को गुड मॉर्निंग फ्रेंड्स कहें।

एक हफ्ते बाद शंकर जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज में बैंक में एंट्री की और हम सब को संबोधित किया, ''गुड मॉर्निंग फ्रेंड्स आप सब कैसे हैं'' और जोर से कहते हैं, ''मैं कहीं नहीं जा रहा हूं अब ॥ **तेरे संग जीना, तेरे संग मरना है** ॥ यह सुनते ही हम सब शंकर नारायण जी से लिपट गए।

मेरी यादों की गुल्लक से एक किस्सा जिसमें ग्राहक सेवा का मर्म (Beyond Banking a concern) छिपा है।

"Nothing is ever really lost to us as long as we remember it".

– L M Montgomery

A Journey Within

Prithiviraj M
Officer,
Pappakudi Branch

It was a Monday evening, and the path was bustling with a small but steady crowd. No matter how much I tried to hurry, I was inevitably slowed down. After struggling my way through the throng, I finally managed to board my train. It felt that every little thing in my life came with a struggle. When you're already burdened with personal problems, even minor inconveniences feel magnified. Frustration lingered in the back of my mind. As I glanced at my watch-it read 5:43 PM. Had I been just two minutes late, the train would've left without me.

I was drenched in sweat, as though I'd walked through a rainstorm, thanks to Chennai's relentless climate. Thankfully, this was an air-conditioned compartment. I washed my face in the restroom and settled into my seat, grateful for the respite. I had spent the day attending a one-day training session on preventive vigilance, organized by my bank at Chennai. I was heading back home the same evening, wanting to be fresh and ready for work the next day. I couldn't help but feel a twinge of disappointment about missing the chance to explore this magnificent city.

The train departed right on time. Since I was travelling solo I had downloaded a movie to while away my time. Reaching for my bag, I tried to retrieve my Air Pods, only to find the case empty. That's when it hit me-I'd taken them out earlier to listen to music, to keep myself calm while rushing through the railway station. Somewhere between the chaos of boarding and the crowd, I must've dropped them. I hadn't even noticed. I chided myself to be an inattentive person. With no option left to immerse myself in the movie, I was prepared to endure the journey in idleness.

After aimlessly scrolling through my phone, boredom set in. I put it aside and decided to observe my surroundings. Two women who were sitting across me were engaged in deep conversation. One appeared to be from North India, the other from Tamil Nadu. Despite the language barrier, they were enthusiastically trying to communicate. The woman from the North sprinkled her sentences with bits of Tamil, while the Tamil woman made efforts to speak in Hindi. It was endearing to watch them bridge their differences, laughing and enjoying the journey not caring about the world.

Beside me, sat a man who caught my attention. He was towering and well-built, with the physique of an athlete. His face remained expressionless, showing no signs of engagement with anyone around him. He seemed completely at ease in his solitude, absorbed in his own world.

Feeling restless, I decided to take a walk through the coach. The next compartment was alive with laughter and energy. A group of youngsters, likely college friends now working in different cities, had gathered for what seemed to be a planned trip. They were playing dumb charades, and their laughter echoed through the compartment. Their joy was infectious; they looked like the happiest people on the train.

Moving further, I came across an older couple sitting together, speaking in low tones about their upcoming visit to the Rameshwaram temple. They weren't laughing or visibly excited like the youngsters, but their quiet conversation radiated a sense of contentment and fulfilment. There was an aura of peacefulness that embraced them, as if they were carrying years of shared understanding in their silence.

I returned to my seat after taking a brief walk through the train. My mind was already weighed down with an existential crisis, and the scenes I had observed only added to it. Everyone around me seemed content, even joyful. It felt like I was the only one stuck in this loop of unhappiness.

My thoughts spiralled into over thinking. Why can't I talk to God about all this? I mused. If there were a way to connect-like WhatsApp, maybe-I could lay out all my frustrations and seek answers. The idea amused me for a moment. I even pictured myself writing about the encounter later: a surreal story titled "Why Me?" It would explore why God chose to communicate with me, of all people, and what it meant. As my thoughts raced, jumping from one idea to the next, they seemed to outpace the speeding train itself. Before I realized it, I had drifted into a restless sleep, my over thinking fading into the hum of the moving train.

I woke up to the muffled announcement of a station passing by. The train rocked gently as it moved through the night. I checked my phone out of habit-no new messages, just the same screen I'd been scrolling earlier. I sighed and glanced around. The two women sitting across were still chatting, their laughter rising above the hum of the train. I noticed how they leaned toward each other, their faces lit with a shared sense of understanding, despite the language gap. Their joy wasn't about words; it was about connection. It struck me that I'd spent the last few hours envying them instead of appreciating the simplicity of their moment. They weren't caught up in what they lacked or what could go wrong; they lived in the present.

I leaned back, staring at the ceiling of the compartment. I decided to distract myself and took the book I'd packed, a self-help book I had bought months ago but never read. Flipping through its pages, my eyes landed on a passage:

"Life isn't about waiting for struggles to end; it's about learning to navigate through them while finding joy in the journey." I scoffed. Easier said than done. But something about the line lingered, nudging at me.

The train stopped at another station, and I watched as a family boarded-a father carrying a sleeping toddler while the mother balanced snacks and a stuffed bag. The exhaustion was clear on their faces, but so was a quiet determination. The

father's shoulders sagged as he set down their luggage, yet he smiled when the toddler stirred awake, mumbling something incoherent. The mother chuckled softly, and the sight heaved something in me.

I decided to stretch my legs and walked down the aisle again. The group of youngsters were still in full swing, now huddled around a phone, watching something together and bursting into laughter. Their carefree energy was infectious, and for the first time in hours, I felt the corners of my mouth twitch upward. I noticed the old couple sitting silently across the aisle. The man was adjusting his glasses, squinting at something in his hand-a postcard, maybe. The woman leaned over, gently placing her hand on his, and smiled. It was such a small gesture, but it carried a depth of understanding which I couldn't ignore.

As the train sped towards my destination, I let myself reflect on what I'd seen. Everyone seemed to carry their own weight, but they weren't letting it consume them. Maybe their happiness wasn't about the absence of struggles but about finding small moments to savour in between. By the time the train reached my station, my frustration hadn't disappeared entirely, but it felt less overwhelming. Maybe struggles wouldn't vanish overnight, but perhaps they didn't have to define my entire journey. As I tried to exit the train, someone shoved past me, eager to get off first. It was the towering man I had noticed earlier. His wife and four-year-old child were waiting at the station for him. The transformation in his face was striking-his previously stoic expression now a vivid display of every emotion, a perfect blend of joy, love, and relief. It turned out he had just returned from a stint in the army. His family was clearly the happiest group at the station, and it was impossible not to feel a sense of warmth from their reunion.

I stepped onto the platform, and the warm night air wrapped around me like a comforting embrace. As I walked toward the exit, I made a quiet resolution: Tomorrow, I'd focus on the small joys I had been overlooking-the fleeting connections, the simple comforts, and the moments that truly made life worth living.

It seemed like the perfect ending to my day, right? But just as I was about to settle into that thought, my phone rang. It was my mom.

“Thangam,” she said, her voice as loving as always. Thangam-meaning “gold” in Tamil-was a term of endearment many Tamil parents used for their children. “Have you reached your destination?”

Drawing from the reflections of the train ride, I replied, “Ma, it's not about the destination. It's always been about the journey.”

There was a pause on the other end, followed by her confused response. “What happened to you? Are you feeling alright? Come to our hometown if you're not well. I'll make you some healthy food.”

I interrupted her mid-sentence: “Nothing, Ma. I've reached. I'll be home in few minutes. I'll call you when I get there.” I ended the call with a smile, amused by my mom's innocent response. As I walked toward the exit, I couldn't help but smile, grateful for the simple, joyful moments in life.

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ Syndicate

पंजाब यात्रा: गुरु के द्वार में प्रवेश

लीना ज्ञानवानी
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु (दक्षिण)

पंजाब भारत के सबसे आकर्षक और समृद्ध राज्यों में से एक, जिसे सिख धर्म के जन्मस्थान और अधिकांश भारतीय सिखों के घर के रूप में जाना जाता है। यह अपनी उपजाऊ कृषि भूमि और अपनी विशिष्ट और जीवंत संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। शानदार मूंछों वाले, कुर्ता पजामा, पगड़ी पहने लंबे चौड़े पुरूष व पंजाबी सलवार कुर्ती पहनी सुंदर महिलाओं को जानने के लिए यह दुनिया में सबसे अच्छी जगह है। मेरे लिए अमृतसर शब्द ही हमेशा विदेशी शासन की छवि उत्पन्न करता है। फिर भी इस राज्य में एक बेहद सुखद अनुभव है, जहां सेवा मानक भारत के अधिकांश हिस्सों की तुलना में थोड़े बेहतर प्रतीत होते हैं।

1947 में भारत की आज़ादी और पाकिस्तान के जन्म से पंजाब पूरी तरह से बदल गया था। लगभग दस मिलियन लोग विस्थापित हुए , क्योंकि मुसलमान पश्चिम की ओर सीमा पार कर जबकि हिंदू और सिख पूर्व की ओर चले गए , प्रत्येक को अपने नए गृह राष्ट्रों में शरण मिल गई थी। इस हिंसा और प्रवासन के प्रभाव को निश्चित रूप से व्यापक रूप से प्रलेखित किया गया है। इस महत्वपूर्ण विरासत को समझने की कोशिश करने वाले आगंतुकों के लिए, मैं खुशवंत सिंह के क्लासिक उपन्यास ''ट्रेन टू पाकिस्तान'' की दृढ़ता से अनुशंसा करूंगी, जो भारत–पाकिस्तान सीमांत गांव मानो माजरा पर इसके प्रभाव के माध्यम से व्यापक संदर्भ की कहानी बताता है।

पंजाब घूमने का श्रेष्ठतम समय व पहुंचने के साधन

सतरंगी टरबन के दृश्य वाले राज्य को अनुभव करने का श्रेष्ठतम समय है फरवरी से अप्रैल व सितम्बर से नवंबर तक। पंजाब पहुंचने के लिए दो एयरपोर्ट हैं चंडीगढ़ व अमृतसर – भारत की सभी प्रमुख शहरों से यहां के लिए आसानी से एयरलाइन के द्वारा पहुंचा जा सकता है। रेलमार्ग से भी पंजाब के प्रमुख शहर जैसे चंडीगढ, अमृतसर, लुधियाना, जालंधर, पठानकोट आदि कई महत्वपूर्ण स्थानों से पहुंचा जा सकता है। सड़क मार्ग द्वारा भी अत्यंत सुगम राष्ट्रीय मार्ग व ग्रांड ट्रंक रोड जिससे उत्तर व पूर्व के प्रमुख स्थानों से आसानी से पंजाब पहुंचा जा सकता है।

हम पिछले वर्ष अक्तूबर माह में परिवार संग 5 लोग सड़क मार्ग द्वारा दिल्ली से पटियाला के निकले जहां हम गोल्डन ट्यूलिप होटल में रूके व रात्रि विश्राम कर सुबह निकले पंजाब राज्य की सैर पर।

पंजाब में घूमने के लिए प्रसिद्ध स्थान

शाही वंश का शहर– पटियाला

दिल्ली से पटियाला का सफर 260 किमी व लगभग 5.5 घंटे का है। सुबह का नाश्ता कर सड़क मार्ग से हमने पटियाला की यात्रा आरंभ की। आगमन पर, हेरिटेज होटल में चेक इन किया। उस दिन हमने 1876 में निर्मित, एक विशाल बगीचे में स्थित सफेद, स्तंभयुक्त इमारत, का दर्शन किया जो कभी पटियाला के शाही परिवार का निवास स्थान था। बाकी दिन आराम करने

के लिए हम स्वतंत्र थे। सुबह दर्शनीय स्थलों की यात्रा, जो किला मुबारक से शुरू की और काली देवी मंदिर पर अपना दौरा समाप्त किया।

पेरिस ऑफ पंजाब– कपूरथला

अगले दिन मूड–ताज़ा कर सुबह के नाश्ते के बाद, पेरिस ऑफ पंजाब कपूरथला के लिए प्रस्थान किया। पटियाला से कपूरथला की दूरी 175 किमी है जिसमें लगभग 3.5 घंटे का समय लगता है। आगमन पर प्रसिद्ध जगजीत पैलेस का दौरा किया। पूरा महल फ्रांसीसी वास्तुकला की अवधारणा पर बनाया गया है। इसके बाद दरबार हॉल, मूरिश मस्जिद, शालिमार गार्डन और कंजली वेटलेंड्स का दौरा किया। कपूरथला की यह यात्रा अविस्मरणीय थी।

शांति, विश्वास और श्रद्धा का द्वार– अमृतसर स्वर्ण मंदिर

कपूरथला से अमृतसर की दूरी 70 किमी है जिसमें हमें 1.5 घंटे का समय लगा, वह एक सुखद सुबह थी और होटल में चेक इन करने के बाद हमने सीधे प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर जाने का फैसला किया। वहां पहुंचने में लगभग 10 मिनट लगे। अचानक परिदृश्य बदल गया था, पगड़ी पहने सैकड़ों सिख श्रद्धालु और पर्यटक स्वर्ण मंदिर की ओर जाने वाली संकरी गलियों में उमड़ पड़े। पवित्र पूजा स्थल के प्रति सम्मान के संकेत के रूप में स्वर्ण मंदिर के परिसर में सभी को अपना सर स्कार्फ या रुमाल से ढंकना होता हैं। मंदिर, विशाल गुरुद्वारा परिसर का एक हिस्सा है जिसे हरमंदिर साहिब के नाम से जाना जाता है। मंदिर के चारों ओर एक विशाल जल निकाय है जिसे 'अमृत सरोवर' के नाम से जाना जाता है, जहां कई तीर्थयात्री और भक्त पवित्र स्नान करते हैं। हम सरोवर के पास फर्श पर बैठ गए, पवित्र जल में चमकते मंदिर के प्रतिबिंब को देखकर चकित रह गए। इस गुरुद्वारे में भी लंगर चलता है जो हर दिन हजारों भक्तों को मुफ्त भोजन परोसता है। हमनें जी भर कर स्वादिष्ट भोजन खाया। गुरुद्वारे में आगंतुकों और यात्रियों को आवास भी प्रदान करते हैं।

भावनाओं का उफान– जलियावाला बाग

हमने पैदल घूम कर शहर को देखने का फैसला किया। हमारा अगला पड़ाव जलियांवाला बाग था, जो स्वर्ण मंदिर से 1.3 किमी दूर पर है। मानचित्र का अनुसरण करते हुए और लगभग 7–8 मिनट तक चलते हुए हम पार्क के गेट पर पहुँच गए जहाँ एक दुखद ऐतिहासिक घटना घटी थी। भारतीय स्वतंत्रता की ऐतिहासिक घटना, 1919 का जलियांवाला बाग नरसंहार इसी स्थान पर हुआ था। विद्रोही सभा का संदेह होने पर जनरल डायर ने ब्रिटिश सेना के सैनिकों को निहत्थे पुरुषों, महिलाओं और बच्चों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया। स्कूल के इतिहास के पाठों को याद करते हुए और दिल दहला देने वाली भावना से अभिभूत होकर, हम पार्क के चारों ओर चुपचाप घूमते रहे, शहीदों की स्मारकें और गोलियों के निशान वाली दीवारों को देखते रहे और घटना की प्रदर्शित विस्तृत जानकारी पढ़ते रहे।

देशभक्ति से भावना परिपूर्ण – भारत पाकिस्तान वाघा बॉर्डर

हमने जलियांवाला बाग से 35 किमी दूर वाघा बॉर्डर तक टैक्सी ली। वहां तक पहुंचने में करीब एक घंटा लग गया। सलाह दी जाती है कि दोपहर 3.30 बजे तक पहुंचें क्योंकि इस स्थान पर हर दिन हजारों पर्यटक आते हैं। हम भारत–पाक सीमा और सूर्यास्त के समय होने वाले 'बीटिंग रिट्रीट' समारोह को देखने के लिए उत्साहित और उत्सुक थे, जिसके बारे में हमने बहुत कुछ सुना था।

वाघा बॉर्डर पाकिस्तान के लाहौर से सिर्फ 29 किमी दूर है और समारोह में दोनों देशों के पर्यटक मौजूद थे। सभी में बहुत उत्साह होता है जो आपको गर्व और देशभक्ति से भर देता है। सूर्यास्त से ठीक पहले सीमा के द्वार खोल दिए जाते हैं। फिर दोनों तरफ के झंडों को नीचे उतारकर मोड़ दिया जाता है।

"द सिटी ब्यूटीफुल" – चंडीगढ़

अगले दिन यात्रा को आगे बढ़ाते हुए हम निकल जाते है चंडीगढ़ के लिए जिसकी दूरी लगभग 230 किमी थी व 4.5 घंटे का समय लग गया। आधुनिकता के जनक ली कोर्बुज़िए की रचना, चंडीगढ़ एक पूर्णतः नियोजित शहर है। दोपहर में दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर विस्तृत बुलेवार्ड, बड़े से पार्क और चतुर्भुजों के आसपास ड्राइव करने से आपको ले कोर्बुसीयर की परियोजना का एहसास होगा। नेक चंद रॉक गार्डन को भी देखा। इसमें चट्टानों, कंक्रीट और शहरी कचरे से बनाई गई कई हजार मूर्तियां शामिल हैं, जो बड़े मोज़ेक आंगन में स्थापित हैं, जो दीवार वाले रास्तों, पुलों और सुरंगों से जुड़ी हुई हैं और इसमें आपस में जुड़े झरनों की एक श्रृंखला भी शामिल है। यात्रा के अंतिम स्थान के अभूतपूर्ण दर्शन कर हम पहुंच जाते है वापस दिल वालों के शहर दिल्ली में।

हमारी पंजाब यात्रा का गुप्त रहस्य – पंजाबी व्यंजन

एक पंजाबी कहावत है, सबसे अच्छा खाना घर पर नहीं बनता, बल्कि सड़कों पर मिलता है। स्वर्ण मंदिर के पास ऐतिहासिक केंद्र की खोज में आपको कई रेस्तरां मिलेंगे। यहां हमारे कुछ पसंदीदा पंजाबी व्यंजनों की जानकारी है।

मक्के दी रोटी – यह रोटी मक्के के आटे से बनाई जाती है और तवे पर पकायी जाती है। बाद में, इसे पंजाबी मक्खन में लपेटा जाता है... बहुत सारा मक्खन, मक्के दी रोटी आपको ज्यादातर जगहों पर परोसी जाएगी और पंजाब में लगभग हर जगह इसे खाया जाता है।

पंजाबी बटर चिकन – वैसे तो बटर चिकन लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध भारतीय व्यंजन है, लेकिन पंजाबी स्टाइल अधिक स्वादिष्ट और समृद्ध है। वे तंदूर चिकन को सीधे ग्रिल से मलाईदार सॉस में डालकर और पनीर से भरी रोटी के साथ परोसते हैं... हाँ, यह बेहद स्वादिष्ट होता है।

छोले भटूरे – छोले एक मसालेदार चना व्यंजन है जिसमें प्याज और हरा धनिया डाला जाता है। जबकि भटूरे एक तली हुई पूड़ी की तरह है जो इसके साथ दिए जाते हैं। यह एक बहुत ही लोकप्रिय स्ट्रीट फूड व्यंजन है; हर पंजाबी की अपनी ही राय है कि सबसे अच्छा यह व्यंजन कहां मिलता है।

साडा पिंड – पंजाब में त्यौहार

यदि पंजाबी भावना का वर्णन करने का कोई एक तरीका है, तो यह राज्य के उत्सवों में परिलक्षित होता है। कृषि, राज्य का प्राथमिक व्यवसाय है, बहुत सारे त्योहार कृषि केंद्रित हैं। बैसाखी और लोहड़ी पंजाब के फसल उत्सव हैं। बसंत पंचमी पंजाब का एक और प्रसिद्ध त्यौहार है। यहां के गाँव की शुद्ध हवा, चहकते हुए पक्षी की आवाजें, ताज़ा खान पान आपको यहां की हवाओं में बहा ले जाएगा। फिल्मों में देखे गए दृश्य जो सरसों के खेत में दिखाए जाते हैं वह पंजाब ही है।

भांगड़ा की ऊर्जा लिए पंजाब की संस्कृति

पंजाबियों की संस्कृति, उनके पहनावे, नृत्य, संगीत और वास्तुकला में झलकती है और यह लोगों की तरह ही समृद्ध और जीवंत है। नृत्य शैली के रूप में भांगड़ा एक थके हुए व्यक्ति के लिए ऊर्जा बढ़ाने जैसा है। फुलकारी, पिढ़ी, जूतियां, दुरियां और परांदी पंजाब के कुछ प्रसिद्ध हस्तशिल्प हैं। हमारी पंजाब यात्रा इन्हीं सुखद यादों को साथ लेकर वापस अपने गंतव्य की ओर चल पड़ी।

पंजाब एक कृषि भूमि, पॉच नदियों की भूमि व देशभक्ति से परिपूर्ण भूमि है जहां स्वर्ण मंदिर के साथ वाघा बॉर्डर का एक असाधारण दृश्य अवश्य देखने योग्य स्थान है। इस अभूतपूर्ण यात्रा के कई अविस्मरणीय दृश्यों को, यादों को जहन में कैद किए हमनें यात्रा का समापन किया।

*****

Punjabi common phrases

1.	Hello	- Sat sri akaal
2.	How are you?	- Tussi kiwen ho?/Ki haal nay?
3.	I am Fine.	- Main theek haan
4.	What is your name?	- Tuhada naan ki hai?
5.	My name is	- Mera naan haga .....

Navigating Financial Recovery: An Effective Intersection of Legal and Soft Skill Strategy

Dr. Manish Kumar
Deputy General Manager
Legal Section, RLFP Wing

Introduction

The financial sector, particularly PSBs, plays a critical role in sustaining economic growth and ensuring monetary stability. However, with the rising incidence of Non-Performing Assets (NPAs), the financial health of banks has been severely impacted. The gross NPAs of Indian PSBs stood at approximately 5.53% of their total advances as of March 2023, amounting to nearly ₹6.9 trillion. This ratio has declined marginally 3.09 % in March 2024 and to 3.12% in Sep-24 amounting to ₹3.16 trillion thus substantially reducing from a peak of 14.58%. (As per Financial Report Posted On: 12 DEC 2024 by PIB Delhi). Though there has been some decline due to policy interventions, the ratio remains high compared to global standards.

In this context, a dual approach - integrating robust legal frameworks with refined negotiation and soft skills-has emerged as an effective strategy for financial recovery.

Understanding Financial Recovery

Financial recovery refers to the process of resolving distressed assets to restore liquidity, profitability, and operational efficiency in financial institutions. The complexity of recovering distressed loans requires a multi-faceted approach, balancing legal enforcement with the art of negotiation and banker- customer relationship management. The recovery process of Banks in comprehensive of many challenges which can be broadly categorized into legal, operational, borrower-related and structural.

1. Legal and Regulatory Challenges

Recovery efforts often face delays due to prolonged legal proceedings in Courts or Tribunals like the Civil Courts, Debt Recovery Tribunals (DRTs) or National Company Law Tribunals (NCLTs). Borrowers exploit legal loopholes, and recovery orders are frequently stalled by introducing various legal complexities. While frameworks like the SARFAESI Act and Insolvency and Bankruptcy Code (IBC) exist, their implementation is hampered by backlogs of cases and inefficiencies with the procedural compliances. The IBC, though promising, is still evolving and often leads to liquidation instead of resolution, resulting in significant losses for lenders.

2. Operational Challenges

Banks face inefficiencies in their recovery mechanisms due to inadequate skilled personnel and lack of standardized processes. Valuation issues, such as overvaluation or deterioration of collateral assets, further reduce recovery potential. Delays in enforcing judgments and selling seized assets further enhances the problem.

3. Borrower-Related Challenges

Wilful defaults by borrowers, asset diversion,

and lack of cooperation significantly hinder recovery. Fraudulent practices, such as hiding assets or transferring them to third parties, complicate enforcement. Borrowers from financially stressed industries or sectors, like Infrastructure, Real estate or agriculture, face genuine repayment challenges owing to frequent changes in economic policies, adding to NPAs. Aggressive recovery efforts, particularly against small borrowers, often lead to public backlash and political interference. Loan waivers and moratoriums announced for political reasons discourage repayment and create a culture of dependency.

4. **Structural Challenges in Financial Institutions**
Absence of a robust loan monitoring system delay the identification of stressed accounts, making recovery efforts less effective. Inadequate borrower data and fragmented financial records impede accurate assessment of recovery potential. Political and bureaucratic interference in loan sanctioning and recovery processes further complicates efforts.

Legal Frameworks for Financial Recovery

The legal framework for financial recovery in India is robust, encompassing several acts and mechanisms to address NPA loans.

1. **The SARFAESI Act, 2002:** This act allows banks to recover loans by seizing and selling assets without requiring court intervention. It facilitates asset reconstruction through Asset Reconstruction Companies (ARCs) and empowers secured creditors to take possession of assets and auctioning it off, enabling an expedited recovery process.

2. **Insolvency and Bankruptcy Code (IBC), 2016:** The IBC was enacted by Govt. of India on 28th May 2016. It was a game changer in the recovery process as it brought out a time-bound mechanism for resolving corporate insolvency under the functional jurisdiction of NCLTs and NCLATs, focusing on maximizing the value of distressed assets. It promotes a creditor-driven recovery process, with Insolvency Professionals (IPs) overseeing proceedings, ensuring transparency and efficiency.

3. **Debt Recovery Tribunals (DRTs):** The Debts Recovery Tribunals (DRTs) and Debts Recovery Appellate Tribunals (DRATs) were the first formal legal setup dedicated to recovery of debts due to Banks and FIs and were established under the Recovery of Debts and Bankruptcy Act (RDB Act), 1993. Presently there are 39 DRTs and 5 DRATs across India. DRTs specialize in handling cases of loan defaults above ₹20 lakh.

4. **Permanent Lok Adalat (PLA):** PLAs held under Section 22-B of the Legal Services Authorities Act, 1987 offer an alternative dispute resolution mechanism, emphasizing amicable settlements in a cost-effective and timely manner having jurisdiction upto ₹ One (1) Crore. Further, the Award of the PLA is final and binding on all the parties. This pre-litigation tool fosters cooperation between parties and avoids prolonged litigation.

5. **Other Mechanisms:** Lok Adalat sessions conducted periodically provide platforms for banks and borrowers to negotiate settlements. The Legal Services Authorities conducts 4 National Lok Adalats every year. These Adalats

are very effective way for recovery of bad loans, more particularly the small value loans through One-Time Settlement (OTS) schemes which enable borrowers to clear their dues by paying a reduced amount in a single payment or multiple repayment schedule, resolving NPAs efficiently.

The Role of Soft Skills in Financial Recovery

While legal frameworks provide structure and enforceability, the role of soft skills cannot be overstated in financial recovery. For banks, negotiation for settlement is one of the most critical areas where soft skills come into play, especially in the context of banks working with customers to resolve debts or financial issues. Negotiation skills can help banks and customers reach mutually agreeable solutions that provide financial relief to the customer while also protecting the bank's interests.

Empathy: When bank representatives approach negotiations with empathy, they are able to understand and acknowledge the emotional and financial challenges customers face. This understanding helps in building trust and rapport, making it easier for customers to open up about their financial difficulties. Customers who feel heard and understood are more likely to cooperate and work toward a viable solution. Active listening is also a key element of empathy, ensuring that the bank fully understands the customer's situation before proposing a settlement.

Clear and transparent communication: It is important for bank representatives to explain all available options clearly-whether it's restructuring debt, reducing interest rates, or extending repayment terms. By providing full information, representatives help customers make informed decisions about their financial future. Setting realistic expectations and being transparent about the limits of what the bank can offer also helps avoid misunderstandings during the negotiation process.

Problem-solving and creativity: Negotiators need to find creative ways to restructure debt or offer alternative repayment terms that suit both the customer's financial reality and the bank's interests. For example, a reduced lump-sum payment, an extended repayment period, or a temporary forbearance might be viable options.

Patience, resilience and goal-oriented focus: Financial recovery can be a lengthy process, and negotiators must be prepared to engage in multiple discussions. Customers may need time to assess their options additionally, financial negotiations often involve setbacks or prolonged negotiations. Bank representatives must remain resilient, maintaining a positive attitude and pushing forward, even when the process seems slow or challenging. While the ultimate aim is to reach a settlement, bank representatives must stay focused on addressing the most critical aspects, such as repayment schedules, interest rates, and debt amounts.

Conflict resolution: In cases where negotiations become tense or disagreements arise, conflict resolution skills are critical. Customers may feel that the terms offered are insufficient or unfair, and without proper conflict management, negotiations could break down. Bank representatives must use de-escalation techniques, such as staying calm, acknowledging the customer's concerns, and finding ways to address their objections without compromising the settlement.

Time management skills: While thorough discussions are important, time management ensures that settlements are reached in a reasonable timeframe, preventing unnecessary delays. Negotiators must be able to balance multiple cases effectively, ensuring that all customers receive the attention they deserve while keeping the process moving forward.

Integrating legal mechanisms and soft skill strategies in various phases of Recovery:

1. **Pre-Litigation Phase :** In the pre-litigation phase, soft skills play a vital role in engaging borrowers before the situation escalates to legal proceedings. Effective communication, empathy, and persuasion are crucial in initiating dialogue and building a relationship with borrowers.

   One strategy often employed is the **Permanent Lok Adalat**, a legal tool that allows for the amicable settlement of disputes without the need for formal court proceedings. This method relies heavily on mediation, where negotiators use soft skills like active listening and problem-solving to bridge gaps between the borrower and the lender.

   Additionally, encouraging borrowers to opt for **One-Time Settlement (OTS)** schemes can be an effective strategy. Here, the role of soft skills in persuasion and negotiation is essential, as the lender must encourage the borrower to accept the offer, emphasizing the long-term benefits and financial relief.

2. **Litigation Phase :** If negotiations fail, legal mechanisms take center stage during the litigation phase. Legal frameworks such as **Civil Suits, DRT, SARFAESI** (Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act) and **IBC** (Insolvency and Bankruptcy Code) are used to enforce recovery. These laws provide banks and financial institutions with the legal backing to initiate proceedings and secure their interests through asset repossession or insolvency proceedings.

   However, even in litigation, soft skills remain important. Communication becomes essential in keeping the borrower informed about the proceedings. Legal representatives must explain the legal process clearly and in simple terms to ensure that the borrower understands their options and the potential consequences. By doing so, the institution can help prevent misunderstandings, reduce anxiety, and mitigate the risk of an adversarial escalation that could complicate the legal process.

3. **Post-Litigation Phase :** Once a settlement is reached or legal actions have been concluded, the post-litigation phase focuses on ensuring compliance with the terms of the settlement or court ruling. At this stage, the integration of legal actions with ongoing dialogue becomes critical. Continued communication helps to monitor the borrower's adherence to the agreement and resolves any further issues that may arise.

   Emotional intelligence plays an important role particularly in rebuilding trust and maintaining a positive relationship with the borrower.

Case Studies: Application of Combined Strategies- two scenarios

1. **Case Study 1: Bhushan Steel Limited (2017) – IBC and Resolution Plan**

   Bhushan Steel, a large steel manufacturer,

faced significant financial difficulties and defaulted on loans due to mismanagement and industry downturns. The creditors, led by SBI, initiated proceedings by filing C.P.No. (IB)-201 (PB)/2017 against Bhushan Steel Ltd. under the Insolvency and Bankruptcy Code (IBC) before NCLT, New Delhi. The NCLT appointed a Resolution Professional to manage the proceedings. The total claim received during the process was ₹56080 cr. from 53 FIs, ₹2846.52 cr from 751 operation creditors and ₹ 0.22 Cr. from other creditors. The RP (Resolution Professional) invited Resolution Plans in respect of CD (Corporate Debtor). There were total 17 Prospective Resolution Applicants and finally three (3) Resolution Plan were received before the final deadline.

While the legal proceedings were critical, soft skills were instrumental in managing stakeholder expectations. During the 9th CoC Meeting Tata Steel Limited (TSL) was notified as the H1 Resolution Applicant. After a series of negotiation and intertwined with hearings before Courts and Tribunal the resolution process culminated in a successful bid from the Tata Steel group, which acquired Bhushan Steel through the IBC process.

This not only ensured the recovery of a significant portion of the debt but also safeguarded the company's workforce and continued operations. The success of the resolution highlighted the effective integration of legal tools and soft skills in a high-stakes corporate recovery process.

2. **Case Study 2 :** Jet Airways, once a leading Indian airline, entered insolvency under the Insolvency and Bankruptcy Code (IBC) in 2019 due to financial distress and mounting debt. The creditors, led by SBI, initiated IBC proceedings by filing C.P. 2205 (IB)/(MB)/2019 The National Company Law Tribunal (NCLT) admitted the case, initiating the resolution process. A consortium led by Kalrock Capital and Murari Lal Jalan emerged as the successful bidder in 2021. However, delays in operational revival highlight challenges in IBC, including lengthy proceedings and regulatory complexities, underscoring the need for timely resolution to preserve stakeholder interests.

As of November 7, 2024, the Supreme Court of India has ordered the liquidation of Jet Airways after the Jalan Kalrock Consortium, the winning bidder, failed to meet its financial obligations under the resolution plan. This decision leaves shareholders, including approximately 1,43,000 retail investors, facing potential losses as the airline's assets are sold to settle debts. Consequently, Jet Airways remains non-operational, and its assets are set to be liquidated to satisfy creditor claims.

Conclusion

The integration of legal strategies and soft skills creates a balanced and effective approach to financial recovery. Legal mechanisms ensure that recovery efforts are concert with regulations and laws, while soft skills foster positive relationships, communication, and trust. By combining the two, financial institutions can navigate the complexities of financial recovery more effectively, ensuring that both legal obligations and human concerns are addressed, leading to better long-term outcomes for all parties involved.

*****

Selling Dreams: Insights from a Life in Advertising and Media

Atul Bhushan
Manager
Regional Office, Madikeri

On a rainy morning nearly a decade ago, I watched in awe as the entire ad agency folks glued themselves into the pages of every newspaper delivered to the office hoping to be inspired to get the next best idea for the creative briefs at hand. And that's how started my journey in the creative and ever-dynamic world of advertising and media – my first day as a full time Copywriter.

Yes, the management books and videos delve into the 4 or 7 Ps of Marketing Mix, but I'll delve into an element from my previous professional experience – Promotion – wherein I've had the opportunity to work with various brands – brands no one had heard of at the time, brands which were coming up as well as brands which every agency aspired to onboard.

My first day which I talked about above was during the nascent stage of startup-culture in Bengaluru in 2014. Phrases from founders such as disrupting the market, changing the status quo, decoding customer behaviour, dethroning the legacy brands etc. merged with our advertising world of breaking the internet, cracking the idea, tapping into pop culture, viral hashtags, meme fest etc.

Public Relations – To build trust

One constant thing the startups at pre-seed stage as well as Series-D funded stage looked at, and still do, seriously was the game of PR i.e. Public Relations. Articles written by PR Agencies do not feel as an 'on-your-face ad' to the readers. It's mostly educational or a never-seen-before-idea or CSR-ish in outlook, reading which the readers' mind is piqued with curiosity and top of the mind recall is attained at a small, floating-thoughts level. PR articles also complement other activities – some of the most popular ideas being donations, green initiatives, marathon etc. In the last couple of years, companies are adopting a new framework by focussing on Environmental, Social and Governance (ESG) impacts. And this framework is being taken up seriously by big corporations as they rush to get the sustainability tag which these days also impact their market value.

ATL Marketing – To increase brand awareness

Now coming to another communication aspect of Marketing – Advertising. Let's recall and understand some of the biggest recallable campaigns of ATL (Above The Line) marketing which focuses on mass media promotion to reach a large audience. This includes mediums such as television, radio, print media such as newspaper and magazines and billboards.

Television

Washing powder Nirma, asli masale sach sach, doodh doodh doodh doodh piyo glass full doodh, Vicco turmeric nahi cosmetic, aaya naya ujala, aaya mausam thande thande dermicool ka, saundarya sabun nirma, humara bajaj... Didn't we all hum at least a couple of them while reading this? Advertising has come a long way from the jingle era of the 90s when companies and ad agencies were still trying to figure out the visual world of cable TV while mastering the jingle game for radio. Which is why most of the 90s ads were jingles – straight out of radio to be played on TV with compelling visuals.

This era was then followed by jingles specific to TV such as school time action ka school time, the healthy oil for healthy people, kush kaas hai, har ek friend zaroori hota hai, dil maange more, oo la la la la le o, blackberry boys etc. And then iconic non-jingle ad campaigns like dimag ki batti jala de, dag achhe hai, dar ke aage jeet hai, kuch meetha ho jaye, fevicol bus ad etc.

Radio

Radio has always been stigmatized as outdated and antiquated. Some media buyers focus instead on emerging and often unproven platforms. However, the fact remains that radio ads are unskippable, unblockable and unbeatable, helping businesses reach out to new customers. Radio as a medium is very localised and personalised to a city. And every station has created its own niche. If a station is into contemporary music, the other one is into retro, if one is into English songs then one will be regional. Companies can target listeners based on such niches. When I was working in Big FM which used to play retro songs, our listeners were usually retired citizens, housewives, small shops and auto drivers. Whereas Radio Mirchi would play contemporary Hindi and Kannada songs attracting listeners in the form of college students, employees commuting to and from office, big department stores etc. So when clients would give advertising briefs specific for radio, each radio station would come up with a campaign idea that resonates with their listeners. Does any other mass media boast of such specific local niche? Sort of...

Out of Home (OOH)

This brings us to billboards or OOH or hoardings as they're called. A medium utilised by movies, sports, entertainment and financial services. Another prolific user of the traditional hoarding advertising in India is the OTT segment. Netflix, Amazon Prime, ALTT, Hotstar and others tend to spend a fortune in order to promote their recent launches. Billboards across the busy streets of major metros, as well as in airports, malls, bus stops, etc., often highlight what's new on the streaming platforms. Quite ironic to think that a digital-first platform like OTT has OOH playing a crucial role in the overall promotion mix.

When Star India was planning to launch Star Sports 1 Kannada and had approached us at Big FM for its launch campaign back in 2018, they were equally bullish on running an all-out city wide billboard campaign in Bengaluru with common messaging in both the mediums. However, no one was more ingenious than Dunzo which chose five pin codes - locations where it had witnessed both emerging demand and a potential new demographic for its local delivery campaign.

Of course, now this medium has advanced to video billboards, anamorphic OOH using 3D technology etc.

Print

This brings us to the last medium of ATL marketing – the print medium. A medium so unfortunate that it's always snubbed to be on its last legs. But yet like Undertaker, it keeps on rising from the critics' ashes and comes up with the bang. When I had visited Amazon in the Bengaluru's World Trade Centre, in connection with a mandate for Amazon Great Indian Sale 2017, out of curiosity we asked the head of the publicity team if newspapers were really worth the cost. She proclaimed, to our astonishment, that they would witness the highest downloads only on those days which had a full front page newspaper ad for the brand. No wonder on a particular year all three – Flipkart, Amazon and Snapdeal had booked each of the first three pages of Times of India during one of their festive sales, again showing digital-first platforms relying on the so-called dead medium for market penetration.

BTL Marketing – To drive specific actions

Below the Line (BTL) marketing constitutes

campaigns and promotions which are highly targeted to specific prospects. Telemarketing, events, brand activations in malls etc. SMEs rely on this since it is more pocket friendly and measurable in the form of campaign attributed sales conversions. One of our clients Rapido, during their initial days when their wallet was pretty much light, would hire students for part-time gigs to distribute pamphlets for non-referral app downloads in malls of Bengaluru. This activity would be complemented by Radio Jockeys entertaining the crowd whilst doing brand promotion. Even the fat wallet FMCG giant ITC, when launching the hitherto unheard flavours such as Kinnow, Bael and Phalsa under its B Natural brand of juices, mandated supermarket and mall activations through radio jockeys offering free samples. This also worked as two-way communication to take customer feedback.

TTL Marketing – Best of both worlds

Digital marketing has blurred the lines between ATL and BTL marketing. Through the Line (TTL) marketing as it's called ensures large mediums are utilised (ATL) while retaining focus on conversion (BTL). The new age brands are becoming masters of this. Their mass medium being search ads, Search Engine Optimisation (SEO), banner ads on websites, YouTube ads, audio ads, content marketing in the form of blog posts, or being projected as a thought leader on online forums etc. By integrating a strong CTA (Call to Action) they aim for measurable actions such as site visits, page views, social shares, referral downloads etc.

Conclusion – Ubiquity is the new exclusivity

Though Public-Sector Banks have been around for decades, their biggest challenge today is to reach out to the youth. The younger demographics now being more prominent, PSBs can't afford to lose out. PSBs need to focus on a targeted segment rather than following the age-old 'feel good' campaigns. For the youth, it does not matter how old the bank is. PSBs cannot raise their customer base through 'Who am I?' campaigns but rather have to focus more on 'Why Me?' campaigns.

With the advent of technology, the decision (to choose a certain bank) is no longer based on factors like the bank's legacy or location. The decision is driven by the banks' brand perception. Private banks look glitzy, fancy and attractive. Not everyone can say the same for PSBs, even though they have equally top-notch youth-centric products.

Now as far as the campaign idea is concerned, nostalgia seems to be a run-away success theme. Popularised by Paper Boat, it was Cred which showed that to attract the youth the face of the brand need not be youth. By bringing in the household names of the 90s, the impressionable age of today's millennials, Cred managed to hit the right chord with its target group and itself became a household name in a jiffy through its ATL marketing campaign.

Fortunately, most of the PSBs have their presence in all the traditional mediums for ATL marketing. What needs to be doubled down on is the digital presence. PSBs should take a leaf out of the books of Neo Banks and Payment Banks. Within a short span, most of the youngsters know their names thanks to their finfluencer marketing, inbound marketing through blogs and content marketing on YouTube and Instagram. That's where the youth is.

No organisation can rely only on one medium expecting to reach the depths of people's minds for business. Every medium has got its own audience, not necessarily overlapping with other mediums. Advertisers have to be everywhere because consumers' viewing and reading habits are scattered, and advertisers need to reach them at every turn. For a bank with its plethora of offerings, all aimed at various demographics, being everywhere with targeted campaigns is a must.

As most of the 360° marketing agencies advice clients, ubiquity is the new exclusivity.

****

Lohri: A Night of Joy and Togetherness

Rohit Kumar
Officer
Karim Nagar II Branch

When Punjab lights up in vibrant hues,
And fields sway under skies so blue,
Lohri arrives with its joyful cheer,
A celebration of love, warmth, and togetherness here.

Families gather, neighbors join in,
Dressed in bright colors, with happy grins.
The bonfire burns, the night feels right,
Lohri is here, a joyful sight.

Til and Gud are passed with care,
Sweet little treats we all can share.
Sarson ka saag, makki di roti,
Home-cooked love in every bite, hearty and roasty.

The dhol starts playing, a call to the floor,
Laughter and Bhangra—who needs more?
Young and old, they join the song,
Clapping hands and dancing along.

Women shine in Phulkaris bright,
Men in turbans, a regal sight.
It's not just how they dress or stand,
It's the warmth they carry that makes it grand.

Lohri isn't just about one place,
It's about love that time can't erase.
In a land of so many cultures to see,
Punjab stands tall, wild, and free.

They live for now, they laugh out loud,
They know how to lift the heaviest cloud.
With dance and music, their spirits soar,
Spreading happiness forever more.

So when the fire burns and stories are told,
When songs are sung, and hands aren't cold,
Remember Lohri is more than a day.

Canara Centre of Excellence (CCoE)

Canara Centre of Excellence in Bagaluru, Bengaluru, was inaugurated virtually by Smt. Nirmala Sitharaman, Hon'ble Union Minister of Finance and Corporate Affairs, Government of India. The event took place in the presence of Sri Jitan Ram Manjhi, Hon'ble Union Minister for MSME, Government of India; Sri Pankaj Chaudhary, Hon'ble Union Minister of State for Finance; Smt Shobha Karandlaje, Hon'ble Union Minister of State for MSME, Government of India; and Sri M. Nagaraju, Secretary, Ministry of Finance, Government of India.

Lead District Manager's Annual Conference for FY 2024-25 was organised on 9.12.2024 at Canara Centre of Excellence, Bagaluru. Sri Bhavendra Kumar, ED, Inaugurated the Conference. Sri K J Srikanth, CGM, LB & FI Wing, Sri. M. Bhaskara Chakravarthy GM, LB & FI Wing, Sri. B. Parshwanath, DGM, LB & FI Wing, Sri. Rajeev Kumar Sinha, AGM, CCoE, Executives from LB & FI Wing, officials from LB & FI Wing and LDMs were present for the Inauguration. Shri. K. J. Srikanth, CGM LB & FI Wing highlighted the Corporate Expectation from all the Lead District Managers and urged them to contribute maximally. MD & CEO Sri. Satyanarayana Raju, addressed all the LDMs through video conference, highlighted the role and position of LDMs at the District level and their proximity to the District Administration.

Prathibhanveshane, an annual state level cultural program of Snehadeep Trust was conducted on 11th and 12th January 2025. Around 500 visually impaired students across Karnataka participated in Singing, Dancing, Instrument playing and Mimicry. Ex Chief Minister & Current Member of Parliament Sri Basavaraj Bommai, Sri. Dinesh Gundu Rao, Health Minister Government of Karnataka were the Chief Guests. Sri. Rajiv Kumar Sinha, AGM, CCoE, Bagalur, was the Guest of Honor, along with Dr. Paul Mudda Managing trustee of Snehadeep.

BENGALURU

As part of the Corporate directive from the MSME Wing, HO and under the leadership of the Tumkur Regional Head, Sri. Gangesh Gunjan, AGM, MSME Cluster Meetings were organised on 06.12.2024 in six

Taluks of Tumkur District. All DM's of RO, MSME and Branch heads of Tumkur RO participated.

MSME Customer outreach programme was conducted across all ROs of Bengaluru CO on 06.12.2024 & 07.12.2024. The event was honoured by the presence of MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju. Sri. Sunil Kumar Yadav, GM, MSME Wing, HO, Sri Mahesh M Pai, GM & Circle Head, along with all other executives from the CO attended the programme. The event generated total leads worth ₹310.63 crores.

BHOPAL

Wheelies 3.0, an auto exhibition organised by Bansal News, Bhopal, and sponsored by Canara Bank was held at One Walk Bansal One – Rani Kamlapati Railway Station, Bhopal, on 13th, 14th, and 15th December 2024. The event was inaugurated by Hon'ble Cabinet Minister of Madhya Pradesh, Sri. Vishvas Sarang, and attended by officials, including GM & Circle Head Sri. Sudhanshu Suman, DGMs Sri. Subodh Kumar, Smt. Kiran N S, Sri. R K Meena and AGM Smt. Sucharitha Y K.

BHUBANESWAR

Bhubaneswar CO organised a "Mega Exporters & Corporates Meet" on 20.12.2024 at Hotel Lemon Tree, Bhubaneswar. The event was honoured by presence of Hon'ble Minister of State Sri Gokulananda Mallick, ED Sri Debashish Mukherjee, Sri Dibakar Prasad Harichandan, Director of Canara Bank, and Sri Jagdish Chander, GM. Sri Debashish Mukherjee, briefed about the key facilities being offered by the Bank to the Corporate especially the Exporters. Top Executives from Canara Bank Head Office were also present in the event.

CHANDIGARH

ED Sri. Hardeep Singh Ahluwalia visited Chandigarh Circle and presided over a Review-cum-Business Strategy meet. The event commenced with welcome

address by Sri. Dalbir Singh Grover, DGM, followed by a presentation on the CO's performance for FY 2024-25 by Sri. Manoj Kumar Das, GM & Circle Head. ED along with Circle head conducted a detailed review of the performance of the ROs, MCBs, LCBs and ARM Branches.

CHENNAI

MSME cluster meet was held at Dharmapuri RO on 07.12.2024. It was presided over by ED Sri. Debashish Mukherjee. The meeting was attended by Circle Head & CGM Smt. K A Sindhu, Sri Rakesh Kumar, DGM, MSME Wing, HO and other executives. ED in his keynote address highlighted our Bank's performance in MSME and explained various MSME products and CASA products.

KOZHIKODE

Sri. Hardeep Singh Ahluwalia, ED, visited Kozhikode CO on 20.12.2024. The performance of Circle Office, Regional Offices, MCB, ARM, RAHs, MSME Sulabhs, & select CM headed branches was reviewed. Sri Sreekanth V K, DGM, Kozhikode Circle delivered the welcome speech. Circle Head CGM Sri S Anil Kumar Nair presented the brief profile of the circle and highlighted the performance of the Circle under various business parameters. He discussed the action plan for achieving December 2024 targets under all parameters.

MADURAI

The Customer Service Meeting for the month of December 2024 was conducted on 17.12.2024 at Madurai Circle Office. Customers attended the meeting and interacted with Executives of Circle Office. Madurai & Dindigul Regional Offices joined the meeting through V.C.

MANIPAL

GM Sri S K L Das visited Manipal Circle on 09.12.2024. He presided over Scoring Matrix based Review Cum Business Strategy Meet with ROs at Circle Office. Sri B Sathyanarayana, DGM, delivered the welcome address and Sri Jayaprakash C, Circle Head & GM addressed the participants. Circle Head highlighted the importance of contribution and collective efforts of ROs to improve the ranking in Scoring Matrix. Sri SKL Das along Circle Head conducted a comprehensive review based on scoring matrix of ROs focusing on critical parameters such as CASA growth, mitigating negative growth in advances and deposits, Branch Sanctions, Asset Management, Seepage in Income & TAT.

Circle Profile and highlighted the achievements and concerns of the Circle. Sri Bhavendra Kumar in his keynote address expressed his concerns about the average NIM of the Bank and depleting CASA, SB Individual Deposit & RTD which in turn aggravates the dependency of bank on high cost Bulk Deposits and Certificate of Deposits. On 12th Dec 2024, all ROs organized Retail Expo and Agriculture Outreach Programme to source maximum quality business under Retail and Agriculture Sector.

PUNE

ED Sri Bhavendra Kumar along with Overseeing GM Smt R Anuradha, Retail Asset Wing, HO visited Pune CO on 11th and 12th December 2024 A Review cum Business Strategy Meet of CO, ROs, RAHs, MSME Sulabhs, LCB, MCBs, ARMs and select Executive Headed VLB/ELB Branches was conducted. Circle Head & GM, Sri Pramod Kumar Singh presented the

TRIVANDRUM

Study Circle for December Quarter was conducted on 26.12.2024 at Thiruvananthapuram South RO. Smt. Beena V S, Consultant Psychologist was the chief guest. The topics of discussion was mental health and the overall well being of a person in their personal as well as professional sphere. Executives and staff from Trivandrum South RO participated.

"When you give joy to other people, you get more joy in return. You should give a good thought to the happiness that you can give out."

– Eleanor Roosevelt

भोपाल

केनरा बैंक के दूरदर्शी एवं प्रिय संस्थापक श्री अम्मेम्बल सुब्बा राव पै के जन्मजयंती के पावन अवसर पर केनरा बैंक अंचल कार्यालय भोपाल में दिनांक 19 नवम्बर, 2024 को 119वां संस्थापक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री सुधांशु सुमन, महाप्रबंधक ने बैंक के संस्थापक महोदय के प्रसिद्ध उद्धरण एक अच्छा बैंक न केवल समाज का वित्तीय हृदय होता है, अपितु आम आदमी की आर्थिक दशा में सुधार लाने के लिए, हर संभव तरीके से, उसकी मदद करने के लिए भी प्रतिबद्ध रहता है का भी जिक्र किया और स्थापना के सिद्धांतों की चर्चा भी की। 119 वें संस्थापक दिवस के इस पावन अवसर पर अंचल कार्यालय भोपाल के अंतर्गत हमारे बैंक के कुछ सेवानिवृत स्टाफ सदस्यों को आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया गया। 119 वें संस्थापक दिवस को यादगार बनाते हुए अभी सेवानिवृत स्टाफ सदस्यों ने अपने अपने अनुभव साझा किए। समारोह में अंचल कार्यालय के कार्यपालक गण उप महा प्रबंधक श्रीमती किरण एन एस,सहायक महा प्रबंधक श्री के एस धार्मिक, सहायक महा प्रबंधक श्री सिद्धार्थन सी, सहायक महा प्रबंधक श्री जीवांगथन आर के, श्रीमती वाई के सुचारिता और अंचल कार्यालय के अभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

गुवाहाटी

दिनांक 13 दिसंबर 2024 को श्री एच टी बाविस्कर,महा प्रबन्धक के सानिध्य में आदरणीय मुख्य महा प्रबंधक श्री जनार्दना रॉव पी वी, एकीकृत कोष विभाग की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय गुवाहाटी द्वारा प्रतिष्ठित निर्यातक आयातक ग्राहक संपर्क बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान, एकीकृत कोष विभाग से श्री चल्लापल्ली वेंकट राम प्रसाद, सहायक महाप्रबंधक, बैंगलूरू व अंचल कार्यालय गुवाहाटी के उपमहा प्रबंधक श्री एन श्रीनिवास रॉव, गौरव बंसल सहायक महा प्रबंधक, श्री जे के साहू, सी आर ई तथा क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी के क्षेत्रीय प्रमुख श्री नरेश कुमार, व अंचल के अन्य कार्यपालकगण व एम एस एम ई और एम सी बी के शाखा प्रभारी भी उपस्थित थे। श्री एच टी बाविस्कर, महाप्रबंधक ने अपने संबोधन में वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में निर्यात–आयात परिचालनों के महत्व पर जोर दिया, जिसमें ईडीपीएमएस (निर्यात डाटा प्रसंस्करण और निगरानी प्रणाली) और आईडीपीएमएस (आयात डाटा प्रसंस्करण और निगरानी प्रणाली) बिल समाधान पर ध्यान केंद्रित किया गया। मुख्य महाप्रबंधक श्री जनार्दना रॉव पी वी ने बैंक द्वारा प्रस्तुत निर्यात–आयात से संबंधित उत्पादों और सेवाओं की विविधता पर प्रकाश डाला तथा प्रतिभागियों को बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि लंबित एवं अतिदेय ईडीपीएमएस/आईडीपीएमएस बिलों के समाधान पर विशेष ध्यान दिया जाएगा तथा निर्यातकों और आयातकों के लिए अनुपालन एवं सुचारू परिचालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इस बैठक ने बैंक अधिकारियों और निर्यातकों/आयातकों के बीच सीधे संपर्क के लिए एक मंच प्रदान किया, जिससे हितधारकों के साथ सहभागिता और विश्वास को बढ़ावा मिला और व्यापार वित्त, विदेशी मुद्रा समाधान और ट्रेजरी सेवाओं से संबंधित विशिष्ट प्रश्नों का समाधान भी हुआ।

करनाल

दिनांक 30.11.2024 को कार्यपालक निदेशक श्री अशोक चन्द्र ने करनाल अंचल के तहत क्षेत्रीय कार्यालयों और चुनिंदा शाखाओं के व्यावसायिक कार्यनिष्पादन की समीक्षा करने के

लिए करनाल अंचल का दौरा किया। श्री जी ए अनुपम, महाप्रबंधक, अंचल प्रमुख करनाल ने अन्य अधिकारियों सहित हमारे कार्यपालक निदेशक का स्वागत किया। कार्यपालक निदेशक श्री अशोक चंद्र ने अपने संबोधन में कासा में विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की और सभी कर्मचारियों से कासा में सुधार के लिए आग्रह किया। उन्होंने सभी शाखाओं की भागीदारी के साथ जीडीपी वेरिएंट पर विशेष ध्यान देते हुए अधिकतम प्रीमियम पेरोल खाते खोले जाने का भी अनुरोध किया। खाता खोलने के लिए टैब और इंस्टा बैंकिंग के अधिकतम उपयोग के बारे में काउंटर स्टाफ को जागरूक करने का आग्रह किया। साथ ही प्रशासनिक इकाइयों से नया व्यवसाय प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय कर्मचारियों को प्रेरित किया। बैठक के दौरान कार्यपालक निदेशक महोदय ने क्षेत्रीय कार्यालयों/शाखाओं के कार्यनिष्पादन की समीक्षा की।

कोलकाता

ईडीपीएमएस/आईडीपीएमएस ग्राहक मिलन का आयोजन 12 दिसम्बर, 2024 को अंचल कार्यालय कोलकाता में किया गया। बैठक में श्री जनार्दन राव पी वी, एकीकृत कोष विभाग, प्रधान कार्यालय एवं श्री कल्याण मुखर्जी, अंचल प्रमुख, उपस्थित थे। उन्होंने ग्राहकों को संबोधित किया एवं उनकी समस्याओं को सुना। उनके समस्याओं का निराकरण किया गया। साथ ही उन्हें नए उत्पादों की जानकारी प्रदान की गई।

The most important human endeavor is the striving for morality in our actions. Our inner balance and even our very existence depend on it. Only morality in our actions can give beauty and dignity to life.

- Albert Einstein (1879-1955),
Physicist and Nobel Laureate

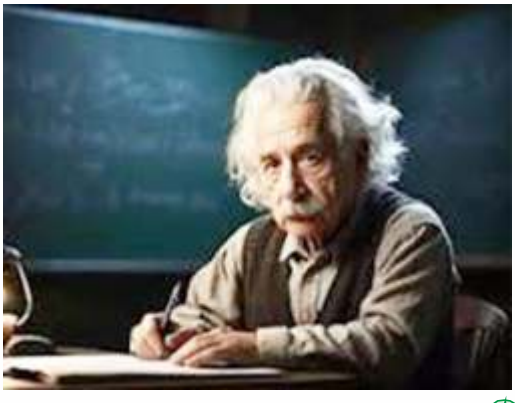

An Initiative by
ETHICS AND BUSINESS CONDUCT CELL
नैतिकता और व्यवसाय आचरण कक्ष
HR Wing, Head Office, Bengaluru

76th प्रधान कार्यालय मों 76वां गणतंत्र दिवस समारोह

Republic day Celebration at Head Office

श्री हरमंदिर साहिब

अल्पना शर्मा
ग्राहक सेवा सहयोगी
गंगानगर शाखा
क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

सिख धर्म के प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र होने का श्रेय अमृतसर शहर में बने ''स्वर्ण मंदिर'' को दिया जाता है। अमृतसर शहर इसी पवित्र स्थल के चारों तरफ बसा हुआ है। स्वर्ण मंदिर का असल नाम हरमंदिर साहिब है, जिसका शाब्दिक अर्थ हरी का घर है। स्वर्ण मंदिर के सरोवर, अमृत सरोवर के नाम पर ही इस शहर का नाम अमृतसर रखा गया था। यहाँ के इतिहास को लेकर बहुत सी रोचक कहानियाँ हैं जो इसकी भव्यता के पीछे छुप जाती हैं।

हरमंदिर साहिब की जमीन को लेकर दो कहानियाँ प्रचलित हैं। एक कहानी के अनुसार, सिखों के चौथे गुरु, श्री रामदास जी ने यह जमीन सिखों के दान से जमींदारों से 700 रुपए में खरीदी थी। एक और कहानी के अनुसार, मुग़ल बादशाह अकबर एक बार गुरु दर्शन के लिए गोइंदवाल साहिब गए तो सिखों के तीसरे गुरु श्री अमरदास जी ने उन्हें पंगत में बैठकर लंगर खाने को कहा था। सिखों की इस प्रथा से प्रसन्न होकर बादशाह अकबर ने उन्हें बहुत–सी जमीन दान में देनी चाही, जिस पर वो और बड़ा लंगर खोल सकें, पर गुरु अमरदास जी ने उन्हें इंकार कर दिया। उसी जमीन को अकबर ने अमरदास जी की बेटी, बीबी भानी जो बाद में चौथे गुरु, गुरु रामदास जी की पत्नी बनीं, को शादी के उपहार के रूप में दी थी। इसी जमीन पर स्वर्ण मंदिर का निर्माण हुआ। इसके एक तालाब में चिकित्सा शक्तियाँ मानी जाती थीं तो चौथे गुरु श्री रामदास जी ने उसे एक सरोवर की तरह विकसित किया और उसी के नाम पर सरोवर का नाम पड़ा, 'अमृत सरोवर'।

सन् 1570 में अमृत सरोवर और स्वर्ण मंदिर को घेरते हुए शहर अमृतसर का निर्माण कार्य शुरू हुआ, जो सन् 1577 में सम्पूर्ण हुआ। इस शहर को शुरू में गुरु रामदास जी के नाम पर रामदासपुर कहा गया और बाद में अमृत सरोवर के नाम पर अमृतसर। हरमंदिर साहिब की स्थापना को लेकर भी दो कहानियाँ प्रचलित हैं। एक कहानी के अनुसार, इस गुरुद्वारे की नींव पाँचवे गुरु श्री अर्जन देव ने लाहौर के एक सूफ़ी संत, हज़रत मियां मीर से सन् 1588 में रखवाई थी। एक दूसरी कहानी में, गुरु अर्जन देव ने इस गुरुद्वारे की नींव खुद रखी थी। सन् 1604 में गुरु अर्जुन देव ने गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन कर इसे हरमंदिर साहिब में रखवाया था।

सन् 1799 में महाराजा रंजीत सिंह ने लाहौर जीतकर सिख साम्राज्य की नींव रखी। महाराजा रंजीत सिंह से पहले हरमंदिर साहिब सोने का नहीं था। महाराजा रंजीत सिंह ने हरमंदिर साहिब को 750 किलो सोना दान किया था। सन् 1801 से 1839 के बीच मंदिर की निचली मंजिलों को सफेद संगेमरमर से सजाया गया था। इस दो मंजिला मंदिर की ऊपरी मंजिल को 750 किलो की सोने की पत्नी से सजाया गया था और इसीलिए इसका नाम स्वर्ण मंदिर पड़ा। गुरु अर्जन देव ने श्री हरमंदिर साहिब को चारों ओर से खुला रखा था, जो इस बात का प्रतीक था कि यह मंदिर धर्म, जाति, पंथ या लिंग के भेदभाव से परे है। गुरु अर्जन देव ने इसकी संरचना कुछ ऐसे कराई थी कि मंदिर की ओर जाने वाली सीढ़ियों से उतर कर नीचे को जाना पड़ता है। इसके पीछे यह सोच थी कि सबसे ऊंचे ओहदे के व्यक्ति को भी झुककर गुरुद्वारे में प्रवेश करना पड़े।

छठे गुरु, श्री हर गोबिन्द जी ने सन् 1609 में हरमंदिर साहिब के द्वार के ठीक सामने अकाल बुंगा 'अकाल तख्त' की स्थापना की। तख्त का शाब्दिक अर्थ 'सिंहासन या अधिकार की जगह' है। इस तख्त को न्याय और लौकिक मुद्दों पर विचार करने के स्थान के रूप में किया गया था। सिख धर्म में ऐसे पाँच तख्त हैं, जिनमें से तीन भारत में हैं और शेष दो, बाहर। गुरु हरगोबिन्द जी के अनुसार, हरमंदिर साहिब, सिख आध्यात्मिक मार्गदर्शन का प्रतिनिधित्व करेंगे तो अकाल तख्त, न्याय और लौकिक अधिकार का। हरमंदिर साहिब की सामूहिक रसोई या लंगर, जिसे 'गुरु रामदास जी का लंगर' कहा जाता है, प्रतिदिन लगभग एक लाख लोगों को भोजन उपलब्ध कराता है। लंगर परोसने की प्रथा, गुरु

नानक देव जी ने शुरू की थी, जो आज भी गुरुद्वारों में प्रचलित है। अपनी भौतिक सुंदरता और भव्यता से परे, हरमंदिर साहिब, सिख धर्म के मूल सिद्धांत जैसे समानता, विनम्रता और मानवता को दर्शाता है। यहाँ सभी धर्मों के आगंतुकों का खुले हाथों से स्वागत किया जाता है।

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, सिखों के प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र होने के कारण अपनी भूमिका को निभाने के लिए जाना जाता है। इस पवित्र स्थल ने इतिहास की कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं को खुद में समेटा हुआ है। कहा जाता है कि महर्षि वाल्मीकि ने इसी क्षेत्र में महाकाव्य रामायण की रचना की थी। अमृतसर में आज भी श्री राम तीर्थ मंदिर है, जो इस बात का सबूत है। एक और मान्यता के अनुसार, यहाँ श्री राम और सीता जी ने चौदह साल का वनवास बिताया था। यही स्वर्ण मंदिर कभी भगवान बुद्ध का निवास स्थान रहा है। समय-समय पर आक्रमणकारियों द्वारा इसे नुकसान पहुँचाने के प्रयास सफल नहीं हो पाए। सभी धर्मों के लोगों ने सिख समुदाय के साथ इसका पुनः निर्मित कराया। यही कारण है कि श्री हरमंदिर साहिब, सिखों के लिए एक पवित्र धार्मिक स्थल के रूप में उभर पाया है।

*****

Baby's Corner

Baby Himanshi

D/o Sri Biswambara Nayak & Smt Rashmita Nayak,
Senior Manager, ZI Hyderabad

Baby Padma V Abhilash

D/o Smt. Veena P, CSA, Trivandrum Chalai Branch
and Sri. Abhilash H.

PHULKARI - Crafted with Emotions

Mousumi Mohanty
Officer
HRM Section
Cuttack Regional Office

Phulkari is the **traditional fabric art of Punjab** derived from the words-"Phul" and "Kari" which basically represents the floral art work. The Phulkari embroidery is a very bright and vibrant embroidery work, just like the people of Punjab. The Phulkari embroidery is mostly made by women-this art helps them earn a living with self-esteem, hence **it celebrates womanhood**. Phulkari embroidery comprises not only flowers but also various motifs, geometric patterns and shapes.

The origin of Phulkari dates back to ancient times in Punjab. It is believed that during olden days, the birth of a girl in the family was considered very auspicious. It was considered that **the girl would be the creator of future generations** and to celebrate it, the grandmothers and mothers would start embroidering the Phulkari. These Phulkaris were to be given away to her at the time of her marriage. The tradition was that the parent of the girl child would gift them Phulkari as dowry during their marriage. A girl would start her new married life with the blessings and the Phulkari she received from her mother's place. **Phulkari is passed down from generation to generation- from mother to daughter then from the daughter to her daughter.**

Traditionally Phulkari was done using real flowers and silk fabrics because of their purity and durability. It was also believed that these Phulkari represent a woman's quality and character. Phulkari was a family tradition that represented the women's morality and righteousness. These Phulkari brought colours into their lives and is a must wear in celebrations like weddings, festivals and other occasions. The importance of Phulkari can be better judged from the fact that there is even a Punjabi folk song dedicated to this folk art. **Phulkari is an integral part of the Punjabi weddings.**

Phulkari is unique for its neat, regular patterns of geometric and natural motifs. With each variety of Phulkari a unique blend of story is unravelled. Each knot of Phulkari has an unique association with the different stages of a life. Some of them are:

Chope: Phulkari is gifted by maternal grandmother to her granddaughter on her last bath before wedding.

Suber: This is gifted to the bride by her maternal grandmother to be worn during her phera.

Varida Bagh: This is gifted to the bride by her mother in law when she begins a new life after marriage.

Sainchi: This type of Phulkari depicts the rural life of Punjab like day to day domestic activities or farming.

Thirma: In this variety, embroidery work is done on white base and these are specifically worn by older women.

The different motifs in Phulkari symbolises wealth and vitality, each carefully crafted with meaning. It is even believed that these motifs are not just attractive looking but they also bring good luck and prosperity. The use of bright colours in Phulkari work has rich symbolism. Red represents passion and love. Green symbolises fertility and wealth while yellow represents happiness and abundance. The combination of these colours results in masterpiece that narrates its own story.

Women in Punjab, with the push and pull of needles on a blank fabric - depicts their emotions and decorate the piece of empty fabric with the warmth of emotions for their loved ones. Phulkari has exceptional artistic value with colourful embroideries. It is also a symbol of prosperity often considered a good luck for the new beginnings in life usually associated with weddings or birth of a new born. It is in fact a generational heirloom.

Traditional Phulkari work is more than a mere piece of clothing. Phulkari is in fact a celebration of the Punjabi culture and craftsmanship. **Each piece of Phulkari clothing narrates a tale of intricate artistry, vibrant colours and deep cultural significance.**

Phulkari has gained global recognition. There has been a lot of support from the government to preserve the rich cultural heritage of Phulkari. The government and other organisations have also helped women in Punjab to earn a living through Phulkari like providing training. Women are also organised into self help groups to learn Phulkari. There are many entrepreneurial development courses provided by NABARD, SIDBI and the Union

Ministry of MSME to encourage Phulkari embroidery. Phulkari not only helps women gain financial freedom but also contributes to the rural economy. **Owning a piece of Phulkari not just means embracing Punjab's rich cultural heritage but also signifies contribution towards women empowerment.**

*****

Amazing Fun Facts About Punjab

Punjab contributes about two-thirds of the total food grain production in India. It also provides a third of milk production.

The Power of Cultural Branding:
Punjab as a Case Study

Abrar Ul Mustafa
Manager
Gagal Kupwara Branch

In the land of mustard fields,
Where rivers hum a timeless song,
Punjab thrives, a melody of culture,
A rhythm of life, bold and strong

Punjab, the land of five rivers, is a cultural brand. Its essence lies in the strength of its people, the richness of its traditions and the boldness of its colours. But what makes Punjab's identity a powerful tool for Marketing and Public Relations? How does its culture transcend borders and captivate global audiences? Let us uncover the magic of branding rooted in history, celebration and authenticity.

The festivals of Punjab, like Baisakhi, Lohri and Gurpurab, bring together people from all walks of life. They are not merely celebrations but experiences—immersive, joyful and unforgettable. A report by the Punjab Tourism Department states that during Baisakhi, Amritsar alone sees over one lakh visitors, generating revenue worth crores from tourism, hotels and handicrafts.

The cultural branding here is organic and deliberate. Take the example of Amritsar, a city built around the ethos of devotion and hospitality. The Golden Temple, with over 30 million annual visitors, symbolizes inclusivity and peace, offering free meals to over 50,000 people daily through its community kitchen (langar). It's not just a place of worship; it's a brand—a beacon of spirituality and service.

Punjab's food is its most recognizable export. From the smoky aroma of tandoors to the creamy depths of dal makhani, Punjabi cuisine is an ambassador of joy. Global restaurant chains like Pind Balluchi and Bikanervala have tapped into this cultural wealth, branding Punjab's flavors for audiences worldwide. The Dhaba culture has its roots here. Small roadside eateries that started as humble pit stops now represent rustic authenticity in urban centers. According to the National Restaurant Association of India, Punjabi cuisine makes up 34% of all Indian restaurant menus globally. The rise of brands like Haveli, a highway eatery replicating rural Punjab, shows how cultural branding can turn nostalgia into profitability.

Punjab's festivals are not just events; they are experiences that echo across continents. During Lohri, cities like Toronto, London and Sydney light bonfires, sing folk songs and celebrate Punjabi heritage. This is the result of diaspora branding,

where the Punjabi community becomes ambassadors of their culture. Baisakhi, the harvest festival, has been marketed as a tourism event by the Punjab Government. In 2023, the state reported a 25% increase in tourist footfall during the festival season, contributing significantly to its GDP. Campaigns like "Experience Punjab" tie cultural moments with tourism, making every visitor a storyteller of Punjab's magic.

The Punjabi diaspora is one of the largest and most influential, with over 12 million people spread across the globe. Their cultural pride has played a pivotal role in branding Punjab internationally. For example, the Vaisakhi parade in Surrey, Canada, attracts over 500,000 people annually, making it the largest such celebration outside India. Brands like Patiala Peg, a Canadian liquor company, use Punjab's identity to appeal to global audiences. Similarly, Punjabi music has crossed boundaries, with artists like Diljit Dosanjh and Sidhu Moosewala topping global charts. Spotify reported that Punjabi songs were streamed over 10 billion times in 2023, showcasing the brand power of its music.

Punjab's government and private enterprises have employed targeted PR campaigns to promote the state. Campaigns like "Punjab—The Land of Festivals" emphasize the cultural and emotional appeal of the region. The Punjab Tourism Summit 2022 saw collaborations with travel influencers and bloggers, generating over 2 million social media impressions. Partnerships with platforms like Incredible India and Netflix (for movies like Kesari) ensure that Punjab's brand resonates with younger audiences. Similarly, corporate branding in Punjab thrives on culture. Verka, a dairy brand, uses traditional imagery to connect with rural and urban consumers alike. Their tagline, "Har ghar ka pyar" (The love of every home), ties the emotional thread of family values with brand loyalty.

According to the Confederation of Indian Industry (CII), Punjab's cultural branding contributed over ₹10,000 crores to its economy in 2023, primarily through tourism, food exports, and entertainment. The Punjab Handicrafts Emporium reported a 40% increase in sales after featuring in a PR campaign focusing on its traditional phulkari embroidery. The economic impact is further amplified through collaborations. For instance, partnerships between Punjab Tourism and Airbnb have led to the promotion of heritage stays, creating employment for locals while boosting the tourism industry. Brands worldwide can learn from Punjab's success. Cultural branding isn't about creating something new; it's about amplifying what is already there. It's about making connections, building trust and fostering emotions. Take the example of Japan's Sakura festivals, marketed as experiences of ephemeral beauty. Or Italy's use of its cuisine and fashion to define global luxury. Like these nations, Punjab has embraced its cultural heritage to stand tall in the global marketplace.

Postscript: The power of cultural branding lies in its ability to transcend barriers. Punjab, with its richness of spirit and vibrancy, offers a model for the world. Through its festivals, food, music, and people, it creates a brand that is not just seen but felt.

*****

पंजाब के त्योहार: खुशी के रंग

प्रिया पँवार
अधिकारी
परतपुर शाखा, मेरठ

पंजाब की धरती, त्योहारों की जान,
जहां हर मौसम लाता है नया उत्साह।
लोहड़ी की रात, आग का उजाला,
गीतों और नृत्य में खुशियों का मेला।

बैसाखी के दिन, खेतों में बहार,
फसल कटने का होता त्योहार।
ढोल की थाप पर भांगड़ा झूमे,
हर चेहरा खुशी में घूमें।

तेईयाँ का त्योहार है रंगों से भरा,
पंजाब की धरती पर हर दिल को सजा।
सखियाँ मिलकर करतीं झूले की सवारी,
बहे हवा में आनंद की बयार सारी।

सगाई की मिठास, शादी की रीत,
तेईयाँ का पर्व है, सजी हुई मीत।

गुरुपर्व पर संगत का संग,
स्वर्ण मंदिर में रोशनी के रंग।
लंगर की महिमा, सेवा का भाव,
हर दिल को मिलता सुकून का ठांव।

तेज दिवाली और माघी की बात,
हर त्योहार में दिखे प्रेम का साथ।

पंजाब के उत्सव, दिलों का त्योहार,
जहां हर पल है खुशियों का संसार।

*****

1st Prize, Ethics Competition 2024, Essay

Unethical Practices – A Menace

Neeti Goel
Officer
Vivek Vihar, Delhi

"To know what is right and not do it is the worst cowardice."– Confucius

In a world where the line between right and wrong often seems blurred, the erosion of moral standards has given rise to a troubling increase in unethical practices. The world nowadays is driven by competition and rapid advancement, unethical practices and behaviour have taken its roots in the very fabric of our societal norms, recognizing various forms that unethical practices take, examining their root causes and effects, and implementing effective mitigation strategies for strengthening our moral compass and fostering a more ethical and healthier environment.

ROOT CAUSE ANALYSIS

Expedients: The rise of unethical practices in the banking system can be largely attributed to the fact that people are relying on shortcuts for success. Many have lost sight that the journey to success is not a quick one, it requires a long and dedicated effort. Once one commits to work ethically, one notices how unusual it is to meet someone who shares this commitment. The recent incident related to this is "UPI transactions to the tune of ₹85000/- have been observed between the middlemen who have sourced the loan proposals and the "Chief Manager" And "One Senior Manager" has been found to be involved in receiving pecuniary benefits out of the loan proceeds of the borrowers", and many more. People have forgotten the lessons their parents, teachers, and mentors instilled in them from birth - that hard work is essential for achieving anything meaningful in life and that there is no such thing as easy money. True success requires effort, and in the long run, you will always value the money you have earned through hard work. Easy money can disappear just as quickly as it comes, but I have never seen someone who genuinely works hard lose their earnings easily. Their moral values and integrity resonate with the universe, ensuring their efforts are rewarded. It is as if the universe responds to their determination and hard work by opening doors that might otherwise remain closed.

Coercion: It is essential to resist even when faced with pressure from higher authorities or external influences. In professional environments, coercion can create a toxic atmosphere where employees feel pressurised to compromise their values. Those who succumb to coercive pressure may experience feelings of guilt, anxiety, and diminished self-worth. Over time, such experiences can contribute to a decline in overall morale and job satisfaction, ultimately impacting productivity and innovation. One of the recent incident is "Officials from one of the Regional Offices concerned with Recovery Section & Operations section have been placed under suspension for misguiding branches for achieving fake cash recovery targets by debiting NPA

accounts and later closing the OTM queries by accepting false replies from branches."

Trust your soul and conscience to guide you through ethical dilemmas. That inner voice is always there to provide clarity and direction. When you encounter such pressures, take a moment to reflect and allow that voice to steer you toward the right choice. By practicing patience and self-awareness, you can navigate these challenges while staying true to your principles. Ultimately, standing firm against external pressures not only reinforces your integrity but also empowers you in the long run.

Work environment: Work environment indicates how a situation in the worksite can influence the employee's behaviour. An employee tends to imitate the behaviour existing in the workplace. I believe it is perfectly acceptable to choose the less-travelled path if it is the right one. Even if everyone around you insists something is right but you know it is wrong, have the courage to break away and stand your ground. A true winner often stands alone. Just because your peers claim they have done the same and encourage you to follow suit, do not be afraid to stand alone in the crowd. You were meant to stand out in this world, not just blend in. Do not compromise your values just to gain approval from others, that choice may lead to regret later. Be an inspiration to others so that your colleagues aspire to follow your footsteps and choose the path you have taken.

Once we stray down the wrong path, believing that it will be a one-time occurrence and that we will not do it again, we must remember, there may not be a next time. Today is the only opportunity, we must make the right and ethical choice. Let us learn from the wisdom of our ancestors.

Greed: Naturally, humans possess greed and insatiable desires, coupled with weak self-control, which can lead many to cheat and act unethically. Additionally, employee's greed is often thought to stem from dissatisfaction with their accomplishments at work, whether it is related to salary, bonuses, or a slow promotion process within the organization. For example, "Branch Head & Officer from one of the branches have been suspended for sanctioning loans to their close relatives and later, part of loan proceeds have been transferred to the Branch Head & the said Officer's spouse account" and "2 Officials in one of the branches have been placed under suspension for receiving huge credit amounting to ₹2 crores within 1 year in their own / relatives account through various sources such as online gaming / gambling, trading, cash deposits, credit transactions from customers of the branch" and the list goes on.

Life is not measured by the amount of money you accumulate but by how faithfully and morally you adhere to your principles. Strive to be a person of integrity and strong values. If you can rest peacefully at night, knowing you have done the right things and can proudly share that with your parents and children, then you have truly achieved everything in life, and there is nothing to fear.

Arrogance: Arrogance is an attitude where an individual disregards an organization's internal controls, policies, and regulations, believing those rules do not apply to them and that they are immune to consequences. An arrogant employee often boasts about their wealth, power, or other attributes, which can lead to underestimating or insulting others. For example, "An Officer has been found to be involved in the case of misbehaviour with the female members of the branch on multiple occasions" and like "One of the HKPs have been placed under suspension for attending office in a drunken state and passing derogatory remarks against fellow colleagues, which hampered the smooth functioning of the branch," which were reported recently under unethical practices.

This behaviour can create a negative atmosphere, affecting those around them and resulting in discomfort in the workplace. No matter how hard you try to conceal unethical actions, the truth will eventually surface, and you will have to face the repercussions. Protecting your mental peace means standing firm and not succumbing to pressure. Hold your ground and prioritize your principles above everything else.

Recall the song "Kisi Ki Muskurahaton Pe Ho Nisar" of Kishore Kumar, especially the line "Mana apni jeb se fakir hain, phir bhi yaaro dil ke hum ameer hain." The message emphasizes that even if one lacks financial resources, they can still possess a wealth of compassion, love, and integrity. This inner richness not only brings fulfilment but also fosters meaningful connections with others.

MITIGATION

1. I believe that the IIBF Ethics in Banking exam should be mandatory for all bank employees, regardless of the number of attempts allowed. The bank should also refund the exam fees for each attempt, as this would encourage employees to participate. Since the exam is offered in a remote proctored mode, employees can take it conveniently from home using their laptops, making it accessible and feasible for everyone. However, if it has not made compulsory, few will likely engage with it. The bank could provide a year for employees to take and pass the exam, helping to ensure that they avoid making uninformed decisions due to a lack of knowledge. This initiative would be a significant step forward for the bank and would come at no extra cost.

2. I believe that ethics training at the Learning and Development Centres should focus on interactive sessions rather than just lectures. It would be beneficial to teach employees how to handle ethical dilemmas by using real-life banking scenarios rather than generic situations. The examples should be directly related to daily banking operations, providing practical guidance on how to navigate ethical challenges effectively.

3. I propose that the bank can organize a book club at least once a month for about an hour,

focusing on books related to ethics, whether fiction or non-fiction. For example, we could read "The Ethics of Ambiguity" by Simone de Beauvoir, "The Moral Landscape" by Sam Harris, or even "To Kill a Mockingbird" by Harper Lee. To foster a culture of ethics, reading and listening are essential tools. We can incorporate book recommendations from the club, and any employee can participate in these online sessions via video conferencing. Each month, we could cover 2-3 chapters from a selected book, ensuring it's manageable and not burdensome. This way, employees can gain practical insights and tips from the discussions to apply in their everyday lives.

4. I believe we should increase employee awareness of principles such as utilitarianism and deontology. Utilitarianism is an ethical theory that promotes actions that maximize overall happiness for the greatest number of people, highlighting that even small actions can lead to significant positive outcomes. In contrast, deontology emphasizes adherence to established moral principles, asserting that some actions are inherently right or wrong regardless of their consequences. Together, these principles encourage employees to consider both the impacts of their actions and their moral responsibilities, fostering a culture of integrity and ethical decision-making in the workplace.

5. Additionally, fostering a culture of respect helps create a more positive and productive work environment. When employees feel valued and respected, they are more likely to engage fully and contribute their best efforts. Organizations should implement clear policies against disrespectful behaviour and ensure that all employees, regardless of their rank, are held accountable for their actions. Ultimately, prioritizing respect not only enhances morale but also strengthens teamwork and collaboration across the organization. We must remember to never treat anyone merely as a means to an end, viewing them only as resources or tools.

6. We can establish a hotline number that allows anyone - employees, customers, or employees' families to report unethical behaviour anonymously. This hotline should be prominently displayed in our branches. This initiative will provide better protection for whistleblowers and encourage more frequent reporting of such incidents.

7. Develop interactive ethics simulation games that immerse employees in ethical dilemmas, allowing them to practice decision-making in a controlled environment. Design gamified scavenger hunts that incorporate ethical principles and scenarios, fostering teamwork and engagement while promoting ethical learning. Additionally, create an interactive game that simulates banking situations where employees make ethical decisions, earning credit card points for correct choices and gaining insights from their mistakes. This approach will enhance their understanding of ethics in a fun and engaging way.

8. Storytelling Wall: Establish a physical or digital wall where employees can anonymously share their experiences with ethical dilemmas and the resolutions they found. This platform will not only promote collective learning but also foster a culture of openness and support, encouraging employees to reflect on their values and learn from one another's experiences. Additionally, we could feature

monthly themes or prompts to inspire participation and engagement.

9. Ethics Flash Mobs: Arrange spontaneous gatherings where employees can perform brief skits or presentations that showcase ethical scenarios, raising awareness in a fun and engaging manner. These flash mobs can be accompanied by interactive elements, such as audience participation or Q&A sessions, to enhance engagement and reinforce key ethical principles.

10. Dilemma of the Month: Introduce a new ethical dilemma each month for employees to discuss and resolve, fostering ongoing engagement with ethical decision-making. To deepen the impact, we could create a dedicated forum or online platform where employees can submit their thoughts and solutions, as well as vote on the best responses. Additionally, we could highlight these discussions in monthly newsletters, celebrating the insights and contributions of our team members, and emphasizing the importance of ethical practices in our organization.

CONCLUSION

By committing to these strategies, our bank can create a resilient ethical culture that not only mitigates the risks associated with unethical practices but also enhances overall performance and employee satisfaction.

The battle against unethical practices is not just about compliance; it is about building a legacy of integrity that benefits everyone involved.

In conclusion, addressing unethical practices is not merely a compliance issue but a fundamental aspect of organizational health. By fostering a culture of integrity, promoting ethical leadership, and engaging employees in the conversation around ethics, bank can combat the menace of unethical behaviour effectively. The commitment to ethical standards will not only protect the organization from potential risks but also pave the way for a more positive, productive, and sustainable workplace.

"The time is always right to do what is right."

— Martin Luther King Jr.

*****

Without ethics, mankind has no future. This is to say, mankind without them cannot be itself. Ethics determine choices and actions and suggest difficult priorities.

– John Berger

1st Prize, Ethics Competition 2024 - "Anecdote"

Real life incidents on ethical dilemma involving unfair practices

Sushant Parashar
Manager
D.A. Cell, CO Mumbai

There was a Manager who was heading a semi-urban branch. One fine day, one of his friends introduced him to the idea of making easy money by investing in the stock market. His friend further told him about a stock that was expected to rise at least two-fold in the next three months. He did not have enough funds to invest. After all the deductions and EMI payments for his home and car loans, he was left with no surplus. He had already availed a housing loan to his maximum eligibility and a car loan to the maximum quantum allowed. This had a heavy impact on his net take-home salary. Added to this burden were other routine expenses, and he often struggled to manage his income and expenditure and frequently borrowed from his friends and relatives to meet his usual expenses.

The idea of investing in the stock market tempted him. He thought of it as an alternative easy means of boosting his monthly income. However, there was one problem: unlike his friends, he didn't have any savings to invest. Instead, he took a gold loan in his wife's name from his branch and invested it in the stock market, speculating on heavy returns within the next three months. Unfortunately, things didn't go as planned, the stock which he had invested based on his friend's advice, drastically fell. As a result, the Manager incurred heavy losses in the stock market. He now turned to his friend for help, who reassured him not to worry about the losses, explaining that there may be some losses in the initial days and encouraged him to invest further in trading to recover the losses. Although, the Manager had little knowledge of investing in futures and options, he found the idea amusing and thought that the only way forward was to invest more to recover his losses. However, the issue of funds remained. He became so distracted by the incidence, that anybody could sense something was wrong.

Mr. Patil, a regular customer of the branch and a resident of the area, noticed that the Manager seemed upset. Mr. Patil had availed of an overdraft limit of ₹15 lakhs from the branch and was familiar with the staff, as he visited the branch regularly. He met the Manager in his cabin and asked if he was facing any problem. The Manager lied to him that his wife was not keeping well and the doctor had suggested surgery, which would cost him around ₹3-4 lakhs. Since he had already spent a lot on her ongoing treatment, he didn't have the funds at the moment. Mr. Patil offered to help and lent him Rs. 3 lakhs temporarily but mentioned that he should return the funds in 3 months for him to invest the amount in his business for the upcoming festive season. The Manager agreed and promised to return the amount within three months and credited the money to his wife's savings account, routed it to his own account and invested it in trading activities. With little knowledge of trading, he

often relied on intuition or his friend's suggestions. However, once again, things went contrary to his expectations, and he lost all his money in trading.

Months passed, and as the festive season approached, Mr. Patil asked for the money he had lent to him. Clearly, the Manager was in trouble now. He had exhausted all his savings, availed various loans, and none of his friends or relatives were willing to lend him further. He then called Mr. Patil, proposing what he described as a win-win solution. Mr. Patil came to the branch, and they had a long discussion in the Manager's cabin, something that was unusual for branch activities.

Two days later, Mr. Patil submitted a request for an enhancement of his credit limit. The Manager convinced his advances officer to release the limit, even though the documentation was incomplete, and the assessed working capital was lower than requested. In a rush, the limit was enhanced and released within two days. From the enhanced portion of ₹4.00 lakhs, Mr. Patil transferred ₹1.00 lakh to the Manager's spouse's account.

As time passed, the Manager felt that he had gotten away with his actions and continued the same practice with a few other borrowers. He also sanctioned a few PMEGP loans under the pretext of establishing businesses, but no real business activity was conducted. The proceeds of the loans were transferred to the supposed vendors, and from there, the funds were routed to various accounts, including that of the Manager's spouse. This went on for a while but eventually caught the attention of the bank's scrutiny team. The data analytics team observed a pattern in the transactions at the branch. They noticed not only a sudden surge in a particular kind of advance but also that the loan proceeds were going to a particular vendor. They also identified credit transactions in the Manager's spouse's account from the vendor's account. These findings were forwarded to the concerned department, leading to an inquiry. Serious irregularities were uncovered, and disciplinary action was initiated against the Manager.

Within a couple of months, the accounts began to slip into the SMA category and subsequently became NPAs, as there was no business activity and hence no income generation. Mr. Patil, too was unable to cope with the additional interest charges and his account became NPA. Upon further inquiry, he confessed that in exchange for the ₹3.00 lakhs he had lent to the Manager, the Manager had offered to enhance his limit by ₹4.00 lakhs and had assured him that he would handle the extra interest charges. Mr. Patil pointed to several credit transactions from the Manager's spouse's account, claiming they were done to prevent his account from slipping into the NPA category.

Learning: The Manager found himself trapped in debt. By taking loans from various sources and mismanaging his finances, he worsened his situation. Using gold loan proceeds for speculative investments exacerbated his problems, leading to unethical practices. His short-term escapades encouraged more wrongdoing. In the process, he jeopardized the bank's interests through reckless lending and brought even more trouble upon himself and his family through his unethical behaviour.

*****

--------- SU-DO-KU ----------

To solve a su-do-ku puzzle, every digit from 1 to 9 must appear in each of the nine vertical columns, in each of the nine horizontal rows, and in each of the nine boxes.

	2			8		7		
	3		2		4	8		
1					9			
			3	4	1			
					8			6
8			5					7
3						4		1
		4				3		
7	6				3			5

--------- SIMPLE RIDDLES ----------

1. Peter invites John and 11 other friends to a picnic. John claims that at least two of the 13 share the same birth month. Peter doubts him and asks all his friends for their birthdays. It turns out that John was right. How did he know?
2. In a box there are 5 red socks, 10 blue socks and 15 green socks. What is the minimum number of socks that must be picked to get a pair of the same color?

--------- PUZZLE ----------

There is a voucher hidden in one of the books arranged below. Find the voucher from the clues provided.

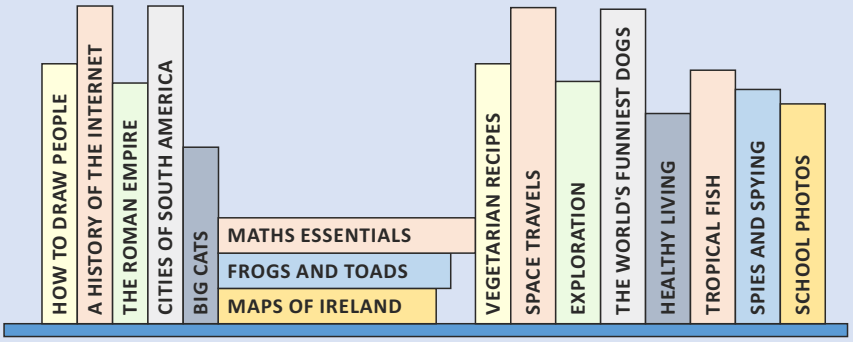

Clues:

- The book you need does NOT have an animal in the title.
- It is standing vertically on the shelf.
- There is a letter "S" somewhere in the title
- It is not at the end of a shelf
- It has a two-word title
- The book would not help you while cooking

Answers to SU-DO-KU, Simple Riddles and Puzzle on page 77

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

बैसाखी

प्रशान्त कसौंधन
मंडल प्रबंधक
प्रभादेवी खुदरा आस्ति केंद्र

वैसे तो अभी मौजूदा समय में 15 दिन बाद ही लोहड़ी पर्व आने वाला है पर मुझे बैसाखी पर्व से कुछ अलग ही लगाव है कि जट्टा आई बैसाखी। पंजाबियों की उमंग और जज्बा इस त्यौहार में देखते बनता है मुझे भी एक बार इस त्यौहार में सम्मिलित होने का अवसर मिल चुका है जब मैं अमृतसर के टूर पर परिवार के साथ कालेज पीरियड में गया था। प्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफ़ी और मुकेश जी द्वारा ईमान धरम में गाया गीत 'ओ जट्टा आई बैसाखी' आप सब ने भी सुना होगा।

'जिथे रुत बैसाखी दी लै के औंदी मस्त बहारां, पा भंगड़े नचदे ने थां–थां गबरू ते मुटियारां, कंकन दी मुक गई राखी, ओ जत्ता आई बैसाखी।' लो जी, एक बार फिर से बैसाखी का त्यौहार आ गया है धमाल मचाने, ये शब्द आज भी मेरी यादों में समाये हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां के त्यौहार कृषि से जुड़े जीवन और परंपराओं का उत्सव होते हैं। पंजाब के बैसाखी और लोहड़ी दोनों ही उत्सव ऐसे ही महत्वपूर्ण त्योहार है, जो न केवल फसल कटाई के पावन पर्व है, बल्कि सिख धर्म के ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व को भी उजागर करते है।

हर साल 13 या 14 अप्रैल को मनाए जाने वाला यह त्यौहार किसानों, सिख समुदाय और पूरे पंजाब के लिए खुशियाँ और उल्लास लेकर आता है। यह दिन पंजाब के लोगों के लिए धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। खेतों में रबी की फसल की लहलहाती गेहूं की फसलें और उनकी कटाई की शुरुआत, इस त्योहार को और भी खास बना देती हैं।

इस त्योहार को पंजाब और हरियाणा में काफी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। बैसाखी के कई अलग–अलग नाम हैं। इसे असम में बिहू, बंगाल में नबा वर्षा, केरल में विशु कहते हैं। बैसाखी के दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करते हैं।

बैसाखी परिवार और एकजुटता का उत्सव भी है। दशकों से बैसाखी वसंत की फसल की शुरुआत का प्रतीक है और पंजाबी किसान इस अवसर को सामुदायिक समारोहों के रुप में मनाते हैं। बैसाखी को बैसाखी के नाम से भी जाना जाता है। यह मूल रूप से उत्तर भारतीय राज्य पंजाब में मनाया जाने वाला वसंत की फसल का उत्सव था । इसे सिख नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। इसलिए इस पर्व को पारंपरिक रीति रिवाजों के साथ धूम धाम से मनाया जाता है।

बैसाखी, बैसाखी महीने का पहला दिन होता है और इसे बैसाखी का ही अपभ्रंश माना जाता है।

1. बैसाखी को मेष संक्रांति भी कहते हैं क्योंकि इस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है। इसी से बैसाखी को विषुवत संक्रांति भी कहा जाता है।

2. बैसाखी का त्योहार हिन्दू, बौद्ध और सिख धर्म के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है।
3. बैसाखी के दिन गंगा नदी में स्नान का विशेष महत्व है।
4. बैसाखी को 'धन्यवाद दिवस' भी कहा जाता है।
5. बैसाखी के दिन किसान पूरे साल की फ़सल के लिए ईश्वर का आभार व्यक्त करते हैं।
6. बैसाखी के दिन नई फ़सल से निकले पहले अन्न के दाने को भगवान को अर्पित किया जाता है।

यह दिन सिख धर्म का आध्यात्मिक गौरव बढ़ाने के साथ–साथ उनके संघर्ष, साहस और बलिदान का भी प्रतीक है। यही कारण है कि बैसाखी सिख समुदाय के लिए केवल एक त्यौहार नहीं, बल्कि उनकी पहचान और गौरवगाथा का दिन है।

बैसाखी का ऐतिहासिक महत्व : बैसाखी का इतिहास 1699 ई. में दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा खालसा पंथ की स्थापना से जुड़ा है। आनंदपुर साहिब में एक विशाल सभा आयोजित कर उन्होंने धर्म की रक्षा और सिखों को संगठित करने के लिए ''खालसा पंथ'' की नींव रखी थी। इस अवसर पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने पाँच सिखों को ''पंच प्यारे'' के रूप में चुना और उन्हें अमृतपान कर खालसा बनाया। इस दिन को सिख समुदाय के लिए एक नए युग की शुरुआत और गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी की याद में मनाया जाता है, गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी ने नौ वर्ष की आयु में सिख धर्म में एप् अगुआ के रूप में अपना पहचान बनाई।

कृषि और लोक जीवन में महत्व : बैसाखी का संबंध पंजाब के किसानों की मेहनत और फसल कटाई से भी है। अप्रैल का महीना रबी की फसल, विशेष रूप से गेहूं की कटाई का समय होता है। इस अवसर पर किसान भगवान का धन्यवाद करते हैं और नई फसल की उपज का जश्न मनाते हैं। यह उनकी मेहनत और समृद्धि का प्रतीक बनकर हर परिवार के जीवन में खुशियां लाता है।

किसान पारंपरिक कपड़े पहनकर भांगड़ा और गिद्दा नृत्य करते हैं। खेतों में ढोल की गूंज और लोकगीतों का समां हर किसी को झूमने पर मजबूर कर देता है। इस त्यौहार में हर घर और गांव में उत्साह और उमंग का माहौल रहता है।

उत्सव की परंपराएं और रीति–रिवाज : बैसाखी का उत्सव गुरुद्वारों और मेलों से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक फैला हुआ है।

1. **गुरुद्वारों में पूजा–अर्चना** – इस दिन सिख धर्मावलंबी गुरुद्वारों में जाकर गुरुग्रंथ साहिब के सामने मत्था टेककर गुरुवाणी, शबद, कीर्तन अरदास और अखंड पाठ का आयोजन सुना जाता है। बैसाखी के दिन गुरु कृपा पाने के लिए विशेष रूप से गुरुद्वारे आदि में लंगर लगाकर लोगों को प्रसाद बांटा जाता है साथ ही सामूहिक भोजन करके समर्पण और सेवा का संदेश दिया जाता है। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर और आनंदपुर साहिब विशेष रूप से सजाए जाते हैं।

   बैसाखी के खास मौके पर गुरुद्वारों फूलों और लाइटों से सजाया जाता है। इस दिन गुरुद्वारे में कीर्तन और गुरुवाणी का विशेष रूप से आयोजन किया जाता है। साथ ही बैसाखी को शाम के समय घर के बाहर लकड़ियां जलाकर उसके चारों तरफ घेरा बनाकर भांगड़ा और गिद्दा किया जाता है।

2. **लोक नृत्य और गीत** – भांगड़ा और गिद्दा पंजाब की आत्मा हैं, और पहचान हैं, वैशाखी पर इन्हें विशेष रूप से प्रस्तुत किया जाता है। ढोल की थाप और लोकगीतों की धुन हर व्यक्ति के दिल को छू लेती है। बैसाखी के मौके पर पंजाबी लोकनृत्य जैसे भंगड़ा और गिद्धा प्रमुख आकर्षण होते हैं। भंगड़ा जहां पुरुषों का ऊर्जा से भरा नृत्य है, वहीं गिद्धा महिलाओं के उत्साह और खुशी का

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
सिंडिकेट Syndicate

प्रतीक है। महिलाएं और पुरुष पारंपरिक परिधानों में सज–धज कर नृत्य करते हैं। नृत्य के दौरान रंग–बिरंगी पोशाकें, चमकीली पगड़ियां और परंपरागत गहने इस पर्व को और भी मनोरम बना देते हैं।

बैसाखी और लोकगीत : बैसाखी के उत्सव में लोकगीतों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। पंजाबी लोकगीत इस पर्व के उल्लास को कई गुना बढ़ा देते हैं। ढोल, ताशा और बांसुरी की धुनों पर गाए जाने वाले गीत पंजाब की संस्कृति की सजीव झलक पेश करते हैं।

कुछ प्रसिद्ध बैसाखी के लोकगीत इस प्रकार हैं:

1. **''असां बैसाखी दी शान मनानी ऐ''** – यह गीत बैसाखी के महत्व को दर्शाता है और इसे गाते समय ढोल की थाप पर भंगड़ा किया जाता है।
2. **''चप्पा चप्पा बैसाखी दी खुशबू ऐ''** – यह गीत खेतों में नई फसल की खुशबू और किसान की मेहनत को सलाम करता है।
3. **''सोहनी बैसाखी आई, लेके खुशियां दी बहार''** – यह गीत बैसाखी के दिन की उमंग और उत्साह को अभिव्यक्त करता है।
4. **''कहे भंगड़ा पाईंदा रह, सोहनी बैसाखी दी''**
5. **''हर खेत विच रब्ब वसदा,''**
6. **''हर दिल खुशियां नाल मनींदा।'**

3. **मेलों का आयोजन** – बैसाखी के दिन पंजाब के विभिन्न हिस्सों में विशाल मेलों का आयोजन किया जाता है। इनमें आनंदपुर साहिब का मेला सबसे प्रसिद्ध है। मेलों में पंजाबी खाने–पीने की चीजें, हस्तशिल्प और बच्चे झूलों का आनंद लेते हैं और महिलाएं मेहंदी और चूड़ियों की खरीदारी करती हैं। ये मेले सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पारंपरिक खेलों, झूलों और खाने–पीने की चीजों से भरपूर और मनोरंजन के साधन लोगों को आकर्षित करते हैं। इन मेलों में ग्रामीण जीवन की झलक देखने को मिलती है।
4. **विशेष व्यंजन** – बैसाखी के दिन घरों में पारंपरिक पंजाबी व्यंजन जैसे मक्के की रोटी, सरसों का साग, गुड़ के पकवान, कढ़ी–चावल और मीठे पकौड़े बनाए जाते हैं। लस्सी और छाछ का स्वाद इस पर्व को और खास बना देता है।

आधुनिक युग में वैशाखी का महत्व – बैसाखी का महत्व अब केवल पंजाब तक सीमित नहीं रह गया है। विदेशों में बसे पंजाबी लोग भी इसे बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाते हैं। कनाडा, यूके और अमेरिका में भी इस दिन गुरुद्वारों में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह पर्व अब वैश्विक स्तर पर पंजाब की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का प्रतीक बन चुका है।

सिख समुदाय के अलावा अन्य धर्मों और जातियों के लोग भी इस पर्व में शामिल होकर भाईचारे और एकता का संदेश देते हैं।

बैसाखी से जुड़े सांस्कृतिक संदेश – बैसाखी केवल त्यौहार नहीं है, यह किसानों की मेहनत, सिख धर्म की गौरवशाली परंपरा और मानवता के प्रति समर्पण का प्रतीक है। यह पर्व हमें सिखाता है कि कड़ी मेहनत और ईश्वर में आस्था से हर मुश्किल का सामना किया जा सकता है। यह त्यौहार सिख धर्म की मूल शिक्षाओं जैसे सेवा, समर्पण और समानता को उजागर करता है। यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि जीवन में हर सफलता का जश्न सामूहिक रूप से मनाने का असली मजा कुछ अलग ही होता है।

यह पर्व जीवन के हर पहलू में आनंद और समृद्धि का संदेश देता है और यही इसे एक अद्वितीय उत्सव बनाता है।

निष्कर्ष : पंजाब की बैसाखी त्यौहार भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को दर्शाती है। यह न केवल एक धार्मिक और कृषि उत्सव है, बल्कि यह एक ऐसा अवसर है, जब लोग अपनी परंपराओं और मूल्यों को संजोते हुए, सामूहिकता और भाईचारे का जश्न मनाते हैं। बैसाखी पर गाए जाने वाले लोकगीत, नृत्य और मेलों का उल्लास जीवंतता हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस त्योहार की खुशबू और उमंग आज भी पूरे देश में लोगों के दिलों को जोड़ती है।

*****

TIME RISK

Birendra Kumar
Divisional Manager
Risk Management Wing
Head Office, Bengaluru

TIME is always said to be the most **VALUABLE ASSET** – but we humans are yet to value even a fraction of its true worth. This is because we waste time, the most, fully knowing it is very limited in one's life.

An asset is valued by humans by its return to risk characteristic and in this same analogy – "Time is one such asset which has highest tangible and intangible return across all asset classes and thus may also be tagged with highest risk".

How is time the riskiest of all assets a human can imagine?

However strong one builds a fortified wealth and lifestyle – time eventually eats-up everything without one's notice. It is not only with humans but it applies to all known and unknown objects of the profound universe.

Time and Space are the only two such abstruse which extends upto 'Infinity'. Our life time in this infinite time and space is just fraction of fraction. As in human parlance one often says childhood is tiny, youthfulness is momentary and life is very short and it just flies-by. The notation **"risk of life"** emerges because of this very characteristic of time risk.

This life is beautiful but moves in a very narrow **"Time's Lane"**. Any drift on our life path and we start to get galloped by time risk at an even faster pace. Though time has definite speed it is the life's pain which makes us feel. We are decaying fast if time rules are not well understood.

Patience and endurance are two key tools available to manage time risk. One must diversify life's beautiful moments across different periods of life by borrowing and lending love. One must remember no tangible return can remain perpetual, except the movement of love shared with loved ones. This is the true investment of life because its return always endures.

One often imagines to develop a **"Time Machine"** in one's life time. But one needs to realize and appreciate that we all are in fact sitting and enjoying the same Time Machine!

Just try to imagine one beautiful childhood moment – it will come to your beautiful mind **Vivid and Live** and you will realize it has just passed-by. This is the speed of our life's time machine.

Time gallops the strongest without one's noticing that one is being galloped. One can endure a little of this phenomenal character of time by trying to embrace stability – just like **"Gold"** one of the most stable element– which does not lose shine and purity even after centuries. This is not to say that gold is perpetual – it is only more enduring than others. In this same manner moments of true love shines forever in memories and is the purest of all human emotions.

This Golden Love was all – spread by almighty to all, which made world a better place to live and enjoy – **MERRY CHRISTIMAS** and a **HAPPY NEW YEAR!!!**

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
सिंडिकेट Syndicate

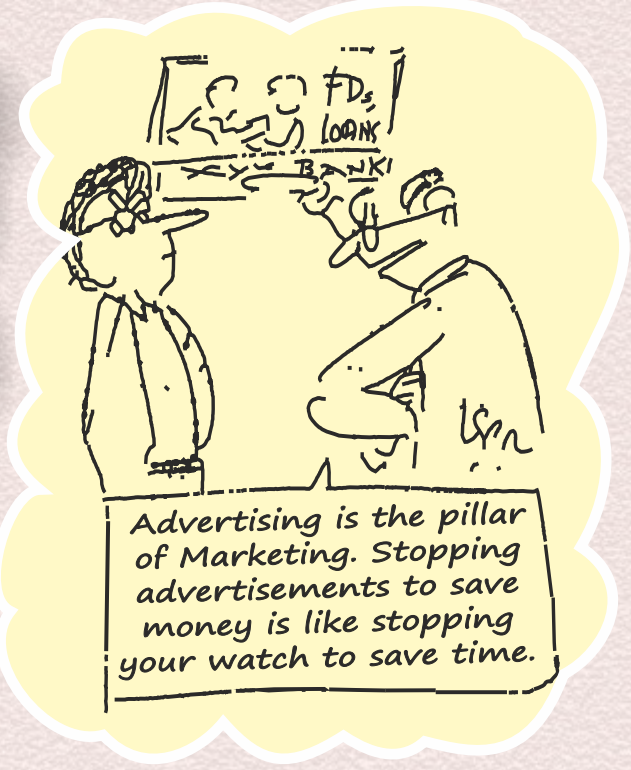

Refer to "drawer" by:
K P Ramesh Rao

Marketing and Public Relations: A Strategy to Success

Deepti Kishore
Advances (AF & PS) Section
Circle Office, Bengaluru

In today's highly competitive business environment, organizations strive to establish a strong presence, build trust, and ultimately achieve success. Two crucial components of any successful business strategy are Marketing and Public Relations (PR). These two fields, while distinct in their functions, often work hand in hand to shape a company's image, foster customer loyalty, and generate positive outcomes. Marketing focuses on promoting products and services to target audiences, while PR focuses on maintaining and enhancing a company's reputation through communication strategies. Together, Marketing and PR form a powerful strategy for achieving business success.

I. The Role of Marketing in Achieving Success

Marketing is the backbone of any business that aims to reach its target audience effectively. It involves understanding customer needs, creating value through products and services, and communicating that value through various channels. The primary goal of marketing is to drive sales, increase brand awareness, and ultimately generate profit.

Effective marketing strategies are often based on a mix of the **4 Ps: Product, Price, Place, and Promotion**. By aligning the product with customer needs, setting competitive prices, choosing the right distribution channels, and promoting the brand through appropriate marketing campaigns, businesses can attract and retain customers. In today's digital age, marketing strategies are evolving rapidly, with social media, influencer marketing, content creation, and data analytics playing an increasingly significant role.

Furthermore, understanding customer behavior is essential to successful marketing. By leveraging data analytics, businesses can personalize marketing efforts to target specific segments of the population more effectively. This personalized approach ensures that the right message reaches the right audience at the right time, increasing the likelihood of conversion and customer loyalty.

At the same time Marketing is a dynamic process that involves understanding customer needs, creating value through products and services, and communicating that value through various channels. It is primarily responsible for driving sales, increasing brand awareness, and ultimately generating profit. **According to a 2023 report by HubSpot, 61% of marketers say increasing lead generation is their top priority, which underscores the importance of targeted marketing strategies.**

Marketing strategies today are data-driven and rely heavily on a mix of traditional and digital channels. For Ex. **Amul, the dairy brand**, has become a household name in India, largely due to its effective marketing strategies. The company's iconic advertising campaigns, featuring its mascot – the Amul Girl – have been a key part of its success. Amul's marketing strategy focuses on emotional branding, targeting both urban and rural customers. With their extensive product line and national presence, Amul has used clever taglines and advertisements to remain relevant and consistently top-of-mind for consumers.

According to the 2023 Digital Marketing Trends

Report, 70% of marketers use social media to promote their products, while 66% leverage email marketing. The use of data analytics, social media campaigns, and influencer partnerships has grown dramatically, allowing businesses to personalize their marketing efforts and increase engagement. For example, Nike's personalized marketing campaigns based on customer data have allowed them to tailor product offerings and create customer loyalty, significantly boosting their sales.

II. The Role of Public Relations in Building a Strong Reputation

Public relations focuses on managing a company's reputation and building relationships with its key stakeholders, including the public, media, investors, and customers. PR involves efforts such as media relations, crisis management, event management, and Corporate Social Responsibility (CSR) campaigns. One of the main goals of PR is to shape and maintain a positive public image and highlight its strengths. A well-executed PR campaign can position a brand as a leader in its industry and build long-term relationships with customers, investors, and partners. It focuses not only on what a company says but also on how it is perceived by its audiences.

In a crisis, effective public relations can help a company manage communication, mitigate damage to its reputation, and maintain consumer trust. PR teams craft transparent and empathetic responses to negative situations, ensuring that the company remains credible and reliable. A study from the Public Relations Society of America (PRSA) found that **80% of companies with strong PR teams successfully recover from a crisis** and return to profitability within 1-2 years. **The Tata Group** is an exemplary model when it comes to successful public relations and reputation management in India. Known for its commitment to ethical business practices, the company has built trust with its stakeholders over decades. In 2008, when Tata Motors faced the challenge of relocating the Nano plant from Singur, West Bengal, its PR team was crucial in managing the crisis and communicating the company's position effectively to the public.

III. Integrating Marketing and PR for a Unified Strategy

While Marketing and PR have distinct roles, integrating them creates a powerful strategy for business success. By aligning marketing campaigns with PR initiatives, businesses can develop a consistent, unified brand message that resonates across all touchpoints. **A good example is Apple**, where their marketing campaigns (such as product launches) are always paired with strong PR efforts, including press events and media coverage, generating massive buzz and consumer interest. For example, a product launch can be enhanced by a well-planned PR campaign that generates media buzz and establishes credibility for the new offering. A marketing campaign can use positive PR coverage to reinforce messaging and drive consumer interest. Social media platforms offer an ideal space for this integration, as businesses can simultaneously share promotional content and engage in transparent, open communication with their audience.

In fact, according to a survey by the **American Marketing Association, 72% of marketers believe PR is an essential part of their marketing strategy.** For instance, when Tesla launches a new product, its marketing campaign is amplified by PR through media coverage, influencer endorsements, and CEO Elon Musk's personal brand, all contributing to increased product demand and customer loyalty.

Moreover, the integration of data analytics in both fields can lead to more efficient and effective strategies. Marketing data can provide insights into consumer behavior, helping PR professionals tailor their messaging to address specific concerns or interests. Similarly, PR efforts that focus on reputation management can improve brand perception, creating a favorable environment for marketing campaigns to succeed.

IV. The Impact of Marketing and PR on Business Success

The combination of effective marketing and strong public relations leads to a company's long-term success. **According to the 2019 Nielsen Global Corporate Sustainability Report, 66% of consumers** are willing to spend more on brands that are committed to positive social or environmental impact, reinforcing the significance of PR efforts.

Together, Marketing and PR not only contribute to immediate sales growth but also build a lasting brand reputation, customer loyalty, and market leadership. This emphasizes the critical role PR plays in building trust and customer relationships, which ultimately drive business growth.

V. CONCLUSION

In conclusion, Marketing and Public Relations are two essential pillars of any successful business strategy. While marketing focuses on promoting products and generating sales, PR is vital for building trust, credibility, and maintaining a positive image. By integrating these two disciplines into a unified strategy, companies can achieve sustainable growth, overcome challenges, and navigate the complexities of the modern business landscape. Ultimately, a strong synergy between Marketing and Public Relations ensures that businesses not only succeed in the marketplace but also build lasting relationships with their customers and stakeholders.

*****

Family Folio

Rudvik Karthikeya - Worldwide Book of Records

Master. Rudvik Karthikeya aged 1 year and 3 months , S/o of Mr. Lokesh R, Divisional Manager, PC Wing, Head Office, has been awarded by Worldwide Book of Records for identifying 240 items in 27 minutes.

"मन की खिड़की"

रीमा बैनर्जी
अधिकारी
एसएमई झारसुगुड़ा

सुबह–सुबह उठते ही खोली जब खिड़की,
शरीर और आत्मा ने जैसे आपस में यह बात की।
रात के सपने सुबह आँखों में उम्मीद बनकर समाई,
जैसे तितली ने फूलों पर अपनी रंगों की तिलक लगाई।
खिड़की ही सूरज की किरणों को मेरे घर पर बिखेरती है,
जैसे चन्द्रमा रात के इंतज़ार में अपनी रौशनी को समेटती है।
मैंने भी हर दिन के भाँति जैसे ही पर्दो को खिड़की से हटाया,
खुद के सामने एक नए सवेरे को चमकते हुए पाया।
कल के अधूरे काम और आज के नए लक्ष्य में हुई जमकर तकरार,
खिड़की ने भी नए अवसर को पहचानने की लगाई गुहार।
मन में नए उमंगों ने जमकर हलचल मचाई,
नए सवेरे को लेकर खिड़की भी कुछ कहने आई।
कहा नया दिन आया भाग्य में जब आज का सुर्योदय हुआ है,
यह अवसर सबको नहीं मिलता, समझो तुम्हारा भाग्योदय हुआ है।
अपने महत्वकांक्षाओं को नया पर दो, और नई उड़ान भरो,
अपने लक्ष्य को पहचानों और सपनों में तुम जान भरो।
अथक प्रयास कर गतिशील रहकर ही तुम सफल कहलाओगे,
मार्ग के काँटो को चुनकर ही अपने मंजिल को पाओगे।
मैं खिड़की हूँ, नित दिन तुम्हें जगाती हूँ,
तुम्हारे जीवन में हर रोज़ नई किरण मैं लाती हूँ।
तुम खिड़की के पट के साथ अपने मन के द्वार भी खोलो,
भूलकर छल कपट, इंसानियत की राह चुन मन की बात बोलो।
मैं खिड़की हूँ तुम्हारे साथ अनमोल रिश्ता अन्त तक निभाऊँगी,
हर दिन तुम्हें जगाने, नई उमंगो के साथ आऊँगी।
यदि बनना है जीवन में सफल और दृढ़ संकल्पी,
तो सुबह–सुबह घर के साथ खोले अपने मन और विचारों की खिड़की।

Banking Terminology made easy:

Bitcoin was created by Satoshi Nakamoto, a pseudonymous person or a team who outlined the technology in 2008. Bitcoin is a type of digital money / currency that only exists online. Imagine it like cash, but instead of holding it in your hand, it's stored in a digital wallet on your computer or phone. It enables direct transactions between users, secured by cryptographic technology and recorded on a transparent and immutable ledger known as the block chain.

Bitcoin can be bought from the www.bitcoin.com website using your credit / debit card or other payment method (Apple Pay, Google Pay etc.)

Here's how it works :

1. **No Physical Form:** Bitcoin doesn't have a physical form like coins or paper money. It's entirely digital.
2. **Decentralized:** There's no bank or government controlling Bitcoin. Instead, it's managed by a network of computers around the world.
3. **Blockchain:** This is a special kind of digital ledger that records all Bitcoin transactions. Think of it as a public book that everyone can see but no one can change.
4. **Anonymity:** When you use Bitcoin, you don't need to give out your personal information, which can make it more private than traditional payment methods.
5. **Limited Supply:** There's a fixed amount of Bitcoin (21 million), which means no one can just create more and cause inflation like with regular money.
6. **Bitcoin ATMs: Bitcoin:** ATMs are a way to get immediate access to cash using Bitcoins. Bitcoin ATMs do not operate like traditional ATMs. In order to make cash you have to sell your Bitcoin from the ATM.

People use Bitcoin for various reasons, like buying things online, investing, or sending money to others without needing a bank.

Goodbye Isn't Love Lost

Pradeep Tandon
Ex-Staff

As the sun dipped below the horizon, I sat alone in the park, watching children of my age play with their pets. My heart used to beat a bit faster, wishing for a playful pup who could break the lull and silence with its joyful barks. As an only child, the absence of siblings left me longing for a companion to fill the quiet spaces at home. I often wondered how my home would come to life with the pup's tiny paws imprinted in circles as it would chase its tail. Oh! And the gentle nudge of its wet nose against my hand. Heavenly!

In Moradabad, a town in Uttar Pradesh where I grew up, the streets were alive with the aroma of freshly made Indian snacks like Jalebis and Samosas. Confectioners kept their furnaces burning from dawn till dusk, and at night, the ashes offered warmth to the street dogs during the cold winters. Newborn puppies snuggled against their mother, struggling for milk. Their innocent quarrels over a scrap of food or an old shoe touched my heart. I was often tempted to take the most adorable one home. I'd coax them with food or fashion a wool noose to lead them. Sometimes, they followed, and I would beg my parents to let me keep them. Understanding my attachment, they allowed it, only to return the pups while I slept. But the next day, I was fueled with doubled-up enthusiasm to bring another one home.

One sultry afternoon, I was playing near our gate when a burly middle-aged man stopped his cycle. He held a cloth bag and approached me, pulling out a cute beige-spotted white kitten.

“Your father sent this for you,” he said, handing me the kitten.

I took the kitten, cradling her gently. "Really? Thank you!" I said, my voice full of excitement. I dashed inside to show my mother, but he was already gone when she came out to speak to the man. I was relieved he'd disappeared so quickly.

The kitten meowed softly, and I stroked her fur. "Furry, Furry," I murmured without thinking, and the name just stuck. "She's hungry, Mama," I said, looking up at my mother.

She took the kitten, a crease forming on her forehead. "Your father sent this? He didn't mention anything about a kitten to me."

"The man said it was from Papa," I explained, watching her closely.

"Hmm... Let's get her some milk," she replied, but her expression was still thoughtful.

Later, when my father came home, I ran to him, holding Furry close. "Papa, did you send her for me?" I asked, my eyes wide with hope.

He frowned, looking puzzled. "No, I didn't. Where did she come from?"

I pouted, ready to argue, but before I could say anything, he studied the kitten closely. His eyes narrowed slightly, and I could sense his suspicion growing. "Who brought her here?" he asked, his tone more serious now.

"A man on a cycle. He said you sent her," I explained, my excitement fading as confusion crept in.

Father rubbed his chin, his brows furrowing deeper. "That's odd... why would someone do that?" He glanced at Furry, then back at me, and I could see the wheels turning in his mind. Maybe someone was trying to get rid of an unwanted kitten born to their cat, he thought but kept that to himself.

I felt a pang of uncertainty. "Do you think... someone didn't want her?" I asked, my voice barely above a whisper.

Father sighed, his suspicion softening into a smile as he looked at me. "It's possible, son. Maybe they saw how much you love animals and thought you'd take good care of her."

"But... why didn't they just say that?" I asked, still puzzled.

He ruffled my hair and chuckled softly. "People do strange things sometimes. But it doesn't matter now. What matters is that she's with you. You'll take good care of her, won't you?"

“Promise!” I said, grinning ear to ear, my earlier confusion melting away as I hugged Furry closer.

We fed Furry milk, and she grew like a snowball. Before long, she had transformed into a cute, furry cat, already adept at catching mice. It was no surprise that our house soon became rodent-free.

Unattended milk was never safe in the house, so we always had to ensure it was out of her bounds. She also had the nasty habit of pooping in dark, unused corners of the house, unlike dogs, which typically don't soil indoors. I was the one who had to clean it up, and I did so reluctantly, fearing that if I didn't, my parents might decide to get rid of her.

She would roam about the entire day in search of her prey. She would climb trees and walls with great ease. Sometimes, dogs would chase her on the ground, and she would dodge them only to climb the nearby tree.

In the stillness of chilly nights, she would purr while burrowing into the quilt at the foot of my bed. Her silken fur, warm against my skin, was the lullaby that drew me into sleep. By the early hours, she would be gone, but the memory of her comforting presence lingered long after.

After school, I would race home, whistling her name when I reached the gate. No matter where she was, Furry would greet me at the door, her tail swishing in eager anticipation of our time together. I'd lift her, hold her close to my chest, and nuzzle my cheeks against her soft fur. Purring gently, she would wind around my legs, moving in and out between them. I would offer her a few crumbs before she would quietly disappear.

As Furry grew, she became part of our daily lives. I'd talk about her antics at school with my friends, and one day, during lunch, Mohnish grinned at me as we talked about Furry. "My dad always says, 'If you love something, let it go. If it comes back to you, it's yours forever. If it doesn't, it was never meant to be yours.' Do you think Furry would return if you let her wander off?"

"Of course," I laughed, brushing off his question. "She's always waiting for me when I get home."

But later, as I watched Furry disappear into the bushes, Mohnish's words echoed in my mind. I couldn't shake the thought. What if, one day, she didn't come back? The idea tightened my chest, but I pushed it aside, trying to hold on to my certainty.

Days passed, and my companionship with Furry was five years old when my father received his transfer orders. We had to move, and the truck loaded all our household goods. I had meticulously gathered everything that belonged to Furry—her towel,

clothes, soap, comb, bed, and food dishes. My father called me as the truck driver started the engine. I searched for Furry and whistled for her. She was sitting in a tree, but when I called her, she strangely climbed even higher. I called out desperately, pleading with her to come down, but she refused. My father walked over to me. 'Papa, just five more minutes. She'll come down,' I begged, but I whistled again, louder this time, my voice breaking as I called her name. But Furry just sat there, her eyes meeting mine with a calmness that pierced through my panic. She wasn't coming down. Not today. Not ever.

My father, frustrated, dragged me toward the car, which was to trail the truck. I broke down, crying out, 'Furry, please come down. You will be left forever!' As I sobbed with hiccups, gasping to breathe, I felt a gentle pat on my head. With understanding in his voice, the truck driver said, "You know, Beta, cats have a way of choosing where they belong. Sometimes, it's not about us at all."

My emotions overwhelmed me; a lump formed in my throat, and my mouth went dry. I could only see the tree where Furry sat; everything else blurred into nothingness. Like Furry, it felt like a part of me was left clinging to that tree. As the tree vanished from view, a hollow ache filled my chest. I had never imagined leaving her behind. Mohnish's father's words echoed in my mind, and for the first time, I truly understood them. Furry had chosen her place. Maybe Mohnish's father was right—if you love something, you must let it go. My heart ached, but deep down, I knew she was where she belonged. She wasn't mine to keep, but no love was lost between us.

As the truck rumbled on, I called out to her one last time. My voice grew weaker with each call, fading into a mumble until only hiccups were left. As slumber wrapped me in its tender embrace, the lesson she left behind lingered in my mind: sometimes, loving means knowing when to say goodbye.

*****

Answers to the SU-DO-KU, Simple Riddles and Puzzle on page 64

SU-DO-KU

4	2	9	1	8	6	7	5	3
6	3	7	2	5	4	8	1	9
1	8	5	7	3	9	6	2	4
5	7	6	3	4	1	9	8	2
2	4	1	9	7	8	5	3	6
8	9	3	5	6	2	1	4	7
3	5	2	8	9	7	4	6	1
9	1	4	6	2	5	3	7	8
7	6	8	4	1	3	2	9	5

Simple Riddles

1. There are 13 people and only 12 months. So, there must be atleast 2 people who have their birthday in the same month.
2. We need to pick 4 socks to ensure 2 are of the same colour. If we take out 3, it is possible we get 1 each of red, blue and green. The fourth one must be one of the three colours.

Puzzle

The voucher is hidden in the book called **Space Travels.**

सिख शासको का हिंदी प्रेमः एक विवेचना

शशि कांत पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

आज विज्ञान और तकनीकी के इस आधुनिक युग में रहते हुए भी मनुष्य अपने समाज और सदियों से चली आ रही अपनी परम्पराओं से दूर नहीं रह सकता। इन परम्पराओं और अपनी संस्कृति को संजोये रखने के लिए मानव समाज को एक भाषा की आवश्यकता होती है, जिससे वह इन धरोहरो को अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंप सके।

उत्तर भारत के सभी मानव समुदायों ने हिंदी को सदियो से अपने आचार–विचार की भाषा बनाया हुआ है और इतिहास साक्षी है कि सिख–समुदाय भी इसका अपवाद नहीं रहा। यद्यपि सिखों ने पंजाबी भाषा को अपनाया हुआ है, जिसकी अपनी अलग लिपि है– गुरुमुखी, तथापि उनका हिंदी प्रेम आज भी कम नहीं हुआ है। आज भी सिख देश की प्रमुख भाषा हिंदी की मुख्य–धारा से जुड़े हुए हैं। डॉ. हरिभजन सिंह, डॉ. रत्नसिंह जग्गी, डॉ. जसवंतसिंह, डॉ. महीपसिंह, डॉ. सेवासिंह, डॉ. जगदीशसिंह, श्रीमती गुरुशरण जग्गी, श्री नानकसिंह, श्री जसदेवसिंह, श्री राजिंदरसिंह बेदी आदि अनेक विद्वान हिंदी जगत में अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। सरदार अध्यापक पूर्ण सिंह को कौन हिंदी प्रेमी नहीं जानता, जिन्होंने केवल 6 निबंध लिखकर ही हिंदी साहित्य में एक उच्च स्थान पा लिया।

हिंदी प्रेमी सिख शासकों का वर्णन करने से पहले सिख गुरुओं के विषय में यहां कुछ कहना अधिक युक्तसंगत होगा क्योंकि पूरा सिख धर्म और सिख समाज सिख गुरुओं के जीवन दर्शन पर ही टिका हुआ है। सिखों का इतिहास गुरु नानकदेव से शुरू होता है यह सिखों के आदिगुरु और सिख संप्रदाय के प्रवर्तक थे। गुरु नानक देव कबीर की ही भांति निर्गुण संत कवि थे इन्होंने हिंदी, ब्रज व खड़ी बोली और पंजाबी में कविता की। कहा जाता है गुरु नानक देव जहां भी गए वहां अपने उपदेश हिंदी में ही दिए। डॉ रतनसिंह जग्गी के शब्दों में 'गुरु नानक का व्यक्तित्व एक अद्भुत व्यक्तित्व था। वह नबी भी थे और लोकनायक भी और उपदेशक भी, वह कवि भी थे और परमात्मा के भक्त भी वह गायक भी थे और पर्यटक भी उनकी साधना में अपार शक्ति थी।'

गुरु नानक देव के पश्चात सिख धर्म की गद्दी संभालने वाले लगभग सभी गुरुओं ने हिंदी को अपनी कविता के लिए अपनाया। इतना ही नहीं पंजाब में हिंदी काव्य से प्रसारित एवं हिंदी कवियों को प्रोत्साहित करने का श्रेय मुख्यतः सिख गुरुओं को ही है। उन्होंने स्वयं ब्रजभाषा को अपनी वाणी का माध्यम बनाया। पंजाबी भाषा के पूर्व कालीन भक्त कवियों के हिंदी रचनाओं का प्रचार पंजाब में किया। पंजाबियों को अपने दरबार में आश्रय दिया तथा अपने प्रतिभा संपन्न पंजाबी सिख भाई गुरदास को हिंदी में काव्य रचना करने के लिए प्रोत्साहन दिया। सभी सिख गुरुओं की कविताएं 'गुरुग्रंथ साहिब' में संग्रहीत हैं।

सिखों के दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह एक महान योद्धा और हिंदी संस्कृति के रक्षक होने के साथ–साथ उच्च कोटि के कवि और बड़े ज्ञानी थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें सम्मान देते हुए कहा है कि उनमें कवि की संवेदना सहृदय की ग्रहण शीलता, वीर का उत्साह और संत की अनावृत्त दृष्टि का अद्भुत मेल है। गुरु गोबिंद सिंह अनेक कवियों के आश्रयदाता थे। इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना करवाई। उनकी अपनी रचनाएं दशम ग्रंथ में संग्रहीत हैं जो पंजाब के हिंदी साहित्य की एक विशेष धरोहर है। गुरु गोविंद सिंह के इस ग्रंथ में अधिकांश रचनाएं हिंदी में है। इन्होंने हिंदी, ब्रज, पंजाबी और फारसी में कविता की। इन तीनों ही भाषाओं में किया हुआ उनका सृजन कार्य गुण एवं परिमाण की दृष्टि से अपना विशेष स्थान रखता है।

इन सब बातों का प्रभाव धर्म परायण सिख संप्रदाय पर पड़ा और सिख शासन और जागीरदार भी इसे अछूते नहीं रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले पंजाब में छोटी–बड़ी अनेक रियासतें थी। जिनमें पटियाला, कपूरथला और जींद प्रमुख थी। हिंदी के बहुत से कवियों को पटियाला, नाभा, जींद और कपूरथला रियासतों के सिख नरेशों ने आश्रय दिया। उनके दरबारों में हिंदी के शासक स्वयं तो हिंदी में कविता करते ही थे, साथ में अपने दरबार में अनेक हिंदी कवियों को आश्रय देकर हिंदी के प्रचार–प्रचार में भी सहायता लेते थे इन

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
सिंडिकेट Syndicate

हिंदी प्रेमी सिख संतों का परिचय यहां दिया जा रहा है–

महाराजा नरेंद्र सिंह – ये महाराजा कर्म सिंह के पुत्र थे और सन 1846 में पटियाला के सिंहासन पर बैठे। ये पंजाबी, उर्दू, फारसी, हिंदी और संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। हिंदी कविता में इनकी विशेष रुचि थी। अनेक विद्वानों के सहयोग से इन्होंने पटियाला में एक कवि दरबार की स्थापना की। यह भी कहा जाता है कि इन्होने गुरु गोविंद सिंह जी के अधूरे ग्रंथ "महाभारत" को अपने दरबारी कवियों के सहयोग से पूरा कराया। इनकी कविता का एक नमूना देखिये–

"सुन नीको न नेहू लगावनो है,
फिर जो पै लगै तो निबाहनो है।
अति आंखी है प्रीति की रीति सखी,
नही जोश को रोस सुहावनो है।
चल चंद्रमुखी ब्रज चंद मिलौ,
तुमको हमे का सुमझावनो है।
दिन चार को रूप या पाहुने है,
फिर तो पै रहोगे उराहुनो है।"

महाराजा राजेंद्र सिंह – ये पटियाला के महाराजा महेंद्र सिंह के औरस पुत्र तथा महाराजा नरेंद्र सिंह के पौत्र थे। पिता की असामयिक मृत्यु के कारण इन्हें नाबालिग होने पर भी राज का भार सम्भालना पड़ा । अपने 28 वर्ष के छोटे से जीवन काल में ही इन्होने हिंदी में अनेक कविताएं लिखीं। नीचे इनकी एक कविता दी जा रही है–

कोई दम याद करोगे, हम तो रमते फकीर।
न कोई अपना नहीं कोई बेगाना, जग सो रहा रन सीर।
हाथ में सोंटा बगल में कूंडी, घोटेंगे जमुना के तीर।
दो भाइयो में खूब बनी थी, रह जाएगा रणवीर।

महाराजा रिपुदमन सिंह – नाभा के महाराजा हीरासिंह इनके पिता थे। ब्रजभाषा के कुशल कवि और नाभा रियासत के न्यायविद–प्रशासक कान्ह सिंह से इन्होने गुरुवाणी और काव्य की शिक्षा प्राप्त की। सन 1906 से 1908 में नाभा की राजगद्दी सम्भाली। ये दबंग स्वभाव के थे। वे शुरु से ही अंग्रेजों के खिलाफ कांग्रेसी नेताओं का साथ देते रहे और इसीलिए सन 1923 में अंग्रेजों ने इन्हें राजगद्दी से उतार कर पंजाब से निकाल दिया था। वे कुछ दिन देहरादून में रहे फिर कोडाई कनाल चले गए, जहां इनका देहांत हो गया। ये रिपुनाशक हरि के नाम से हिंदी में कविता किया करते थे। इनकी कविता का एक रूप–

"जाहि को अंत न किन हूं पावा।
ब्रह्म सनकादिक ने जाको नेति नेति कह गावा।
शंकर, शेष, सुरेश सकल ने इन चित्र है जिन्ह ध्यावा।
रिपुनाशक हरि वारि कलि में, सो तनु धरि प्रकटावा।"

राजा फतेह सिंह आहलूवालिया – ये सन 1802 में कपूरथला के सिंहासन पर बैठे। ये महाराज रणजीत सिंह के समकालीन थे। सन 1837 में इनका देहावसान हुआ। ये हिंदी और पंजाबी के उत्तम कवि थे। इनकी भावरत्नमाला नामक हस्तलिखित पुस्तक महाराजा पटियाला के मोतीबाग पुस्तकालय में सुरक्षित है। इस पुस्तक से ली गई एक अलंकृत कविता का मनोहारी रूप देखिये–

"सीतल अमल सुधा सरस स्वच्छ,
चित्त की तपन चितवत ही विलात है।
फते मृगराज कवि भनत सुवास वंत,
कर परसे ते सब गात सियरात है।"

कुंवर विक्रम सिंह – इनका जन्म सन 1835 में हुआ। इनके पिता राजा निहाल सिंह आहलूवालिया कपूरथला के राजा थे। ये कट्टरवादी सिख थे और सभी गुरुओ की वाणी में पूर्ण आस्था रखते थे। ये समाज–सुधारक तथा धर्म–प्रचारक होने के साथ ही हिंदी के एक अच्छे कवि और लेखक भी थे। सिखों के आदि गुरु गुरुनानक देव के प्रति लिखी एक कविता का उदाहरण देखिये–

भूमि सदा सिर भार सहै, पुनि गैन कहां सद शन्य रहावै।
चांद बढै और घटै निस वासर, सूर सदा तन ताप सहावै।
तीजहूं देव उपाधि भरे, हरि विक्रम को उपमा ठहरावै।
श्री गुरुनानक देवहुं की, उपमा बिन ताहिं नहीं बन आवै।

सरदार लहनासिंह मजीठिया – ये सरदार देसासिंह मजीठिया के पुत्र तथा मजीठिया के जागीरदार थे। वे हिंदी और पंजाबी के बड़े अच्छे कवि थे। इन्होंने बहुत हिंदी कविताएं लिखीं। एक उदाहरण –

तेग, तीर, तवरो, तुपक, सिर, हिय, कर, भुज, भूर।
तुव, कर, करत, अरीनि, के भेद, वेध, कर, चूर।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि सिख शासक न केवल हिंदी के हिमायती ही थे वरन इनके द्वारा रचित साहित्य भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं के समकक्ष ठहरता है। हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में जहां सिख गुरुओं, उनके अनुयायियों तथा अन्य कवियों का एक विशेष स्थान है वहां पंजाब के सिख राजाओं तथा रईसों ने भी कोई कम भाग नहीं लिया। हिन्दी साहित्य इन सिख नरेशों की हिन्दी सेवा के लिए सदैव ऋणी रहेगा।

छोटा कार्य, बड़ा प्रभाव

सीमा
प्रबंधक
क्षे.का. मध्य दिल्ली

कभी अटेन्डर! परिचर! कार्यालय सहयोगी!
कभी प्यून मैं कहलाता हूँ, मैं सदा मुस्कराता हूँ।
दिनभर दौड़ता यहां से वहां काम को पूजा,
शाखा को मंदिर, मैं मानता हूँ।

मानसिकता हर ग्राहक की जानता हूँ,
किसी को सर! किसी को हजूर!
किसी को मालिक! किसी को भाई!
किसी को मैम, किसी को माताजी कह,
दिल उनका, जीत जाता हूँ।
प्यून मैं कहलाता हूँ सदा मुस्कराता हूँ।

लॉकर रूम में गिरा झुमका,
ग्राहक मैडम को बुला, जब से लौटाया है।
पीठ थपथपाई सभी ने मेरी हीरो मैं कहलाया हूँ।

ईमानदारी से मेरी ग्राहकों संग भरोसे की नींव,
मजबूत हुई बैंक की हर योजना उन्हें बताता हूँ।
प्यून वसूली के कुछ गुर, मैं भी अपनाता हूँ
प्यून मैं कहलाता हूँ सदा मुस्कराता हूँ।

माता पिता की दी सीख ने – जीवन बदल दिया
कोई भी काम छोटा नहीं होता।
ईमानदारी और मेहनत सदैव नई राह बनाते हैं ।
आज मैं, लिपिक के पद पर कार्यरत हूँ,
सोच सोच इतराता हूँ।

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

पंजाब – अनुशंसित पर्यटन स्थल

श्वेता श्रीवास्तवा
प्रबंधक
वैश्विक व्यापार प्रसंस्करण केंद्र
मणिपाल

पंजाब भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में एक सीमावर्ती राज्य है, जो अपनी कृषि और वीरभूमि के लिए जाना जाता है। पंजाब क्षेत्र सबसे प्रारंभिक शहरी समाजों में से एक, सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल के रूप में जाना जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े क्षेत्र का हिस्सा बनते हुए, पंजाब राज्य की सीमा उत्तर में जम्मू–कश्मीर और पूर्व में चंडीगढ़ से घिरा हुआ है, उत्तर और उत्तर–पूर्व में हिमाचल प्रदेश स्थित है, दक्षिण और दक्षिण–पूर्व में हरियाणा और दक्षिण–पश्चिम में राजस्थान लगती है; पश्चिम में यह समान नाम वाले पाकिस्तानी प्रांत पंजाब के साथ एक अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करता है और इस तरह इसे कभी–कभी पूर्वी पंजाब या भारतीय पंजाब के रूप में संदर्भित किया जाता है। राज्य का क्षेत्रफल 50,362 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 1.53% है, जो इसे 19वां सबसे बड़ा भारतीय राज्य बनाता है। पंजाब जनसंख्या के हिसाब से 16वां सबसे बड़ा भारतीय राज्य है, जिसमें 23 जिलें शामिल हैं। गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली पंजाबी, राज्य की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली और आधिकारिक भाषा है। पंजाब में कई धार्मिक पर्यटक आते हैं, क्योंकि राज्य सिख धर्म के कुछ सबसे पवित्र स्थानों का घर है, जिनमें हरमंदिर साहिब और पांच पंज तख्तों में से तीन शामिल हैं। इनके अलावा, पंजाब में कई खूबसूरत और दिल को छू लेने वाले पर्यटन स्थल हैं, जिनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार है:

1. वाघा बॉर्डर समारोह :

पंजाब के अमृतसर में वाघा बॉर्डर समारोह भारतीय सीमा सुरक्षा बल और पाकिस्तान रेंजर्स द्वारा किया जाने वाला एक सैन्य अभ्यास है। सैनिक इसे पूरी गंभीरता से निभाते हैं। पाकिस्तान के लाहौर से 22 किलोमीटर और भारत के अमृतसर से 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित वाघा बॉर्डर, ग्रैंड ट्रंक रोड के साथ–साथ भारत और पाकिस्तान की सीमाओं के बीच की सीमा को चिह्नित करता है। हर दिन आयोजित होने वाला वाघा बॉर्डर समारोह या बीटिंग रिट्रीट समारोह यहाँ का मुख्य आकर्षण है। हर शाम, सूर्यास्त से ठीक पहले, भारतीय और पाकिस्तानी सेना के सैनिक इस सीमा चौकी पर 30 मिनट तक सैन्य सौहार्द और शोमैनशिप का प्रदर्शन करने के लिए मिलते हैं।

इसकी शुरुआत दोनों पक्षों के सैनिकों द्वारा परेड से होती है। जैसे ही सूरज ढलता है, लोहे का गेट खोल दिया जाता है, गेट के दोनों तरफ एक पैदल सैनिक सावधान की मुद्रा में खड़ा होता है। इस समारोह में अंतर्राष्ट्रीय द्वार बंद करना और दोनों देशों के झण्डे उतारना शामिल है।

2. गोल्डेन टेंपल [स्वर्ण मंदिर]:

स्वर्ण मंदिर जिसे हरमंदिर साहिब या दरबार साहिब या स्वर्ण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, भारत के पंजाब राज्य के अमृतसर शहर में स्थित एक गुरुद्वारा है। स्वर्ण मंदिर आध्यात्मिक रूप से सिख धर्म का सबसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। स्वर्ण मंदिर न केवल सिखों का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, बल्कि यह मानवीय भाईचारे और समानता का प्रतीक भी है। स्वर्ण मंदिर सभी लोगों, सभी धर्मों और क्षेत्रों के लोगों के लिए पूजा का एक खुला घर है। इसमें चार प्रवेश द्वारों के साथ एक वर्गाकार योजना है और कुंड के चारों ओर एक परिक्रमा पथ है। गुरुद्वारे के चार प्रवेश द्वार समानता में सिखों की आस्था और सिख दृष्टिकोण का प्रतीक है कि सभी लोगों का उनके पवित्र स्थान में स्वागत है। यह

परिसर गर्भगृह और कुंड के चारों ओर इमारतों का एक संग्रह है। इनमें से एक अकाल तख्त है, जो सिख धर्म के धार्मिक अधिकार का मुख्य केंद्र है। इमारत की दूसरी मंजिल पर स्थित शीश महल में दर्पण–कला के डिज़ाइन हैं, जिसमें दर्पण के छोटे–छोटे टुकड़े हैं, जिन्हें दीवारों और छतों में जड़ा गया है, और फूलों की डिज़ाइनों की सजावट के साथ उभारा गया है। परिसर की दर्शनी देवरी संरचना के दरवाजों पर हाथीदांत का काम देखा जा सकता है। अतिरिक्त इमारतों में एक घंटाघर, गुरुद्वारा समिति के कार्यालय, एक संग्रहालय और एक लंगर शामिल हैं–निःशुल्क सिख समुदाय द्वारा संचालित रसोई जो बिना किसी भेदभाव के सभी आगंतुकों को शाकाहारी भोजन प्रदान करती है। गुरुद्वारा परिसर को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया है और इसका आवेदन यूनेस्को की अस्थायी सूची में लंबित है।

3. जलियांवाला बाग :

जलियाँवाला बाग अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के पास का एक छोटा सा बगीचा है, जहाँ 13 अप्रैल 1919 को ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर के नेतृत्व में अंग्रेज़ी फौज ने गोलियां चला के निहत्थे, शान्त बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैकड़ों लोगों को मार डाला था और हजारों लोगों को घायल कर दिया था। इस स्मारक में लौ के रूप में एक मीनार बनाई गई है जहाँ शहीदों के नाम अंकित हैं। वह कुआँ भी मौजूद हैं जिसमें लोग गोलीबारी से बचने के लिए कूद गए थे। दीवारों पर गोलियों के निशान आज भी देखे जा सकते हैं। जलियांवाला बाग हत्याकांड सिखों के सबसे पवित्र शहर अमृतसर के हृदय स्थल में 13 अप्रैल 1919 को खालसा पंथ की जयंती (वैसाखी दिवस) पवित्र दिन पर हुआ था।

4. दुर्गियाना मंदिर :

सरोवर के मध्य में स्थित श्री दुर्गियाना मंदिर पंजाब प्रांत के पवित्र शहर अमृतसर में हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण और विश्व प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, जहाँ प्रतिदिन हजारों भक्त पूजा–अर्चना करने आते हैं। दुर्गियाना मंदिर, दुर्गा तीर्थ और शीतला मंदिर एक प्रमुख हिंदू मंदिर है, लेकिन इसकी वास्तुकला सिख धर्म के स्वर्ण मंदिर के समान है। पुल मंदिर तक पहुँचने का मार्ग प्रदान करता है। इस मंदिर का नाम माँ दुर्गा के नाम पर रखा गया है, जो यहाँ की प्रमुख देवी हैं और उनकी पूजा की जाती है। प्राचीन काल में जब सैनिकों को युद्ध के लिए जाना होता था, तो वे जाने से पहले माँ दुर्गा की पूजा करते थे और उनसे जीत के लिए आशीर्वाद माँगते थे। इस मंदिर की आधारशिला पंडित मदन मोहन मालवीय ने 1924 में दशहरा के दिन रखी थी। मुख्य मंदिर के गुंबदों और उसके आस–पास की दीवारों के ऊपरी हिस्से को सोने से तराशा गया है। मुख्य मंदिर के अंदर केंद्रीय गर्भ गृह में खड़ी मुद्रा में श्री लक्ष्मी–नारायण की मूर्तियां तथा उनके एक ओर श्री राम दरबार तथा दूसरी ओर श्री राधा–कृष्ण जी की मूर्तियां, श्री गिरिराज जी महाराज के साथ अद्भुत दिव्य छटा

प्रस्तुत करती हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम अश्वमेध यज्ञ के दौरान यहां आए थे। इसके साथ ही सूर्य देव के पौत्र राजा इश्वाकुओं ने भी इस भूमि पर अनेक यज्ञ किए थे।

5. राम तीर्थ मंदिर :

अमृतसर शहर में भगवान वाल्मीकि तीर्थ स्थल है, जिसे राम तीर्थ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि स्थान ऋषि वाल्मीकि का आश्रम है, वर्तमान स्मारक के केंद्र में ऋषि वाल्मीकि की 8 फुट ऊंची, 800 किलोग्राम वजनी सोने की परत चढ़ी एक विस्मयकारी मूर्ति है। इस दिव्य स्थल में दोनों छोर पर प्रवेश द्वार, – एक ऋषि वाल्मीकि को समर्पित है और दूसरी कुटिया माना जाता है कि यहीं पर माता सीता ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया था, जिनका पालन–पोषण ऋषि ने बड़े ध्यान से किया और मार्गदर्शन किया। यह स्थान एक पौराणिक समय मशीन की तरह है जो आपको रामायण के युग में वापस ले जाती है। राम तीरथ मंदिर का व्यापक नवीनीकरण हुआ है, जिससे इसका आकर्षण और भी बढ़ गया है। यहां एक बड़ा पवित्र सरोवर भी है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसे स्वयं भगवान हनुमान ने खोदा था। पूरे भारत से लोग खासकर पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पवित्र स्नान के लिए आते हैं। इसके परिसर में, एक भव्य भक्त हॉल भी मिलेगा जिसमें 5,000 भक्तों के बैठने की व्यवस्था है, एक समृद्ध संस्कृत पुस्तकालय और पुरातनता के अवशेषों से भरा एक संग्रहालय है।

6. हरिके वेटलैंड :

पंजाब के तरनतारन जिले में गांव हरिके सतलुज नदी के उत्तरी तट पर स्थित है जो ब्यास नदी और सतलुज नदी के संगम के बहुत करीब है। यह अमृतसर से 94 कि.मी., जालंधर से 67 कि.मी. और लुधियाना से 80 कि.मी. दूर स्थित है। हरिके पक्षी अभयारण्य, जिसे हरि–के–पटन के नाम से भी जाना जाता है, उत्तरी भारत के सबसे बड़े आर्द्रभूमियों में से एक है जहां साइबेरिया, रूस, कजाकिस्तान और अन्य कम तापमान वाले क्षेत्रों से लाखों पक्षी अक्टूबर के मध्य से दिसंबर तक यहां आते हैं और मार्च तक यहां रहते हैं। हरिके वेटलैंड, मक्खू (फिरोजपुर) रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड हरिके शहर से 10 किमी दक्षिण में स्थित है, जो राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा फिरोजपुर, फरीदकोट और भटिंडा से जुड़ता है। इस गांव को 1390 के दशक में जैसलमेर

के राव जैसल के वंशज हरि राव ने बसाया था। पहले यह यात्रियों के लिए नदी पार करने का एक महत्वपूर्ण क्रॉसिंग प्वाइंट था। यहां तक कि सिख उपनाम हरिका की उत्पत्ति भी हरि राव से हुई है। हरिका जनजाति अधिकतर बरनाला, पटियाला और संगरूर जिलों में बसी हुई है। ब्यास नदी के साथ इसके संगम के नीचे सतलुज नदी पर बनाया गया हेडवर्क्स और बनाया गया जलाशय, जो हरिके झील और विस्तारित आर्द्रभूमि का निर्माण करता है, एक उद्देश्यपूर्ण सिंचाई और पेयजल आपूर्ति के लिए हेडवर्क्स परियोजना है, राजस्थान में विशाल इंदिरा गांधी नहर को इसी स्रोत से पानी मिलता है।

7. विभाजन संग्रहालय :

विभाजन संग्रहालय अमृतसर में ऐतिहासिक टाउन हॉल भवन में स्थित है, जो स्वर्ण मंदिर से 5–7 मिनट की पैदल दूरी पर है। अपने मेहराबदार बरामदों, वेनिस के शीशे वाले दरवाजों, खूबसूरत फ़र्श की टाइलों और ऐतिहासिक घंटाघर के साथ, टाउन हॉल विभाजन संग्रहालय के लिए एक उपयुक्त स्थान है। यह हाल ही में पुनर्निर्मित हेरिटेज प्लाज़ा में स्थित है। विभाजन संग्रहालय एक कथात्मक कहानी के साथ विभाजन को व्यापक रूप से प्रस्तुत करता है जो विभाजन से पहले के समय से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन, अलग देश की शुरुआती मांगों और अंततः

विभाजन और उसके परिणामों तक बढ़ता है। एक मल्टी–मीडिया अनुभव, संग्रहालय 14 दीर्घाओं में स्थापित ऑडियो–विजुअल स्टेशनों के माध्यम से उन लोगों का भी दस्तावेजीकरण करता है, जिनकी आवाज़ इतिहास के पन्नों में खामोश कर दी गई है। वर्तमान में संग्रहालय में 100 से अधिक साक्षात्कार चल रहे हैं। विभाजन संग्रहालय को मिली कलाकृतियों में वे चीजें शामिल हैं जो लोगों द्वारा लाई गई व्यावहारिक उपयोग की थीं और उनके लिए भावनात्मक रूप से मूल्यवान थीं। बर्तनों, ट्रंकों और कपड़ों से लेकर शादी की साड़ी, गहनों के डिब्बे और टिन के डिब्बे तक, संग्रहालय में विभिन्न और अलग–अलग पृष्ठभूमि के लोगों से संबंधित विभाजन की कलाकृतियाँ हैं।

8. गुरुद्वारा नानकसर जगराओं :

गुरु गोविंद सिंह के संस्मरण के रूप में प्रसिद्ध, गुरुद्वारा नानकसर जगराओं लुधियाना में नानकसर सरोवर के किनारे स्थित है। यह गुरुद्वारा लुधियाना में घूमने की जगह में सबसे मनोरम जगह है, जहां कई पर्यटक लुभावने दृश्यों का आनंद लेने आते हैं। यह भारत के सबसे प्रसिद्ध स्थानों में से एक है और साल भर चलने वाला पर्यटन स्थल है। नानकसर की पवित्र

शुरुआत 100 साल पहले एक साधारण झोपड़ी के रूप में घने जंगल के बीच अपने प्राकृतिक परिवेश से अभिभूत हुई थी। इस स्थान को विशेष रूप से पवित्र संत बाबा नंद सिंह जी द्वारा चुना गया था क्योंकि यह एक आध्यात्मिक आश्रय स्थल था जहाँ कोई व्यक्ति दुनिया के बहकावे से बचकर नाम सिमरन के एकमात्र खजाने पर ध्यान केंद्रित कर सकता था। बाबा नंद सिंह जी का जन्म शेरपुरा गाँव, तहसील जगरांव, जिला लुधियाना में हुआ था। बचपन से ही बाबा नंद सिंह जी अत्यंत धार्मिक थे तथा भक्ति–इबादत के प्रति उनकी तीव्र इच्छा ने उन्हें सभी सांसारिक बंधनों से दूर कर दिया तथा केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पाठ के माध्यम से श्री गुरु नानक देव जी के पवित्र नाम का ध्यान करने में ही व्यस्त रहा।

9. कपूरथला (बगीचों का शहर) :

इतिहास और संस्कृति से सराबोर कपूरथला हर किसी के लिए एक आकर्षक जगह है। पर्यटक कपूरथला में आश्चर्यजनक वास्तुकला और पंजाब की संस्कृति से मंत्रमुग्ध हो सकते हैं। अपनी डिज़ाइन और आकर्षक उद्यानों से पर्यटक का ध्यान खींचने वाली अद्भुत इमारतों से भरा कपूरथला हर इतिहास प्रेमी के लिए एक शानदार जगह है। इस शहर को अक्सर 'पंजाब का पेरिस' कहा जाता है और इसे पंजाब में घूमने के लिए सबसे आकर्षक जगहों में से एक माना जाता है। यहाँ की वास्तुकला स्मारकों के निर्माण में फ्रेंच और इंडो–सरसेनिक डिज़ाइन के तत्वों को शामिल करने के लिए प्रसिद्ध है। कपूरथला में प्रकृति प्रेमी शालीमार गार्डन में आराम से टहलने का आनंद ले सकते हैं। यहाँ होली, दिवाली, लोहड़ी और बैसाखी के त्यौहारों का जीवंत उत्सव मनाया जाता है, भारत के सभी प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ, कपूरथला अमृतसर में राजा सांसी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। जगतजीत पैलेस, एलीसी पैलेस और जगतजीत क्लब के शानदार निर्माण से यह सभी को आकर्षित करता है।

10. पठानकोट :

पठानकोट पंजाब में स्थित एक शहर है, जिसकी पश्चिमी सीमा कांगड़ा और डलहौजी की तलहटी में पाकिस्तान से लगती है। चक्की नदी के पास से गुजरते हुए पठानकोट, पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा से सटा और पंजाब, हिमाचल प्रदेश और जम्मू–कश्मीर के मिलन बिंदु पर स्थित इस शहर ने विभिन्न प्राकृतिक परिदृश्यों और अपनी शांत हरी–भरी सुंदरता और

समृद्ध ऐतिहासिक आकर्षणों के आधार पर कई पर्यटकों को आकर्षित किया है। पठानकोट कई शताब्दियों तक शॉल और लोई बुनाई उद्योगों के लिए भी जाना जाता था। पठानकोट का अपना रेलवे स्टेशन है जो भारत के अधिकांश प्रमुख रेलवे स्टेशनों से जुड़ा हुआ है, और यह डलहौजी, धर्मशाला, कांगड़ा, मनाली और जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्सों के आसपास के क्षेत्रों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बनाता है। पठानकोट में वर्तमान में रक्षा बलों–भारतीय सेना और भारतीय वायु सेना का बेस है। पठानकोट शहर एक तरफ शानदार शिवालिक पर्वतमाला और दूसरी तरफ दुर्जेय हिमालय से घिरा हुआ है। शाहपुर कंडी किला और नूरपुर किला की ऐतिहासिक संरचनाएँ पठानकोट में घूमने के लिए प्रमुख स्थानों में से एक हैं। मुक्तेश्वर मंदिर, काठगढ़ मंदिर और नागिनी मंदिर जैसे कई विविध पूजा स्थलों के कारण यह एक धार्मिक स्थल के रूप में भी प्रतिष्ठित है। पर्यटक रंजीत सागर बांध की सुंदरता को भी निहार सकते हैं जो मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। अप्रैल से अक्टूबर के समय में पठानकोट का मौसम बेहद सुहावना होता है। इस शहर में घूमने का असली आनंद बैसाखी और लोहड़ी के

त्यौहारों के दौरान है, जो पठानकोट शहर को उत्सव के उत्साह से भर देते हैं।

11. पटियाला :

पंजाब राज्य का चौथा सबसे बड़ा शहर, पटियाला स्वर्ण भूमि के दक्षिण–पूर्व में बसा हुआ है। पटियाला की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें मजबूत हैं, जो वास्तुकला के चमत्कारों और सांस्कृतिक विरासत से घिरा हुआ है और साथ ही पंजाब की मूल परंपराओं की खोज के लिए एक पसंदीदा गंतव्य है। पटियाला कभी एक पूर्ववर्ती रियासत थी और इसलिए यहाँ कई वास्तुकला के चमत्कार हैं जो मुगल और राजपूत वास्तुकला का मिश्रण हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पटियाला घराने की जड़ें यही में हैं। लोकप्रिय संस्कृति में, यह शहर अपने 5 पी के लिए प्रसिद्ध है – पटियाला शाही पग, (एक प्रकार का सिर का कपड़ा जो पारंपरिक रूप से सिखों द्वारा पहना जाता है), परांदा (महिलाओं द्वारा बालों में पहनी जाने वाली रंगीन लटें), पटियाला सलवार (महिलाओं की एक प्रकार की पैंट), पटियाला जूती (चपटे फाइबर से बने जूते) और पटियाला पैग (शराब की एक अनूठी मात्रा)।

12. लुधियाना (भारत का मैनचेस्टर) :

यह उत्तरी भारत का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है, जिसे बीबीसी द्वारा ''भारत का मैनचेस्टर'' कहा जाता है। इसे पंजाब की वाणिज्यिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। लुधियाना को ''भारत का विनिर्माण केंद्र'' भी कहा जाता है। लुधियाना, प्रथम एंग्लो–सिख युद्ध स्थल है, अब पंजाब का सबसे अधिक आबादी वाला शहर है, जो राज्य के मालवा क्षेत्र में सतलुज के तट पर स्थित है। लुधियाना को पहले लोधियाना के नाम से जाना

जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ है लोधियों का शहर। इसका नाम लोधी सुल्तानों के नाम पर रखा गया है जिन्होंने 1480 में इस शहर की स्थापना की थी। एक औद्योगिक शहर होने के अलावा, लुधियाना अपने गुरुद्वारों, किलों और प्राचीन खंडहरों के कारण दुनिया भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। एक प्रमुख कपड़ा और हल्के इंजीनियरिंग केंद्र होने के अलावा, लुधियाना के होजरी सामान की दुनिया भर में बहुत मांग है। लुधियाना दुनिया भर में ऊनी वस्त्र, मशीन टूल्स, रंग, साइकिल पार्ट्स, मोपेड, सिलाई मशीन और मोटर पार्ट्स निर्यात करता है। शहर में एक बड़ी अनाज मंडी है और यह अपने ग्रामीण ओलंपिक के लिए प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के बाहरी इलाके में स्थित है। केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने लुधियाना को शीर्ष 100 स्मार्ट शहरों में 48वें स्थान पर रखा है, और विश्व बैंक के अनुसार इस शहर को भारत में व्यापार के लिए सबसे आसान शहरों में से एक माना गया है।

13. चंडीगढ़ (“सुंदरता का शहर”) :

चंडीगढ़ नाम चंडी और गढ़ से मिलकर बना है। चंडी का मतलब हिंदू देवी चंडी से है और गढ़ का मतलब किला है। यह नाम चंडी मंदिर से लिया गया है, जो पंचकूला जिले में शहर के पास चंडी को समर्पित एक प्राचीन मंदिर है। चंडीगढ़ शहर वास्तुकला, डिजाइन, प्राकृतिक सुंदरता, उद्यान, विरासत और शहरीकरण का एक सुंदर मिश्रण है। चंडीगढ़ आधिकारिक तौर पर केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रित एक केंद्र शासित प्रदेश के साथ–साथ पंजाब और हरियाणा की संयुक्त राजधानी है। हिमालय की शिवालिक श्रेणी की तलहटी के पास स्थित, यह शहर पूर्व में हरियाणा और शेष दिशाओं में पंजाब की सीमा से लगता है। यह नई दिल्ली से 260 किमी उत्तर और अमृतसर से 229 किमी दक्षिण–पूर्व में स्थित है यह स्वतंत्र भारत का पहला नियोजित शहर भी है, जिसकी वास्तुकला विश्व प्रसिद्ध है और जीवन की गुणवत्ता बेजोड़ है। यह शहर देश में सबसे अधिक प्रति व्यक्ति आय वाले शहरों में से एक है। चंडीगढ़ में इतने सारे पर्यटन स्थलों के साथ यह भारत के पर्यटन स्थल के रूप में एक प्रमुख स्थान रखता है। शिवालिक पहाड़ियों का ऊंचा क्षितिज और देवी चंडी को समर्पित एक पुराने मंदिर की धुंधली छवि शहर के ऊपर स्थित है, जो चंडीगढ़ के कई पर्यटक स्थलों की रक्षा करती है। चंडीगढ़ में अवश्य देखने योग्य पर्यटन स्थलों में रॉक गार्डन, जो कला और डिजाइन का एक अद्भुत नमूना है, गुलाब उद्यान, पिंजौर उद्यान और सरकारी संग्रहालय तथा आर्ट गैलरी सहित कुछ अन्य शामिल हैं। रॉक गार्डन अब चंडीगढ़ के सबसे बेहतरीन पर्यटन स्थलों में से एक बन गया है। 40 एकड़ से ज़्यादा की बेहतरीन तरीके से डिज़ाइन और सजाए गए क्षेत्र में फैले रॉक गार्डन में 5,000 से ज़्यादा चित्र और मूर्तियाँ हैं। सबसे ज़्यादा चौंकाने वाली बात यह है कि यहाँ पर मौजूद हर चीज़ कई तरह के औद्योगिक और शहरी कचरे से बनी है। चंडीगढ़ में स्थित खूबसूरत सुखना झील को 1958 में सुखना चोल पर बांध बनाकर अस्तित्व में लाया गया था। 3 किमी में फैली यह झील

चमचमाते पानी, नावों से घिरी हुई है और साइबेरियाई बतख और सारस सहित कई पक्षियों का घर है। प्रकृति प्रेमियों के लिए चंडीगढ़ में घूमने के लिए सबसे बेहतरीन जगहों में से एक, झील में नाव की सवारी, मछली पकड़ना, वाटर स्कीइंग और खूबसूरत सूर्यास्त का आनंद लेना जैसी गतिविधियाँ झील पर आने वाले कई लोगों को बहुत पसंद आती हैं। शॉपिंग पसंद करने वाले पर्यटकों को चंडीगढ़ का सेक्टर 17 मार्केट बहुत पसंद आएगा। सैकड़ों बड़े ब्रांड स्टोर, स्थानीय दुकानें और मॉल से घिरा यह स्थान शॉपिंग के शौकीन लोगों के लिए चंडीगढ़ के सबसे अच्छे पर्यटन स्थलों में से एक है।

*****

Wisdom capsule

Add strength to your strengths

D Bharathi
CSA
Zonal Inspectorate
HO Bangalore

This story revolves around a family comprising of parents and their two kids, both of whom excelled academically. The son, in particular seemed specially favoured by stars. Not only was he remarkably intelligent, but also excelled in quiz, indoor-outdoor sports winning several trophies for himself and his institution. Additionally, he stayed well-informed about science, politics and arts, always abreast of his peers and competitors.

Daughter was also good at studies, though she trailed just slightly behind her brother. Again intelligence quotient is a relative concept and while she seemed average in comparison to him, she was outstanding in her own right. This small lacuna between siblings unfortunately became a topic of discussion during family gatherings. Gradually, the daughter began to feel that she was not good enough. This eroded her confidence and in turn led to reduced social interaction. Her parents and brother noticed this shift in her and grew concerned. Despite their efforts to insulate her from such negative feelings, it proved challenging as socializing is both crucial and unavoidable in a social setup. The family was determined not to let their daughter suffer due to circumstances beyond her control, all the more so due to her sibling. So one day, her father called her and said "Your mother, brother and I very well know that you are competent enough and a small difference in academic score should not matter much. Similarly, what people talk also should not matter much for it's merely their opinion and not necessarily a fact. We wish and hope that these misgivings don't undermine your confidence. Absence of negativity automatically surges in positivity. Recognize your strengths and give impetus to them. Add strength to your strengths. Make your strengths so strong that your shortcomings become inconsequential. This is done by adding " hard work" to your positive traits. Once you focus on them, the resulting synergy will be so powerful that your weaknesses shy away".

Daughter heeded to these priceless pearls of wisdom by her father. Few years later, discussions at family gatherings revolve around the remarkable achievements of both children, "Oh, that boy is exceptional. He graduated with distinction in engineering and landed in a campus placement with a prestigious MNC. Now he's on-site in US. And his sister is equally impressive. She chose a regular degree over a professional course and upon completion secured a government job right away. It was a wise choice, especially since she has to balance both family and career. She's incredibly talented too !! They continue, "I have heard her sing on several occasions and she sings truly melodious . She has a taste for handiwork too, having embroidered several beautiful sarees and dresses. Her painting and sketching skills are equally remarkable. When I visited her home, her mother proudly showed me her artwork. They are simply outstanding. She's also an adept at gardening, does grafting and grows multi colour flowers in a single plant. And to top it all, she has a flair for food preparation . The exotic dishes she prepares often features on her mother's Whatsapp status".

One should focus on developing one's key skills and areas of expertise delivering exceptional results in those areas. By doing so, one can build a strong reputation and create value addition in personal and social life. However, it's also important to address weaknesses as continuous improvement in these areas can lead to overall growth and effectiveness.

ADD STRENGTH TO YOUR STRENGTHS AND SEE YOUR WEAKNESSES WANE AWAY.

PLIGHT OF A CAGED BIRD

Gournika Kapoor
Officer
AF & PS Section,
Delhi Circle Office

A caged bird with tied wings,
Cries and opens his heart to sing ...
Caged, Restricted, Oh Lord! I am fenced,
But no longer ready to accept life on same stand...
Born for heights, Born to fly,
With no boundations under the open sky...
Singing the songs of joy and mirth,
Oh lord ! When will I have my rebirth?
Want to enjoy my earth, wind and sea,
Want to live my birth right, my liberty...
This is not the place I am made for,
Feeling choked, can't breathe here anymore..
Want to live life my own way lord,
A life without freedom is no life at all..
But I know, my wishes are no longer to stay,
They are like those dreams, disappear as soon as I am awake..
In spite, my dream for freedom will never cease,
Oh my Lord ! Set me free! Please set me free!

Human Metapneumovirus (HMPV)

What is Human Metapneumovirus (HMPV)?

Human metapneumovirus (HMPV) is a virus that usually causes symptoms similar to a cold. You might cough or wheeze, have a runny nose or have a sore throat. Most cases are mild, but young children, adults over 65 and people with weakened immune systems are at a higher risk for serious illness. HMPV is common — most people get it before they turn 5. The symptoms of human metapneumovirus are often similar to the common cold. It often causes upper respiratory infections, but it can sometimes cause lower respiratory infections like pneumonia, asthma flare-ups or make Chronic Obstructive Pulmonary Disease (COPD) worse. HMPV infections are more common during winter.

Is human metapneumovirus just a cold?

Human metapneumovirus most often causes symptoms similar to a cold, but some people can get very sick. Adults over 65 and people with breathing problems or a weakened immune system may also get severe symptoms.

What are the Symptoms ?

The symptoms are often similar to the common cold. Cough, Fever, Runny or stuffy nose, Sore throat, Wheezing, Shortness of breath (dyspnea) and Rash.

What are the complications of human metapneumovirus?

Sometimes HMPV can cause complications. They include Bronchiolitis, Bronchitis, Pneumonia and Asthma.

How is human metapneumovirus treated?

There aren't any antiviral medications that treat human metapneumovirus. Most people can manage their symptoms at home until they feel better. If symptoms persist, please contact healthcare provider.

Can you prevent a human metapneumovirus infection?

You can reduce your risk of getting HMPV and other infectious diseases by:

- Washing your hands often with soap and water. If you aren't able to use soap and water, use an alcohol-based hand sanitizer.
- Cover your nose and mouth - with your elbow, not your bare hand - when you sneeze or cough.
- Avoid being around other people when you or they are sick with a cold or other contagious diseases.
- Consider wearing a mask if you're sick and can't avoid being around others.
- Avoid touching your face, eyes, nose and mouth.
- Don't share food or eating utensils (forks, spoons, cups) with others.

How long does human metapneumovirus last?

Mild cases of human metapneumovirus usually last a few days to a week. If you're very sick, it'll probably take longer to feel better. You might also have lingering symptoms, like a cough, that take longer to go away.

How do I take care of myself?

You can manage mild, cold-like symptoms of HMPV at home by drinking lots of fluids to prevent dehydration.

When should I see my healthcare provider?

You have symptoms of a respiratory infection and an underlying condition that puts you at an elevated risk for severe illness.

Courtesy : myclevelandclinic.org

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

पंजाब – पांच नदियों की भूमि

आशीष रंजन
वरिष्ठ प्रबंधक
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान

पंजाब नाम फ़ारसी मूल का है जो दो शब्दों से मिलकर बना है–'पुंज' एवं 'आब'। 'पुंज' का शाब्दिक अर्थ है पाँच और 'आब' का शाब्दिक अर्थ होता है पानी। पंजाब राज्य को पांच नदियों की भूमि के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र से पांच प्रमुख नदियां बहती हैं। पंजाब की पांच नदियों के नाम झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज हैं। सांस्कृतिक और सभ्यतागत विकास के लंबे इतिहास के साथ, वैदिक शास्त्रों में इस भूमि को सप्त सिंधु के रूप में संदर्भित किया गया है, जिसका संस्कृत में अर्थ है ''सात नदियों की भूमि''। इसका उल्लेख सबसे पहले हिंदू महाकाव्य महाभारत में पंचनद या पांच नदियों की भूमि के रूप में किया गया था। बाद में, इसे पंजाब के नाम से जाना जाने लगा। यह आकर्षक नाम इसकी नदियों के महत्व को उजागर करता है, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति, कृषि और अर्थव्यवस्था को आकार दिया है। यह अनोखा नाम इन पांच उल्लेखनीय नदियों की उपस्थिति को दर्शाता है, जो कृषि के लिए आवश्यक जल उपलब्ध कराती हैं और पंजाब को अत्यधिक उपजाऊ भूमि बनाती हैं। ये नदियाँ इस क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता हैं और इन्होंने ही इस भूमि को पंजाब नाम दिया है।

पंजाब – 'भारत का खाद्य कटोरा'

पंजाब की ये सभी नदियाँ सिंधु नदी की सहायक नदियाँ हैं और एक साथ मिलकर पंजनद नदी का निर्माण करती हैं, जो अंततः सिंधु नदी में मिल जाती है। शक्तिशाली सिंधु नदी फिर पाकिस्तान के कराची शहर के पास अरब सागर में समा जाती है। सिंधु नदी सहित ये सभी नदियाँ सिंधु घाटी नदी प्रणाली का हिस्सा मानी जाती हैं। इसके अलावा, ये नदियाँ पंजाब की संस्कृति की जड़ों में गहराई तक जाती हैं, जीवंत त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों, अनोखे लोक नृत्यों और उल्लेखनीय संगीत को प्रेरित करती हैं। सुगंधित पंजाबी व्यंजन भी क्षेत्र की कृषि विरासत के साथ इस बेहद शक्तिशाली संबंध को उजागर करते हैं, जो आधुनिक समय में भी पंजाब को एक जीवंत और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध स्थान के रूप में स्थापित करता है। पंजाब की पांच नदियां कई कारणों से बहुत महत्वपूर्ण हैं, जिनमें खेती और गेहूं, चावल और गन्ना जैसी आवश्यक फसलों को उगाने के लिए आवश्यक पानी उपलब्ध कराना शामिल है। इस विशेष कारण से, पंजाब को, 'भारत का खाद्य कटोरा' के नाम से भी जाना जाता है, जो देश को भोजन उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पंजाब की प्रति व्यक्ति आय अखिल भारतीय औसत (दूसरे स्थान पर हरियाणा है) से लगभग दोगुनी है। हालाँकि पंजाबियों की संख्या भारत की जनसंख्या का 2.5% से भी कम है, फिर भी वे भारत को 22% गेहूँ और 10% चावल प्रदान करते हैं। भारत में कुल दूध उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा पंजाब से आता है।

पंजाब का प्राचीन इतिहास :

मानव गतिविधि का सबसे पहला निशान सिंधु घाटी सभ्यता का है जो आदिम कृषक समुदायों से लेकर अत्यधिक विकसित शहरी जीवन तक विकसित हुआ। लगभग 3000 ईसा पूर्व, जब यह अपने चरम पर था, यह हड़प्पा और निचली सिंधु घाटी में मोहनजोदारो के शानदार शहरों के लिए प्रसिद्ध था। आर्यों और सिंधु बेसिन के निवासियों के साथ उनके संबंधों ने पंजाब के बाद के 1,000 साल के इतिहास पर अपना दबदबा कायम रखा और तब राज्य को आर्य–वर्त (आर्यों की भूमि) के रूप में जाना जाता था। कहा जाता है कि मानव इतिहास का सबसे पुराना ग्रंथ ऋग्वेद यहीं लिखा गया था और आर्य भाषा संस्कृत इस क्षेत्र पर उनके प्रभाव का प्रतिनिधित्व करती थी। फिर फारसी राजा गुस्तास्प ने 516 ईसा

पूर्व में पहली बार पंजाब पर विजय प्राप्त की। चूंकि पंजाब प्रमुख फारसी साम्राज्यों की परिधि पर था, इसलिए यह कभी-कभी उनके शासन में आ जाता था और फारसी राजशाही में सबसे समृद्ध क्षत्रप या प्रांत के रूप में था। प्रसिद्ध फ़ारसी सम्राट (521-486 ईसा पूर्व) डेरियस प्रथम ने व्यापार मिशनों के लिए सिंधु नदी के किनारे के क्षेत्र की जांच करने के लिए ग्रीक स्काईलैक्स को नियुक्त किया था, जिसने अपनी पुस्तक "पेरिपुलस" में अपने अन्वेषणों के बारे में लिखा था। फारसी "भारतीय क्षत्रप" की चर्चा हेक्टेअस (500 ईसा पूर्व) और हेरोडोटस (483-431 ईसा पूर्व) द्वारा लिखित लेखों में की गई थी। उन्होंने इसे चार अलग-अलग राज्यों और कई शक्तिशाली नदियों वाली भूमि के रूप में बताया। ग्रीक मानचित्र में दुनिया की सबसे बड़ी नदी इंडोस (सिंधु नदी) के साथ-साथ इसकी सहायक नदियों हाइडस्पेस (जेहलम), एकेसिन (चेनाब), हाइड्रोटिस (रावी), हाइपसिस (सतलुज) और हेसिड्रोस (ब्यास) को दर्शाया गया है।

पंजाब का मध्यकालीन इतिहास :

छठी शताब्दी में अरब में इस्लाम के आगमन के बाद अरब सत्ता में आए और फारसियों की जगह इस क्षेत्र में प्रमुख शक्ति बन गए। फारसियों के वर्चस्व को उखाड़ फेंकने के बाद, सिकंदर महान ने पंजाब के अंतिम क्षत्रप पर आक्रमण किया। पंजाब क्षेत्र में सिकंदर द्वारा स्थापित दो शहरों की आबादी में अधिकांश यूनानी और मैसेडोनियन थे। सिकंदर के जाने के बहुत बाद तक, ये शहर इंडो-यूनानी अधिकार के तहत फले-फूले। 8वीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम विजय के बाद, उमय्यद खलीफा की अरब सेनाएँ दक्षिण एशिया में घुस गईं और पंजाब में इस्लाम का प्रचार किया। 9वीं शताब्दी में, पंजाब में हिंदू शाही राजवंश का उदय हुआ, जिसने पंजाब और पूर्वी अफ़गानिस्तान के अधिकांश भाग पर शासन किया। 10वीं शताब्दी में तुर्किक ग़ज़नवी ने हिंदू शाही को उखाड़ फेंका और 157 वर्षों तक शासन किया, 1186 में ग़ौर के मुहम्मद द्वारा लाहौर पर ग़ौरी विजय के बाद अंतिम ग़ज़नवी शासक खुसरो मलिक को पदच्युत कर दिया। 1206 में ग़ौर के मुहम्मद की मृत्यु के बाद, ग़ौरी राज्य विखंडित हो गया और उत्तरी भारत में दिल्ली सल्तनत प्रतिस्थापित किया गया। दिल्ली सल्तनत ने अगले तीन सौ वर्षों तक पंजाब पर शासन किया, जिसका नेतृत्व पाँच असंबंधित राजवंशों, मामलूक, खिलजी, तुगलक, सैय्यद और लोदी ने किया। 1524 से 1739 तक, प्रांत पर मुगलों का शासन था। उनके शासन के दौरान बादशाही मस्जिद और शालीमार गार्डन जैसे शानदार वास्तुशिल्प बनाए गए। वर्तमान पंजाब की नींव बंदा सिंह बहादुर ने रखी थी, जो एक संन्यासी थे और बाद में एक सैन्य नेता बन गए और सिख के लड़ाकू दल के साथ, 1709-10 में प्रांत के पूर्वी हिस्से को मुगल शासन से अस्थायी रूप से मुक्त कराया। 1716 में बंदा सिंह की हार और फांसी के बाद एक तरफ सिखों और दूसरी तरफ मुगलों और अफगानों के बीच लंबे समय तक संघर्ष चला। 1764-65 तक सिखों ने इस क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। रणजीत सिंह (1780-1839) ने बाद में पंजाब क्षेत्र को एक शक्तिशाली सिख साम्राज्य में बदल दिया और इसके साथ मुल्तान, कश्मीर और पेशावर के आस-पास के प्रांतों को जोड़ दिया, जो अब पूरी तरह या आंशिक रूप से पाकिस्तान द्वारा प्रशासित हैं।

पंजाब का आधुनिक काल :

मुगल 16वीं शताब्दी की शुरुआत में सत्ता में आए और धीरे-धीरे अपनी राजधानी लाहौर से पूरे पंजाब को नियंत्रित करने के लिए विस्तार किया। जैसे-जैसे मुगल शक्ति कमजोर होती गई, अफगान शासकों ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया। मराठों और अफगानों द्वारा विवादित, यह क्षेत्र सिखों के बढ़ते प्रभाव का केंद्र था, जिन्होंने मुगलों और अफगानों के कमजोर होने पर 1799 में सिख साम्राज्य का विस्तार और स्थापना की। सीस-सतलज राज्य आधुनिक पंजाब और हरियाणा राज्यों में राज्यों का एक समूह था जो उत्तर में सतलज नदी, पूर्व में हिमालय, दक्षिण में यमुना नदी और दिल्ली जिले और पश्चिम में सिरसा जिले के बीच स्थित था। इन राज्यों पर सिख संघ का शासन था।

पंजाब का उपनिवेशीकरण :

कई महान धार्मिक आंदोलन, जिन्हें दुनिया भर में लोकप्रियता मिली, पंजाब के उपजाऊ मैदानों में विकसित हुए। इनमें बौद्ध धर्म, सिख धर्म और इस्लाम में सूफी विचारधारा के कई स्कूल शामिल हैं। यह जातीय और धार्मिक विविधता आज के

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

पंजाब की सांस्कृतिक संरचना में प्रतिबिंबित होती है। प्राचीन यूनानियों ने इस क्षेत्र को पेंटापोटामिया के नाम से संदर्भित किया। पंजाब वर्ष 1849 में ब्रिटिश प्रांत बन गया। इस क्षेत्र में 19वीं सदी के अंत तक भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में वृद्धि देखी गई। आंदोलन से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक 1919 का अमृतसर नरसंहार था, जिसे जलियांवाला बाग हत्याकांड के रूप में जाना जाता है, जो ब्रिटिश जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर द्वारा लगभग 10,000 भारतीयों की एक सभा पर गोलियां चलाने का आदेश देने के बाद हुआ था, जो ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किए गए नए विध्वंस विरोधी कानूनों के खिलाफ विरोध कर रहे थे।

पंजाब का विभाजन :

पंजाब का ऐतिहासिक क्षेत्र पूर्व में ब्यास नदी (दिल्ली सहित) के बेसिन से पश्चिम में सिंधु नदी के बेसिन तक फैला हुआ था। उत्तर में यह कश्मीर के हिमालय से घिरा था और दक्षिण में यह चोलिस्तान और राजस्थान के मैदानी इलाकों तक फैला हुआ था। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में पंजाब ने अपनी सीमाओं का विस्तार और संकुचन देखा है। ब्रिटिश द्वारा पंजाब को 1947 में भारत और पाकिस्तान के नए स्वतंत्र राज्यों के बीच विभाजित किया गया था, जिसमें छोटा पूर्वी आधा हिस्सा भारत में शामिल हो गया था। लेकिन इतिहास में कभी भी पंजाब की सीमाएँ इतनी कम नहीं हुई जितनी 1947 में भारत के विभाजन के बाद हुई। इस दुखद घटना के परिणामस्वरूप पंजाब दो भागों में विभाजित हो गया, एक भारतीय राज्य पंजाब और दूसरा पाकिस्तानी प्रांत पंजाब। प्रशासनिक कारणों से भारतीय पंजाब को दो बार और विभाजित किया गया। आज का भारतीय पंजाब विभाजन से पहले मौजूद पंजाब का लगभग एक–चौथाई है।

पंजाब को राज्य का दर्जा :

भारत के विभाजन के समय पंजाब को सबसे ज़्यादा तबाही और नुकसान का सामना करना पड़ा। विभाजन से पहले पंजाब भारत–पाकिस्तान सीमा के दोनों ओर फैला हुआ था और इसकी राजधानी लाहौर था जो अब पाकिस्तानी राज्य पंजाब की राजधानी है। इसके अलावा, सबसे उत्तरी जिलों को हिमाचल प्रदेश में स्थानांतरित कर दिया गया था और नवनिर्मित शहर चंडीगढ़ और उसके आसपास के क्षेत्र एक अलग केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। चंडीगढ़, एक नया नियोजित शहर, 1950 के दशक में नए पंजाब की राजधानी के रूप में बनाया गया था। भाषा–आधारित विभाजन 1 नवंबर, 1966 को हुए, जिससे पंजाब का नया, मुख्य रूप से पंजाबी भाषी राज्य और हरियाणा का अधिकांश हिंदी भाषी राज्य बना। पंजाब और हरियाणा की सीमा पर स्थित चंडीगढ़, दोनों राज्यों की राजधानी बना हुआ है।

पंजाब में सिखों के धर्म गुरु :

15वीं शताब्दी के अंत में पंजाब में एक महत्वपूर्ण घटना, गुरु नानक द्वारा सिख धर्म की स्थापना थी। गुरु नानक जी द्वारा रचित भजनों को बाद में सिखों के धार्मिक ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित किया गया। धार्मिक उत्पीड़न के समय में यह धर्म विकसित हुआ और आगे बढ़ा, जिसमे हिंदू और इस्लाम दोनों धर्मों से धर्मांतरण हुआ। भारत के मुगल शासकों ने सिख गुरुओं में से दो– गुरु अर्जन (1563–1605) और गुरु तेज बहादुर (1621–1675) को प्रताड़ित किया और मार डाला – क्योंकि उन्होंने इस्लाम धर्म अपनाने से इनकार कर दिया था। सिखों के उत्पीड़न के कारण गुरु गोबिंद सिंह द्वारा 1699 में खालसा की स्थापना को प्रेरित किया, जो विवेक और धर्म की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक आदेश था, जिसके सदस्य संत–सिपाही के गुणों को व्यक्त करते थे। गुरु नानक का जीवनकाल बाबर द्वारा उत्तरी भारत की विजय और मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ मेल खाता था।

पंजाब के प्रसिद्ध शहर :

पंजाब को कई खूबसूरत अनोखे शहरों का घर माना जाता है, जिनमें से प्रत्येक का अपना विशेष आकर्षण है। अमृतसर स्वर्ण मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, जो एक अत्यंत प्रतिष्ठित गुरुद्वारा है और अपनी लुभावनी सुंदरता के कारण बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। लुधियाना एक प्रसिद्ध औद्योगिक शहर है, जो अपने विनिर्माण के लिए जाना जाता है, जो इसे एक महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र बनाता है। पंजाब का एक और जीवंत शहर चंडीगढ़ पंजाब और हरियाणा दोनों की राजधानी है और अपने आधुनिक डिजाइन

और सुंदर वास्तुशिल्प लेआउट के लिए अत्यधिक जाना जाता है। जालंधर को खेल उपकरणों के उत्पादन के लिए जाना जाता है, जो स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पटियाला शहर की जड़ें पंजाब के इतिहास और संस्कृति में गहरी हैं, जो कला और अनूठी परंपराओं के माध्यम से अपने शाही अतीत को प्रदर्शित करता है। पंजाब में लुधियाना में हीरो साइकिल सहित कई समृद्ध उद्योग हैं।

पंजाब की जनजातियाँ :

पंजाब में अनेक जनजातियाँ हैं जिनमें शामिल हैं – **खोखर:** एक स्वदेशी समुदाय जो 13वीं और 14वीं सदी में प्रभावशाली था; **गक्खर:** ये प्रमुख जाति जो 13वीं और 14वीं शताब्दी के बाद महत्वपूर्ण हो गए; **जाट:** पूर्वी पंजाब की एक प्रमुख जाति, जो आबादी का लगभग 20% हिस्सा बनाती है; **राजपूत; अरैन; गुज्जर; अवान:** पश्चिमी पंजाब की एक प्रमुख जाति; **खत्री:** 1947 में विभाजन से पहले पश्चिमी पंजाब का एक प्रमुख समुदाय; **अरोड़ा:** 1947 में विभाजन से पहले पश्चिमी पंजाब का एक प्रमुख समुदाय; **ब्राह्मण:** 1947 में विभाजन से पहले पश्चिमी पंजाब का एक प्रमुख समुदाय। पंजाब की अन्य जनजातियों में शामिल हैं: **अब्बासी, अद–धर्मी, अग्रवाल, अहेरी, अहीर, अहलूवालिया, अंसारी और अब्राहम।**

पंजाब की संस्कृति :

पंजाब की संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। राज्य की विविधता और विशिष्टता पंजाब की कविता, आध्यात्मिकता, शिक्षा, कलात्मकता, संगीत, भोजन, वास्तुकला, परंपराओं में देखी जा सकती है। पंजाब में मेले और त्योहार, प्रेम और युद्ध की गाथाएँ, नृत्य, संगीत और पंजाबी साहित्य राज्य के सांस्कृतिक जीवन की विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ हैं। पंजाबी साहित्य की उत्पत्ति 13वीं सदी के सूफी (रहस्यवादी) शेख फरीद के रहस्यमय और धार्मिक छंद और 15वीं–16वीं सदी के सिख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक से हुई। सूफी कवि वारिस शाह की रचनाओं ने 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पंजाबी साहित्य को बहुत समृद्ध किया। 20वीं और 21वीं शताब्दी के आरंभ में पंजाबी साहित्य को कवि और लेखक भाई वीर सिंह और कवि पूरन सिंह, धनी राम चात्रिक, मोहन सिंह माहिर और शिव कुमार बटालवी जैसे महानतम कवि मिले। प्रसिद्ध उपन्यासकारों में जसवंत सिंह कंवल, गुरदयाल सिंह, ज्ञानी गुरदित सिंह और सोहन सिंह शीतल शामिल थे। कुलवंत सिंह विर्क पंजाबी में लघु कथा लेखकों में से एक हैं। पंजाबी कई धार्मिक और मौसमी त्यौहार मनाते हैं जैसे लोहड़ी, बैसाखी, बसंत पंचमी आदि भांगड़ा, झूमर और सम्मी सबसे लोकप्रिय शैलियों में से हैं। गिद्दा, एक देशी पंजाबी परंपरा, महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक हास्य गीत और नृत्य शैली है। सिख धार्मिक संगीत के अलावा, अर्ध–शास्त्रीय मुगल रूप, जैसे कि ख्याल नृत्य और ठुमरी, ग़ज़ल और कव्वाली गायन प्रदर्शन शैलियाँ, लोकप्रिय बनी हुई हैं। पंजाबी पुरुषों द्वारा पहना जाने वाला पारंपरिक परिधान पंजाबी कुर्ता और तहमत और पगड़ी है। हालाँकि, कुर्ता और पायजामा अब तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। महिलाएं पंजाबी सलवार सूट और पटियाला सलवार की पारंपरिक पोशाक पहनती हैं।

पंजाब के यातायात :

पंजाब का सड़क नेटवर्क देश में सबसे अच्छे विकसित सड़क नेटवर्कों में से एक है। पंजाब राज्य की सड़कों की कुल लम्बाई 50,506 कि.मी. है। सभी मौसमों के लिए पक्की सड़कें ज़्यादातर गांवों तक फैली हुई हैं और राज्य में कई राष्ट्रीय राजमार्ग हैं। राज्य में रेलवे मार्ग की कुल लम्बाई 3,726.06 कि.मी. है। पंजाब में उत्तरी रेलवे भी अच्छी तरह से सेवा प्रदान करता है – जो राष्ट्रीय रेलवे प्रणाली का हिस्सा है। पाकिस्तान से जुड़ा रेल मार्ग भी पंजाब के अमृतसर से है। दिल्ली से चंडीगढ़ और अमृतसर, लुधियाना और भटिंडा नगरों के लिए भी नियमित हवाई सेवाएँ उपलब्ध हैं। पंजाब राज्य में चार नागरिक विमान क्लब अमृतसर, लुधियाना, पटियाला और जालंधर में हैं। इनके अतिरिक्त चंडीगढ़ में एक अंतरराज्यीय हवाई अड्डा, राजासांसी (अमृतसर) में एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और पटियाला, सहनेवाल (लुधियाना) में दो हवाई अड्डे हैं।

*****

Dal Makhani

By HML team

There are some dishes that represent Punjabi cuisine, like none other. Dal Makhani is one of them. It is one of the most popular lentil recipes from North Indian Punjabi cuisine and is made with whole black lentils (Urad dal or Kali dal in Hindi) and kidney beans (Rajma in Hindi). This Dal Makhani Recipe is a restaurant style version with subtle smoky flavours and creaminess of the lentils. If you are a fan of North Indian food and lovely Punjabi flavours, then you are going to love this Makhani dal even more.

INGREDIENTS :

1. For Cooking Lentils

- ¾th cup Whole Urad Dhall (Whole Black Gram)
- ¼th Cup Rajma (Kidney Beans)
- 3 cups of water

2. Main Ingredients

- 3 tbs Butter(Salted or Unsalted)
- ½ tsp Cumin seeds,
- 2 to 3 Cloves
- 2 to 3 Green Cardamom
- 1 black Cardamom
- 1 inch Cinnamon
- Medium sized Bay Leaf
- ½ cup finely chopped Onions
- 2 Green chillies finely chopped
- 2 tsp Ginger garlic paste
- 2 large tomatoes pureed
- ½ tsp Red Chilli powder or smoked Paprika
- 2 pinches of Nutmeg powder
- ⅓rd cup fresh cream
- ¼th tsp Fenugreek leaves (Kasuri Methi)
- Water 1 to 2 cups
- Salt as required

For Dhungar method (optional)

- 1 small piece Charcoal
- ½ tsp Ghee

For Garnish

- Coriander leaves finely chopped
- Ginger 1 inch cut into julienne
- 2 table spoons fresh cream

Instructions

1. Soak both ¾ cup whole black gram (whole urad dal) and ¼ cup kidney beans (rajma) overnight in enough water for 8 to 9 hours. Drain them well.
2. Rinse the urad lentils and rajma a couple of times in water. Drain well and add them in a 3-liter pressure cooker and cook on high heat for 18 to 20 whistles or till both the black gram and kidney beans have cooked thoroughly and softened. If they are undercooked, then add about ½ cup water again and pressure cook for 4 to 5 whistles more.
3. Now, in a pan, heat 3 tablespoons butter. Keep the heat to medium-low. Add the whole spices and fry them until they splutter and turn fragrant.
4. Add ½ cup finely chopped onions. Sauté the onions until they turn light golden.
5. Add 2 teaspoons ginger-garlic paste. Stir to mix and sauté until it becomes fragrant. Add 1 teaspoon chopped green chilies and sauté for a minute.
6. Add the tomato puree, ½ teaspoon red chili powder and nutmeg powder. Mix well and sauté this mixture on a low to medium heat, till you see oil releasing from the sides.
7. Add the cooked lentils with the stock. Additionally, add 1 cup water or as needed. Mix well and simmer or slow-cook the dal uncovered on low heat.
8. Keep stirring to prevent it from sticking to the bottom. Once the Dal Makhani has begun to thicken, add salt as required. When simmering, you can add more water if the consistency looks thick or dry. The longer the makhni simmers , the better it tastes. The lentils become creamy and the consistency of the dal will keep on thickening as you simmer.
9. When the gravy has thickened enough, add fresh cream and mix well. Then, turn off the heat and add crushed kasuri methi.
10. Garnish with coriander leaves, ginger juliennes and cream before serving.

Charcoal Smoking or Dhungar Method (Optional)

Heat a piece of Charcoal on the direct flame until it becomes red hot. Place the red hot charcoal in a small steel bowl. Pour ½ teaspoon ghee on the charcoal. Immediately, keep this bowl on top of the dal. Cover tightly with a lid for one minute and allow the charcoal to infuse its smoke in the Dal Makhani for about a 2 minutes. Stir again. Serve Punjabi Dal Makhani garnished with chopped coriander leaves and a few teaspoons of light cream.

Pair this restaurant style Dal Makhani with Indian flatbreads like Naan, Tandoori Roti, Paratha, Chapati, Aloo Paratha. If serving with rice, serve with plain steamed basmati rice or savoury and fragrant Jeera Rice.

Also, after eating a meal of this rich dal, do not forget to burn those extra calories by exercising a bit more !!!!!!

When Things Don't Go Your Way

— Haemin Sunim

"When you fall in a dark theatre, give your eyes a moment to adjust before getting up. Similarly, if life knocks you down, take your time to process your emotions and wait for a clear path forward to become visible." -Haemin Sunim

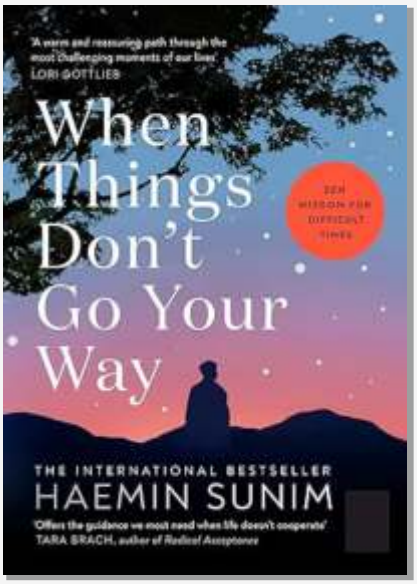

MRP: ₹799 | Pages: 293
Language: English | Genre: Self-Help

It is not always we feel good, pleasant, or happy right? There are times when we feel broken, shattered, lost, clueless, and in a questionable state of mind as to why certain things are happening to us alone. Then, "When Things Don't Go Your Way" written by Haemin Sunim is the book for you to self-validate at this lowest point in life. All said, we are human beings and emotions tend to mix up and flow in directions which we cannot comprehend or fathom.

The book is divided into six chapters, namely "When Things Don't Go Your Way", "When Your Heart is Aching", "When Feeling Burned Out and Joyless", "When Loneliness Visits You", "When Facing Uncertainty", and "When Enlightenment has yet to Occur".

The author talks about childhood triggers, which may or may not be a catalyst to how one behaves or responds to present situations. It talks about letting yourself to experience the emotion(s) that you are facing, especially those emotions in the spectrum of negativity, like grief, sorrow, abandonment etc. This book motivates the readers to practice gratitude; the more we practice gratitude, the more we will come to appreciate and be thankful for the things we have. The topics of rejection & jealousy are also explored upon. The author explains how to deal with them in an objective manner, and see them as an opportunity to live better and succeed. You are good, and enough; just that you have to find the right person, place or situation to gel into. The book also brushes upon the ideologies of various scholars worldwide, giving a 360 degree view on dealing with your own demons.

The author re-introduces us to the concept of "SBCH" (Small but Certain Happiness) where he urges one to find happiness in things as simple as seeing a stack of neatly arranged clothes, to live in the moment, and to not depend on struggle of many years to attain happiness. He also touches on the most common problem faced by people today, "loneliness", why we feel lonely, and what can be done to navigate away from the feeling.

Every chapter is followed by a rich collection of motivational quotes and anecdotes. This book helps to get quick and instant doze of motivation, in one of those dull days. Haemin Sunim urges readers to accept simple acts like admitting that you cannot do something, and it is okay-to-be-not-okay.

This book hits different with different age groups. The experience and insight that a person in his/her 40s undergoes while reading the book will be different for a person in twenties. So, the topics, insights, and concepts in the book are timeless and will be of help to any person reading at any point in their lives. It is a very warm, peaceful and cozy read that you can count upon whenever you feel the need for a little cushion of self-love and care.

Happy Reading!

By **Winnie J Panicker**
Manager, HM&L Section

केनरा बैंक Canara Bank
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Undertaking)
ಸಿಂಡಿಕೇಟ್ सिंडिकेट Syndicate

Shreyas, in homage to Canbank's departed souls, pray that they rest in bliss, in eternal peace.

Death, said Milton, is the golden key that opens the palace of eternity.

Name	Staff No	Designation	Branch	Expired on
RITESH YADAV	836785	OFFICER	LOOMB	27-09-2024
BHUVANESWAR BORO	774862	OFFICE ASSISTANT	BIJOY NAGAR	21-10-2024
B NARASINGHA RAO	692465	H K CUM OFF. ASST	KHARAGPUR	28-10-2024
SANJEEV KUMAR BALMIKI	67047	H K CUM OFF. ASST	INT TREASURY WING (MUMBAI)	08-11-2024
LAKSHMI DEVI K	65696	MANAGER	DASARA HOSAHALLY	09-11-2024
POONAM NATVARLAL WAGHELA	72144	H K CUM OFF. ASST	MUMBAI WORLI	10-11-2024
KALAPPA BASAPPA DHANAGOND	692719	H K CUM OFF. ASST	BIJJARGI	12-11-2024
ARUN KUMAR	691655	OFFICE ASSISTANT	KHANDAWALI	14-11-2024
B VENKATESWARALU	692867	OFFICE ASSISTANT	KALJUVALAPADU	16-11-2024
DILIP SINHA	60974	CSA	KOLKATA CUR CHEST	21-11-2024
KALLU	60531	H K CUM OFF. ASST	GANJDUNDWARA	26-11-2024
ASHWIN P PARAMESWARAN	577700	CSA	COCHIN FORT	27-11-2024
HARISH KUMAR CHAUHAN	57778	CSA	BHOPAL CC	30-11-2024
SHYAM SINGH	80288	ARM GRD/SEC GUARD	JALALPUR	30-11-2024
VHAVYA PRABHAKARAN NAIR	106781	OFFICER	THRIPUNITHURA MARKET ROAD	02-12-2024
K ARUMUGHAM	72318	CSA	SOORAKOTTAI	12-12-2024
NITISH ASOTRA	101021	H K CUM OFF. ASST	MEHATPUR BASDEHRA	12-12-2024

दिनांक 16.12.2024 को ऋषिकेश में आयोजित एचआर कॉन्क्लेव में श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री डी सुरेन्द्रन, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, श्री अमिताभ चटर्जी, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग तथा प्रधान कार्यालय के अन्य अधिकारीगण।

Sri. Ashok Chandra, ED, Sri. D Surendran, CGM, HR Wing, Sri. Amitabh Chatterjee, GM, HR Wing, along with other executives and staff from Head Office at the HR Conclave held in Rishikesh on 16.12.2024.

दिनांक 08.01.2025 को सीआईबीएम के अपने पहले दौरे के दौरान कार्यपालक निदेशक श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, महाप्रबंधक एवं मुख्य शिक्षण अधिकारी श्री श्रीनाथ जोशी, सीआईबीएम, मणिपाल सहित अन्य कार्यपालक व कर्मचारीगण।

ED Sri. Hardeep Singh Ahluwalia along with Sri. Shreenath Joshi,GM & CLO, other executives and staff of CIBM, Manipal during his maiden visit to CIBM on 08.01.2025.

दिनांक 03.01.2025 को बेंगलूरू में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान कार्यपालक निदेशक श्री भवेन्द्र कुमार की उपस्थिति में एलसीबी–II शाखा, बेंगलूरू के सहायक महाप्रबंधक श्री एम रामचंद्रन को पुरस्कार प्रदान किया गया।

Award being presented to Shri. M Ramachandran, AGM, LCB - II Branch, Bengaluru in the presence of ED Sri. Bhavendra Kumar during review meet held in Bengaluru on 03.01.2025.

Canara ai1 THE BANKING SUPER APP

केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking

Together We Can

Canara PREMIUM PAYROLL ACCOUNT

Feature-rich Salary Account

Canara Angel
Dream beyond boundaries

Women's Savings Bank Account

ONE-STOP FOR EVERY BANKING NEED

Canara Aspire
You Aspire, We Empower

An exclusive savings account for youth 17 to 28 years

Canara Jeevan Dhara
Always by your side
A Special SB Account for PENSIONERS

Make Retirement Rewarding

Canara Crest
WE VALUE YOUR PRESENCE

Join the elite club of Canara Bank Account holders with banking privileges to match your lifestyle

1 Bank Number 1800 1030 | 24/7 365 Days IN 17 LANGUAGES | www.canarabank.com

रजिस्ट्रेशन सं./Registration No. 36699/83